बरिस 8 अंक 32

ISSN – Applied For
www.sirijan.com

# सिरिजन

## भोजपुरी तिमाही ई-पत्रिका

अक्टूबर - दिसम्बर 2026

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
आपन माटी-आपन थाती

/jaibhojpurijaibhojpuriya | @sirijanhbojpuri | 9801230034

# तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
# सिरिजन (अंक 32 : अक्टूबर-दिसम्बर 2026)

| | | |
|---|---|---|
| प्रबंध निदेशक | : | सतीश कुमार त्रिपाठी |
| संरक्षक | : | नरसिंह तिवारी , (दिल्ली) |
| | | |
| प्रधान सम्पादक | : | सुभाष पाण्डेय |
| सम्पादक | : | डॉ अनिल चौबे |
| | : | |
| उप सम्पादक<br>कार्यकारी सम्पादक<br>सलाहकार सम्पादक | :<br>:<br>: | तारकेश्वर राय<br>संजय कुमार मिश्र<br>राजीव उपाध्याय |
| सह सम्पादक | : | 1. भावेश अंजन |
| | | 2. अमरेन्द्र कुमार सिंह |
| | | 3. माया चौबे |
| | | 4. गणेश नाथ तिवारी |
| | | |
| प्रबंध सम्पादक | : | माया शर्मा |
| आमंत्रित सम्पादक | : | चंद्र भूषण यादव |
| बिदेश प्रतिनिधि | : | रवि शंकर तिवारी |
| ब्यूरो चीफ | : | ज्वाला सिंह |
| ब्यूरो चीफ (बिहार) | : | 1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह |
| ब्यूरो चीफ (प. बंगाल) | : | दीपक कुमार सिंह |
| ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश) | : | 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी |
| ब्यूरो चीफ (झारखण्ड) | : | राठौर नितान्त |
| | : | |
| दिल्ली, NCR प्रतिनिधि | : | बिनोद गिरी |
| क़ानूनी सलाहकार | : | नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता) |

**(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)**

स्वामित्व सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, प्रकाशक-तारकेश्वर राय, मकान नम्बर 412, ब्लॉक-D, गली नम्बर-10, शीतला कॉलोनी, गुरुग्राम, हरियाणा-122001 की ओर से प्रकाशित| सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री अंतरिक्ष

# अनुक्रम


**संपादकीय**
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4

**आपन बात**
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 7

**कनखी**
- सिर में दरद के कारण मरद - डॉ. अनिल चौबे /11

**धारावाहिक**
- श्रीमद्भगवद्गीता (भोजपुरी)- कृष्ण मुरारी राय/ 13

**कविता/गीत/ गजल**
- ओझाई – डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा/29
- इहो सांच ह - कनक किशोर/30
- भूख - कनक किशोर/30
- बदलल गाँव के रंग आ रंगत - कनक किशोर/30
- बाबूजी - कनक किशोर/31
- कइसे कहब? - संगीत सुभाष/36
- ना आधा रहे - संगीत सुभाष/36
- दोहा- दिनेश पान्डेय/37
- जुड़ाव - दिनेश पान्डेय/38
- छोभ - दिनेश पान्डेय/38
- तिलचट्टा - दिनेश पान्डेय/39
- चटोरी - दिनेश पान्डेय/39
- लोरी - दिनेश पान्डेय/40
- कहाँ रोक पवले बा केहू - संजय मिश्र 'संजय'/49
- गजब हो गइल - संजय मिश्र 'संजय'/49
- मुस्कुरात रहीं - संजय मिश्र 'संजय'/49
- ईमान का होई - संजय मिश्र 'संजय'/50
- मन मारे के पड़ी - शिवेंद्र गौतम/53
- ई सब छोड़ऽ- उमेश चौबे "अश्क"/54
- संकोच नइखे - संजय कुमार राव/56
- बारह मासा - गणेश नाथ तिवारी"विनायक"/57
- गाँव शहर अब एक भइल बा - अखिलेश्वर मिश्र/59
- नीक - बाउर - कृष्ण कुमार श्रीवास्तव "कृष्णा" /60
- छठ गीत - डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'/61
- दू-दू गो माई - डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'/61
- जरेला दियनवाँ - डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'/61
- बिहान हो जाला - डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'/62
- गोस्वामी तुलसीदास - माहिर विचित्र /63
- हे पन्द्रह अगस्त- माहिर विचित्र/64
- अब बीरान होता - दीपक सिंह 'निकुम्भ'/65
- हाय- तउबा मचल बा-हिमकर श्याम/66
- करा सन-राम अचल पटेल/76
- पइसा कमाइल आसान नइखे-दीपक तिवारी/85
- माई - अभियंता सौरभ कुमार/86
- मूर्ति पर फूल चढ़ावे से पहिले- अभियंता सौरभ कुमार/87
- उदास रहता-नूरैन अंसारी/89
- बढ़त बा उहे आगे-नूरैन अंसारी/89

**पुरुखन के कोठार से**
- अंजन जी के कविता / 6
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 9
- स्व. रामजी सिंह मुखिया के कविता / 10

**कथा-कहानी**
- भाई बहिन - राघवेंद्र प्रकाश 'रघु'/ 51
- लछुमन रेखा - विद्या शंकर विद्यार्थी/55
- प्रेम के दुश्मन पइसा-सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा /67
- सहोदर भाई - उमेश कुमार राय/77

**आलेख**
- भोजपुरी साहित्य में गीत विषयक संवाद डॉ० कमलेश राय के बिना पूरा ना हो सकेला - डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा/21
- 96 वसंत के बादो सक्रिय साहित्यकार : माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' - डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा/25
- हरिना- मार्कण्डेय शारदेय/32
- गज-लोक - डॉक्टर ज्योत्स्ना प्रसाद/71
- कहाँ चलि गइलऽ ए कागा-तारकेश्वर राय "तारक"/81

**पुस्तक समीक्षा**
- गजल में सुबास देखऽ, कमाल रे भाई- कनक किशोर/16
- आँखिन ढुलकल लोर - डॉ सुनील कूपर पाठक/41

**हँसी-ठिठोली** - संगीत सुभाष / 83

**सतमेझरा** – 1-3, 12,84,90-91

# डिजिटल युग में भोजपुरी: बढ़त पहुँच, घटत पहचान..!

**डॉ. अनिल चौबे**
**सम्पादक, सिरिजन**

आजु के समय बदलाव के समय बा। तकनीक आ इंटरनेट हमनी के जिए, सोचे आ बतियावे के तरीका बदल देले बा। अइसन डिजिटल जुग में, जब पूरा दुनिया एक गो 'ग्लोबल विलेज' (वैश्विक गाँव) बन गइल बिया, तब हमनीं के अपनी मातृभाषा भोजपुरी के वर्तमान आ भबिस्य पर बिचार कइल बेहद जरूरी बा।डिजिटल क्रांति आज पूरा दुनिया में भाषा आ संस्कृति के लेन- देन के तरीका के बदल के रख देले बा। ए बदलाव के लहर से दुनिया भर में फइलल हमनीं के माई- भाषा भोजपुरी भी अछूता नइखे। आज यूट्यूब, इंस्टाग्राम रील, गाना सुने वाला एप्स आ ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर भोजपुरी के मौजूदगी पहिले से कहीं जादा बढ़त देखाई देत बा। लेकिन ए तकनीकी बढ़त के बीचो- बीच एगो बड़ सवाल मुँह बवले ठाढ़ बा— का डिजिटल जमाना भोजपुरी भाषा आ ओकर समृद्ध संस्कृति के नया रूप देत बा कि फिर एकरा के खाली फुहड़ता आ सस्ता मनोरंजन में समेट के रख देले बा?

सकारात्मक पक्ष देखल जाव, तो डिजिटल युग भोजपुरी के कौनो सीमा में बँधे ना देले। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद से लेके अरब देश आ पूरा भारत में बसल भोजपुरी भाषी लोग खातिर इंटरनेट एगो साझा मंच बन गइल बा। अब नया गायक, लेखक आ कलाकार के कौनो बड़ कंपनी के मोहताज ना रहे केपड़े। यूट्यूब पर करोड़ों व्यूज आ रील्स पर थिरकत धुन सबूत बा कि भोजपुरी सामग्री के बाजार बहुते मजबूत बा। 'भोजपुरी रील्स' आज दुनिया भर में ट्रेंड करत बा। लेकिन ए चमक- धमक के पीछे के कड़वा सच्चाई के छुपावल ना जा सके। डिजिटल ज़माना में व्यूज, लाइक्स आ 'वायरल' होखे के आन्हर अघोरी दौड़ भोजपुरी के गंभीरता आ मिठास के भारी नुकसान पहुँचवले बा। तकनीक पहुँच त आसान क देलस, बाकिर गुण- मान लगातार गिरत गइल। दुअर्थी गाना, फूहड़ संवाद आ सस्ता नाच- गाना ही डिजिटल मीडिया पर भोजपुरी के पहचान बने लागल बा। कबीर, भिखारी ठाकुर, राहुल सांकृत्यायन आ महेंद्र मिसिर के एह पावन भाषा के आज खाली अश्लील गीतन के चश्मा से देखल जाता, जे बहुते सोचनीय बा।

एकरे संगे, डिजिटल दुनिया में भोजपुरी के लिखल आ साहित्यिक रूप बहुत पीछे छूट गइल बा। जहाँ हिंदी, तमिल, बांग्ला आ मराठी जइसन भाषा इंटरनेट पर ई- किताब, ब्लॉग, साहित्यिक वेबसाइट आ डिजिटल पत्रिकन से समृद्ध हो रहल बाड़ी सँ, ओहीजा भोजपुरी के डिजिटल रूप बस ऑडियो- वीडियो तक सिमट के रह गइल बा। भोजपुरी के बढ़िया साहित्य के डिजिटल रूप नइखे, जेकरा से आवे वाली पीढ़ी अपनी भाषाई जड़ से कटे के खतरा महसूस करऽतिया।

आजु समय के माँग बा कि ए डिजिटल साधन के सही इस्तेमाल होखे। डिजिटल ज़माना एगो अइसन हथियार ह, जेकर असर एकरा चलावे वाला पर निर्भर करेला। भोजपुरी के पढ़े- लिखल समाज, लेखक, युवा कलाकार आ भाषा- प्रेमियन के एक साथे आगे आवे के पड़ी। इंटरनेट पर गंभीर नाटक, लोक- साहित्य, नीमन संगीत, पॉडकास्ट आ पढ़े वाला सामग्री के बढ़ावा देवे के पड़ी। जब तक तकनीक के इस्तेमाल भाषा के सुधारे आ बचावे खातिर ना होई, तब तक डिजिटल क्रांति भोजपुरी के पहचान त दे सकी, बाकिर ओकर आत्मा आ गरिमा के ना बचा सकी।

ई पत्रिका अइसने दौर में एगो सेतु (पुल) के काम करे के कोसिस कर रहल बिया। हमनीं के मानना बा कि डिजिटल माध्यम खराब नइखे, एकर इस्तेमाल कइसे कइल जा रहल बा, ऊ तय करी कि हमार भाषा कवने राहे जाई। हमनीं के भोजपुरी के युवा रचनाकारन आ कंटेंट क्रिएटर्स से निहोरा बा कि ऊ लोग तकनीक के इस्तेमाल भोजपुरी के समृद्ध लोक- कला, सोहर, पूर्वी, कजरी आ गौरवशाली इतिहास के दुनिया के सोझा लावे खातिर करस।

एह अंक में रउआ सबहे के डिजिटल माध्यम से जुड़ल भोजपुरी के कइयन गो बिद्वानन के लेख, नया जुग के कवियन के रचना आ भाषा के बचावे खातिर जरूरी विमर्श पढ़े के मिली। आशा बा कि ई अंक रउआ सब के झकझोरी अउरी सोचे पर मजबूर करी।

अपना भाषा के डिजिटल बनाईं, बाकिर ओकर मर्यादा आ गरिमा पर आँच मत आवे दीं!

राउर

संपादक,

**डॉ. अनिल चौबे**

# अंजन जी के कविता

भोजपरी गीत सम्राट
**पं० राधा मोहन चौबे**
**'अंजन जी'**

## बिहार-दर्शन

जइबो पुरुबी बनिजिया से सजनियाँ सुनबे ना !!
मुंगेरी लाठी, भागलपुर से रेशमी चदरिया,
बाबा बैजनाथ से मँगबो लमहर एक उमिरिया - से ...
सीतामढ़ी में जा छूवबो सीता के चरनियाँ,
मैथिल कोकिल विद्यापति के, गा-गा के भजनियाँ - से...
मिथिले में भारती-पती मन्डन पंडित के डेरा,
जय-जय-जय जयदेव जनम धरती के करबो फेरा से..
लीची आम मुजफ्फरपुर से, चिउरा चम्पारन से,
वैशाली के दर्शन करबो आ भैंसा लोटन से - से
बाल्मीकि जी जहाँ राम के लिखनी अमर कहानी,
गण्डक के बराज से सुनबे, कथा सुनावे पानी - से
हाजीपुर से केला कीनबो, देखबि, सोनपुर के मेला,
गया पितर के तारब लाइब सुन्दर-सुन्दर पेड़ा - से ...
ले मनेर के लड्डू, खाजा हम सिलाव से लाइब,
कुँवर सिंह के राग जोशीला आजादी के गाइब - से ...
राँची से खाँची भरि लाइबि रूप राशि मुस्कान,
टाटा हटिया अउर बोकारो लोहा के समान - से ...
पटना थाहरबी कुछ दिन सजनी देखबी हम राजधानी,
जहां आजादी खातिर भइली बलिदान जवानी - से ...
ले सीवान से अइबी सजनी सतुआ और सुराही,
आ जइबी गोपालगंज में, दे देबो गलबान्ही - से

◆◆◆

जुलाई, अगस्त आ सितंबर ई बीतल तिमाही खाली कैलेंडर के पन्ना बदले के नाम ना ह, बल्कि ई भोजपुरी माटी के आत्मा के झकझोरे वाला समय रहे। जेठ के तपन के बाद जब आषाढ़ आ सावन में बदरी घिर के आवेले, त सुखात खेत-खलिहान में जिंदगी के नया साँस लौटेला। ई तिमाही प्रकृति के सिंगार, किसानन के पसीना, सामाजिक समरसता आ राजनीतिक हलचल के अइसन ताना-बाना बुनले बा, जेकरा के दर्ज कइल सीरीजन के एह अंक खातिर जरूरी बा।

एह तीन महीना में देश-दुनिया के राजनीति आ समाज में कई गो बड़ बदलाव देखल गइल। जन सरोकार से जुड़ल मुद्दा, महँगाई आ रोजगार के सवाल पर भइल हलचल भोजपुरी क्षेत्र के युवा वर्ग के भी गहराई से प्रभावित कइलस। डिजिटल दौर में भोजपुरी सिनेमा आ संगीत के बदलत रूप पर भी बहस तेज भइल बा—कतहीं फूहड़ता पर लगाम लगावे के पुकार उठल, त कतहीं सार्थक आ लोक-उन्मुख साहित्य के नया अलख जगल।

हाले हमनिके पड़ोसी देश नेपाल आ आसाम, उत्तराखंड में हाल में आइल मूसलाधार बारिश के चलते बाढ़ आ पहाड़ खिसकला से बड़का तबाही भइल। प्रकृति के ई रौद्र रूप से नेपाल के कई गो जिला आ हमनिके देश के भी कइ जिला बुरी तरह प्रभावित भइल बाड़न सा, जहाँ जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गइल बा आ भारी मात्रा में धन-जन के नुकसान भइल बा। नेपाल के भौगोलिक बनावट अइसन बा कि ई हिमालय के गोद में बसल बा। जुलाई से सितम्बर के बीच मानसून के समय जब अचानक बादल फटे जइसन स्थिति होला, त पहाड़ी नदी सब उफान पर आ जालीं। कमजोर आ ढालू पहाड़न पर लगातार पानी पड़े से माटी धसके लागेला, जेकरा से भूस्खलन होला। एही से नदी के रास्ता रुकी जाला आ अचानक बाढ़ के स्थिति पैदा हो जाला। ई प्राकृतिक आपदा हमनी के सीख देला कि पहाड़ी क्षेत्र में अनियंत्रित निर्माण पर रोक लगावे के चाहीं आ पर्यावरण के संतुलन बनाए रखे के चाहीं। आपदा प्रबंधन (Disaster Management) के व्यवस्था के अउरी मजबूत करे के जरूरत बा, ताकि आवे वाला समय में अइसन तबाही से जान-माल के नुकसान कम से कम हो सके।

अब आवेवाला तिमाही अक्टूबर, नवंबर आ दिसंबर—ई तीनों महीना भारतीय संस्कृति, खेती-बारी आ मौसम के बदलाव खातिर बहुते खास आ सुहावन मानल जाला। भादो-कुआर के उमस आ बरसाती चहचहाहट के बाद जब कातिक के पछुआ हवा बहे लागेला, त देह में सिहरन आ मन में उमंग जागेला। ई महीना ना खाली मौसम के मिजाज बदलेला, बल्कि किसानन के घर में अन्न आ खुशहाली के दुआर भी खोलेला। अक्टूबर से मौसम में धीरे-धीरे ठंडक आवे लागेला। दिन में तेरेगन-छैया धूप भावेला आ रात के बेरा हलका-हलका गुलाबी जाड़ा महसूस होखे लागेला। नवंबर आ दिसंबर आउते-आउते ई गुलाबी जाड़ा कड़ाके के ठंड आ कुहासा में बदली जाला। फजीरे खेत-खरीहान में ओस के बूंद चमके लागेला गाँव-घर में भोरे-भोरे घूर तापल शुरू हो जाला, हालांकि ई परम्परा खत्म होखे के कगार पर बा।

ई तिमाही के 'त्योहारन के मौसम' कहल जाव त कवनो गलती ना होई। अक्टूबर (कुवार-कातिक) में दुर्गा पूजा (दशहरा) के धूम रहेला। नौ दिन भवानी के पूजा आ दसमी के मेला के बाद माहौल एकदम भक्तिमय हो जाला।

नवंबर (कातिक-अगहन)में रोशनी के परब दीपावली आ ओकरा ठीक छ दिन बाद आवेला लोक आस्था के महापर्व छठ। बिहार आ पूर्वांचल  खातिर छठ खाली त्योहार ना, भावना ह। नदी-पोखरा के किनारे घाट सजावल जाला, अरघ दिहल जाला आ छठी मइया के गीत से पूरा वातावरण गुंजायमान हो जाला। ओकरा बाद देवोत्थान एकादशी (देवउठान) आवेला, जेकरा से मांगलिक आ सादी-बिआह के लगन शुरू हो जाला।

अक्टूबर आ नवंबर में धान के फसल पाक के तैयार हो जाला। किसान हँसुआ लेके खेत में उतर जालन। धान के कटाई, दवनी आ ओसाई के काम जोर-शोर से शुरू हो जाला। घर में नया अन्न आवे पर किसानन के चेहरा चमक उठेला। धान कटात ही खेत के जोताई-गोड़ाई शुरू हो जाला।

दिसंबर (अगहन-पूस) अंग्रेजी के नया साल के अगवानी खातिर लोग तैयारी करे लागेला। खेतिहर खातिर भी ई तिमाही आस आ उम्मीद के होला। खेत में एक तरफ फसल कटाला त दुसरा ओर नया फसल बोआए शुरू हो जाला। नवंबर आ दिसंबर में गेहूँ, सरसो, चना, मटर, आ तीसी जइसन रबी फसल के बुआई होला।

अक्टूबर, नवंबर आ दिसंबर के ई समय प्रकृति, संस्कृति आ मेहनत के अद्भुत मेल ह। खेत-खलिहान में लहरात फसल, घर-घर में गूंजत छठ के गीत, आ गुलाबी जाड़ा के संगे गरम-गरम चाय आ लिट्टी के स्वाद—ई सब मिलके भोजपुरी माटी के जीवन में एगो अलगे रोनक आ आनंद भर देला।

अंतिम बात बीतल तिमाही हमनी के सिखावेले कि बाढ़ आ अकाल जइसन आपदा आवे भा सामाजिक-राजनीतिक उतार-चढ़ाव, हमार भोजपुरिया समाज हर चुनौती के साधे के क्षमता रखेला। सीरीजन के एह अंक में हमनी के एह तीनों महीना के खट्टा-मीठा अनुभव, साहित्य, संस्कृति आ समकालीन मुद्दा के समेटे के नम्र प्रयास कइले बानी जा।

**राऊर आपन,**

**तारकेश्वर राय**

**उप सम्पादक, सिरिजन**

सिरिजन के पहिला अंक

# स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता

## कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ

**भोजपुरी के आचार्य कवि**
**पं. धरीक्षण मिश्र**

जाँचे के हमार मन सासु धरि दीहें कबें
हमरा बिछौना तर लड्डू और बुनियाँ।
कुक्कुरो बिलारि मूस आ के खाइ जाई तब
उल्टे घुमाई लोग हमरे पर घनियाँ।
हँसि हँसी के बानी कहीं बिगिहें जेठानी आ
सासु कहि दीहें ई तऽ बड़ी बा चटनियाँ।
हमरा सफाई के रही ना सुनवाई कहीं
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥4॥

ओठर सासु दीहें कि एकरा नैहरवा से
आइल कबें ना तनि ढ़ंग से करनियाँ।
एकर खन्दान जरिये के भिखमंगा हवे।
करनी ना कौनो बस खाली बा कथनियाँ।
एकरा महतारी के फूआ बियाहलि रहे
हमरा मौसी का घरे पाँडे के जमुनियाँ।
जानि गैनी एकरा से घर ना हमार चली
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥5॥

आजु जात बानी बन्द होखे एक जेल बीच
जेलर जहाँ के सासु ननदि आ जेठनियाँ।
हम के दिन रात डेरवैहें धमकैहें ऊ
लंका में जानकी के जइसे रकसिनियाँ।
दुइ चारि साल के न बाटे जेल के ई सजा
जेले में बीती अब सउँसी जिन्दगनियाँ।
कौनो अदालत सुनी एकर अपील नाहीं
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥6॥

शेष अगिला अंक में ................

# तहरा बिना तनी ना रकटना

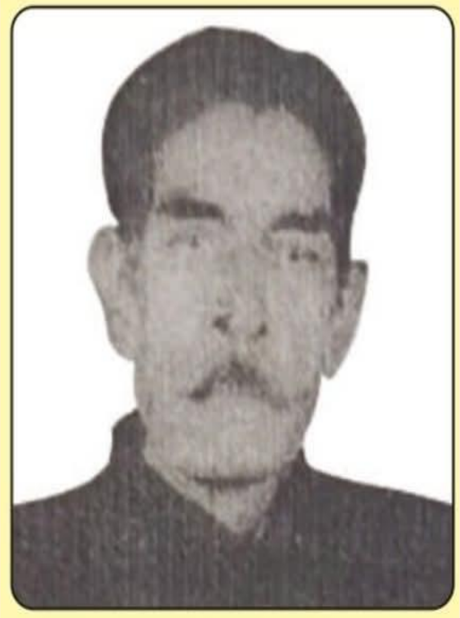

स्व. रामजी सिंह मुखिया

स्संक्षिप्त परिचय: लगभग 1925 में ग्राम पवट, जिला भोजपुर, बिहार में जनम। बचपने से धर्मग्रन्थन्हि आ साहित्य-संगीत में रुचि। किशोरावस्था से भोजपुरी साहित्य में ब्यंग अवरू भक्ति क्षेत्र में पद्यरचना। भारत से लेके बिदेशन्हि तक ब्यंग रचननन्हि के प्रसिद्धि। भोजपुरी साहित्य में अनन्य योगदान। समाजसुधार खाति ग्रामीण राजनीति में अइनी - बेहरा ग्राम पंचायत के मुखिया अवरू आरा अंचल के बी.डी.सी. के अध्यक्ष पद के सुशोभित कइनी। 3 अप्रैल 1999 के निधन। इहाँ के कबिता-संग्रह 'हमहूँ मुखिया होखबि' भोजपुरी साहित्यांगन के वेबसाईट प उपलब्ध बा।

तहरा बिना तनी ना रकटना, ए नंदलाल।

भागल, खेदाइल, कवना नगरी से आईल बाड़, ए नंदलाल,
चुलबुल चोर बाड़ चाटाना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

ताक तार मटर-मटर, सरम ना लाज डर, ए नंदलाल,
खा जईब कहियो चटाकाना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

मलपट घुमाईबि तहार, छरपट छोड़ाई देबि, ए नंदलाल,
चाहे जाईब हाईकोर्ट पटना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

टंगरी ममोरि देबि, घुटना दबोरि देबि, ए नंदलाल,
छाइ छैला माखन गटकना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

घोघा माला पर चोन्हा, हमरो बा अतना सोना, ए नंदलाल,
मोती लर, हीरा जड़िल कंगना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

रामजी के बेरी तूं अबेरी देरी काहें कइल, ए नंदलाल,
तहरा बिना तनी ना रकटना, ए नंदलाल। तहरा बिना...

◆◆◆

# सिर में दरद के कारण मरद

दिल्ली के सड़क पर जब लइकी "मेरे सिर में दर्द है, इसका कारण मर्द है!" ई नारा लगवलीसन, त पूरे देश के मरद समाज के कपार में बिना कवनो कारण के अपने आप दरद चालू हो गइल! मरद समाज सोच में पड़ गइल कि अरे बाप रे , हमनीं के त बस चुपचाप कोना में बइठ के मैच देखत रहनीं ह जा, अब एहू में हमनीं का गलती बा? वाह रे बिधाता! अब तक त ई मरद लोग अपना के 'संसार के चलावे वाला' समझत रहे, बाकी आज मालूम चलल कि ई लोग त असल में 'संसार के सिरदर्द' हवें ! बाकी गम्भीरता से विचार कइल जाव त लइकिन के नारा एकदम गलतो नइखे। आखिर मरद जात कामे अइसन करेला कि केहुओ के माथा घूम जाई ।

"कहाँ बानी?" के टेन्शन:—

मरद से पुछिहें कि "कहाँ बानी?" त जवाब मिली— "बस दू मिनट में पहुँचऽतानीं!" आ ऊ दू मिनट के मतलब दू घंटा होला। एही इंतज़ार में मेहरारू लोग के दिमाग के दही बन जाला आ सिर में दरद धर लेला।

समान खोजे के निपुणता:— घर में सोझा रखल सामान भी मरद के कभी ना लउके। "अरे हमार रूमाल कहाँ बा?", "हमार मोजा नइखे मिलत!" — दिन में पचास बार ई रट सुनके कवनो लइकी के सिर में दरद ना होई त का भोजपुरी भजन बाजी । 'हाँ में हाँ' ना मिलावल: — मेहरारू चाहे गर्लफ्रेंड पूछस कि "ई साड़ी में हम पातर लागत बानी ना?" अब एमें मरद सोच में पड़ के सेकंड भर खातिर हिचकिचा गइलें, त समझीं कि ओही घड़ी माथा के नस फाटे के मुहूर्त निकल गइल!

मरद समाज के जवाब (सफाई में):—

अब एहिजा मरद लोग भी रोवत-गावत कहत बा— "ए मैडम! रउआ लोग के सिर में दरद के कारण हमनीं बानीं, बाकी हमनीं के कपार में जवन 'माइग्रेन' बा, ओकर कारण के बा?"

"मैच के बीच में टीवी के रिमोट छीन लिहल,"

"बाजार में पाँच घंटा घुमा के खाली एक गो क्लिफ खरीदल,"

आ "काल्ह रात काहें उदास रहनीं?" — अइसन गहन दार्शनिक सवाल पूछल!

निचोड़:

सच पूछीं त ई नारा एकदम हिट बा! मरद ना होखितन त ना कवनो किचकिच होत, ना बाजार में भीड़ होत, आ न डिस्प्रिन बिकात! बाकी मजबूरी ई बा कि सिर में दरद भले 'मरद' हवे, बाकी एही दरद के बिना जिंदगी में कवनो 'मजा' भी नइखे।

कुल मिला के बात ई बा कि 'मरद' ई संसार के अइसन 'झंडू बाम' हवें, जेकरे बिना माथा के दरद मेटियो ना सके आ जेकरा रहला से दरद दूरो ना होखे । दिल्ली के ई नारा त अमर हो गइल बा, बाकी सभसे बड़ सच्चाई ई बा कि सिर में दरद भले 'मरद' होखे, बाकी एही दरद में जिंदगी के असली मकसद छिपल बा!

**डॉ. अनिल चौबे**
**सम्पादक, सिरिजन**

# मुखपृष्ठ के चित्रकार अंतरिक्ष के परिचय

सितंबर 2006 के जनमल अंतरिक्ष के स्थाई निवास गाँव महादेव, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश ह। अंतरिक्ष वर्तमान में बी०सी०ए० (2nd Sem) के छात्र बाड़ें। अंतरिक्ष के फोटोग्राफी, पेंटिंग आ लेखन में रूचि बा। अंतरिक्ष के पेंटिंग आ रचना कई पत्र-पत्रिकनन में प्रकाशित भइल बा। सितंबर 2022 से अंतरिक्ष फोटोग्राफी क रहल बाड़ें आ ए छोटे अंतराल में उनके सैकड़न फोटो आ डिजिटल आर्ट्स देश-विदेश के जानल-मानल पत्रिकन जइसे हंस, पक्षधर, नया ज्ञानोदय, सेतु, वर्तमान साहित्य, कथाक्रम, परिकथा, विपाशा, वीणा, पाखी, समयांतर, सरस्वती, उत्तर प्रदेश, प्रस्ताव, अदम्य, जलवायु, सार-समीक्षा, प्रेमचंद पथ, नाद रंग, अंतरंग, छाँह, रचना उत्सव, हिम भारती, समीरा, आउटलुक, अक्षरा, संवदिया, बरोह, शीतल वाणी, पाती, पतहर, प्रस्ताव, प्रश्नचिन्ह, समकाल, हरिगंधा, सत्राची (शोध पत्रिका), मुक्तांचल, कलम हस्ताक्षर, समकालीन अभिव्यक्ति, शैक्षिक दखल, साहित्य समय, साहित्य यात्रा, शब्दिता, शुभ तारिका, शब्द संयोजन (नेपाल से प्रकाशित), हिमप्रस्थ, हिमतरू, अभिदेशक, दि अण्डरलाइन, राजस्थली, साहित्य समीर दस्तक, पाठशाला, आधारशिला साहित्यम्, परिवर्तन, प्रकृति मेल, प्रकृति दर्शन वगैरह के मुख पृष्ठ आ भीतरी पन्नन पर प्रकाशित भइल बा। साथहीं, देश के जानल-मानल प्रकाशन जइसे बोधि प्रकाशन, समय साक्ष्य, डायमंड बुक्स, समर प्रकाशन, शिल्पायन बुक्स, पुस्तकनामा, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन्स, पाखी पब्लिशिंग हाउस, सत्राची फाउंडेशन, कामायनी, सी जी ज्ञान प्रकाशन, मैत्रेयी प्रकाशन, चतुरंग प्रकाशन, किसुन संकल्प लोक वगैरह के पुस्तकन के आवरणो पर अंतरिक्ष के फोटो आ आर्ट स्थान पवले बा। देश के दुसरो चर्चित साहित्यिक पत्रिका आ प्रकाशन अंतरिक्ष के फोटो आवे वाला अंकन आ पुस्तकन खातिर चयनित कइले बा।

अंतरिक्ष

सुपुत्र श्री पवन चौहान, गाँव व डा० महादेव, तहसील-सुन्दरनगर, जिला- मण्डी (हि०प्र०)- 175018

मो०- 9805402242, 8894122242

Email : antriksh92006@gmail.com

◆ ◆ ◆

अंतरिक्ष

# पुस्तक क नाम —श्रीमद्भगवद्गीता, भोजपुरी भावानुवाद ( काव्यात्मक )

## ---- कृष्ण मुरारी राय ----

## प्रकाशक - सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली

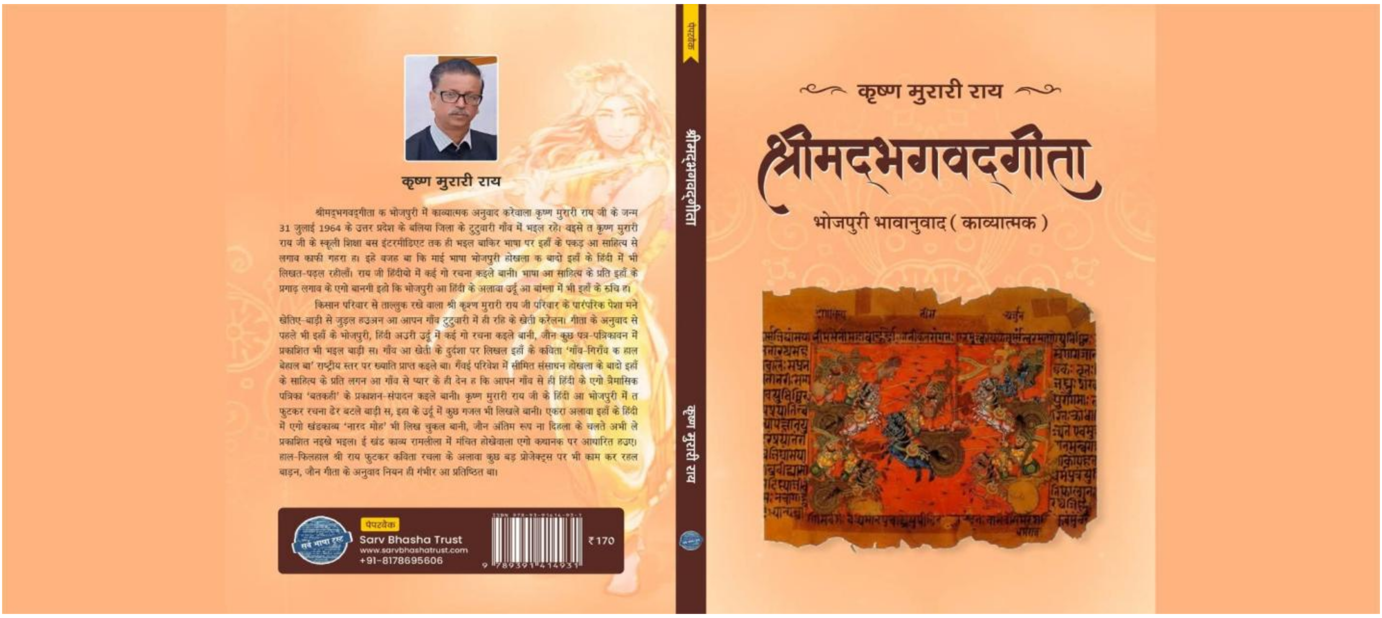


पिछला अंक में अध्याय 2 क 25 श्लोक तक भइल रहल हऽ। अब आगे श्लोक 26 से

यदि तू जो बूझतार जनमे या मरेला ई,<br>
बाति मानऽ तबो शोक तनिको ना करिहऽ।<br>
काहें से कि एह अनुसार जे जनम लेई,<br>
निश्चित ही एक नाहीं एक दिन मरिहें।।26।।

संगे-संगे ई हो भी विधान ई बनल बाटे,<br>
जे भी मरी फेरु होई ओकर जनमवा।<br>
अब बोलऽ कवनो उपाय जब चली नाहीं,<br>
काहे बदे शोक वाला करताड़ कमवा।।27।।

सब केहू जनम से पहिले अलोता रहे,<br>
मूअला क बाद फेरु होखहीं के लोप बा।<br>
बस खाली बीच में दिखाई देबे वाला खातिर,<br>
अर्जुन! बताव का जरूरी कइल शोक बा।।28।।

(12)

चिहा-चिहा के देखि के, केहू बा हैरान,<br>
केहू एकरा तत्व के, करे चिहुकि गुणगान।<br>
कुछ ज्ञानी आश्चर्य से, सुनस लगा के ध्यान,<br>
सुनि के भी कुछ लोग त, रह जालन अनजान।।29।।

सबका शरीर में ई आत्मा निवास करे,
तबो कबो बध एकर होखे नाहीं पावेला।
एही से ही दुनिया क हर प्राणी बदे पार्थ,
तोहरा अस आदमी के शोक ना सतावेला।।30।।

आपनऽ धरम देखि के भी डरे लायक ना,
बाड़ तू समझि ल मेंटालऽ आपन भरम।
काहें से कि धर्म - युद्ध से भी ऊपर कवनो,
क्षतरी क भल बदे होखेला ना कलं।।31।।

खुलल दुआरी वाला सरग जइसे पावे केहू,
अइसने बखानल गइल अस युद्ध के।
पिरिथा के पुत्र सुनऽ कहल गइल बाटे,
मिलेला अनासे ई त क्षत्रिय प्रबुद्ध के।।32।।

धर्म क युद्ध ह ई करब अगर ना त,
तोहरो धरम कूल्हि नाश होई जइहें।
आजु तक क कइल करावल खतम होई,

ऊपरा से अपयश क पाप लगि जइहें।।33।।
आवेला पीढ़ी ढेर दिन तक बखान करी,
टीका अपयश का न जल्दी धोआई।
हर भल आदमी का अजस ढोअलका से,
जल्दी मुअलके में लागेला भलाई।।34।।

जेकरा नजरिया में पहिले तू बड़ रह,
छोट होके रहब तू कवना करनवा।
ऊहे महारथी लोग फेनु पाछे कहिहन कि,
डर क करनवा से छोड़ि देले रनवा।।35।।

बेंवत पर अंगुरी उठइहन तोहार बैरी,
बोलिहन कुबोली जवन चाही नाहीं तवन।
तनी तू बताव गुडाकेश ! एह धरती पर,
एकरा से बड़ बात दुख क बा कवन।।36।।

यदि युद्ध करत में मरि गइल त, सरग में जइब जान ल तू।

यदि जीत मिली त पृथ्वी क, राजा बनि जइबऽ मान ल तू।

सुख दुख दूनों भी एके ह, नाफा नुकसान बराबर ह।

नीमन से कूल्हि समझ अर्जुन, तू युद्ध बदे तैयार रह।

एह तरह ना तोहके पाप लगी, ना तनिको तोह पर दाग लगी।

अब तक जेतना बतलवनी ह। सब ज्ञान योग समझवनी हं।

अब कर्म योग के बात सुनऽ। हे पृथा पुत्र! हे तात सुनऽ।

पहिले क बुद्धि धुंँधला जाई, कर्मन क बंध खोला जाई।।37-39।।

ना बीज खतम होला एकर, फल दोष भी ना होला एकर।

जे करम योग के अपनावे, भय जनम मरण क ना पावे।।

यानी जब काम आरंभ करऽ , पूरा होई ना दंभ करऽ।

पूरा भी यदि ई ना होई, शुरूआत कइल भी ना खोई।

करब तू जवन सुरक्षित बा, उल्टा परिणाम से रिक्षत बा।

जेतने करब बेकार न बा, हं रूप भले साकार न बा।।40।।

व्यवसाय-आत्मिका ईहे ह, जीवन क तरीका ईहे ह।
एह मारग पर जे चलेला, ओकर बुद्धि दृढ़ रहेला।
ऊ राह से ना कबो भटके, ऊ राह में ना कबो अटके।
ना अटके-भटके राह में ऊ, ना कबो रहे परवाह में ऊ।
एह मार्ग से जे विपरीत चले, ओकर दोविधा में चित्त जले।
ई अव्यवसायि कहल जालन, तनिके में उठल-ढहल जालन।
हरदम ऊ डां ँवाडोल रही, मन में संशय क घोल रही।
एमा बुद्धि छितरा जाले , तनिके में डूबि उतिरा जाले।
हे कुरुनंदन ऊ ना बा अटल, मन हरदम ओकर बा चंचल।।41।।

जेकर बुद्धि कुछ कमतर बा, इंद्रियसुख में तर बतर बा।
वेदन में वाक्य अलंकृत बा, पढ़ सुनि जेकर मन झंकृत बा।
ऊ स्वर्ग के बस पावल चाहे, बस वेद वाक्य गावल चाहे।
जेकरा से मन के तृप्ति मिले, ऊ ओही में संलिप्त मिले।
जे हरदम भोग में लिप्त रहे, सुख-सुविधा में संतृप्त रहे।
जेकर चित सदा मोहाइल बा, बस माया में अझुराइल बा।
ओकर दृढ़ निश्चय हो न सके, ऊ कबो भी तन्मय हो न सके।।42-44।।

सत्, रज, तम वेद बतावेला। सबका ईहे मन भावेला।
एहमा अर्जुन मत अझुरइहऽ । इंद्रीयजीत तू बनि जइहऽ।
ना पावे के ईछा रखिह। ना पवला क रछा करिह।
जे बड़ा जलाशय पा जाई। छोटहन का पंजरी का जाई।
जे ब्रह्म ज्ञान के गइल जान। ऊ का गाई अब वेद ज्ञान।।45-46।।

कर्म करऽ तोहके मिलल, बा निश्चय एतने अधिकार।
फल क चिंता मत कर, चिंता बा बेकार।।
फल तोहरा करतिन मिलल, तनिक ना राख सोच।
भाग मत बस कर्म कर, हो कर निःसंकोच।।47।।

तजि करके हर आसक्ति के, समभाव से आपन कर्मकर।
जय और पराजय एके ह, कवनो के अधिक ना कम कर।
ई समता योग कहल जाला, मन में समभाव जरूरी बा।
पणिाम क चिंता छोड़-छाड़, बस काम में चाव जरूरी बा।।48।।

निष्काम भाव से काम कर, हे अर्जुन तजि के छोट काम।
कंजूस कहल जाला उनके, जे काम करे होके सकाम।।49।।

सम बुद्धि से संयुक्त पुरुष, ना पाप पुण्य के मानेला।
हे कइला क फल हई मिली, एमा ना खुद के सानेला।।
एही से तू समरूप बनऽ, एही में कौशल दिखलावऽ।
भय जनम-मरण के मिट जाई, बस राह इहे तू अपनावऽ ।।50।।

◆ ◆ ◆

क्रमशः अगिला अंक में

**कृष्ण मुरारी राय**
**टुटुवारी, बलिया (यू. पी.)**

# गजल में सुबास देखऽ, कमाल रे भाई

मिथिलेश ' गहमरी '

1. दू बात कवि आ समीक्ष्य गजल संग्रह पर:

मिथिलेश ' गहमरी ' के गजल लेखन होखे भा मंचीय प्रस्तुति, दूनों के आपन एगो विशेष छवि बा, विशेष अंदाज बा, विशेष पहचान बा। इहे विशेष अंदाज उहाँ के सामान्य से हटा के विशेष बना देला गजल, रूबाई आ मुक्तक के साहित्यांगन में। गहमर गाँव के बहुत विशेषता बा। भोलानाथ गहमरी के गाँव ह। बड़हन गाँव के बसींदा लमहर मिथिलेश जी कम लिखींला बाकिर ठोस आ प्रभावी। साहित्य के गुणवत्ता से समझौता करे इहाँ के ना आवे। लोक आ माटी के सुबास से जुड़ाव इहाँ के साहित्य के सबसे बड़ विशेषता ह। इहाँ के गजल संग्रह ' केकरा से मांगीं अँजोर ' में कुल 112 गो गजल संकलित बा आ पुस्तक भोजपुरी गजल के पितामह जगन्नाथ जी के समर्पित बा।ई गजल संग्रह 2019 में प्रकाशित भइल रहे। गजल संग्रह के शीर्षक ' केकरा से मांगीं अँजोर ' अपना में गहिर प्रतिकात्मक अर्थ समेटले बा। गजलकार खाली केहू से अपना खातिर मांगे वाला अँजोर के बाति नइखे करत, बलुक समाज, मनुष्य के चेतना, मानवीय दृष्टि में घर कर गइल तम भरल अमानवीय संरचना के बेनकाब करे खातिर अँजोर खोज रहल बाड़न, मांगहू वाला केहू नइखे लउकत एह बिगड़ल परिवेश तब त सवाल उठत बा केकरा से? गजल एगो कठिन साहित्यिक विधा ह, बड़ी गणना - मनना खोजेला बाकिर मिथिलेश जी के संकलन देखी के कहे के पड़त बा कि नवही गजलकार के प्रथम कृति देखि केहू ना कह सकी कि एगो नया गजलकार के कृति ह। एकर कारण संकलित गजलन के बहुवर्णी रूप, चयनित शब्द आ तकनीकी प्रौढ़ता बा। आजु यही संकलन पर बतकही केंद्रित रखत कुछ बाति कइल चाहब। गजलकार के आधुनिक भाव बोध, अनुभूति, संवेदन आ चिंतन के गजलन में गहनता देखत बनत बा। संग्रहित गजलन में व्यजित स्वर के देखि कहे के पड़त बा - ' देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर '।

2. जीवन अनुभव के अभिव्यक्ति :

' केकरा से माँगीं अँजोर ' गजल संग्रह से गुजरला पर लागत बा गजलकार शब्दन में खाली जीयत नइखे बलुक शब्दन के जीयत बा। ऊ गजल सिरिजिना के माध्यम से अपना शोधित विवेक से शब्दन के भीड़ से

अपना अनुभूतियन के शब्द चुनके सुघर गजल के रूप में सहेजले - सजवले बा। साहित्य के उर्वर खेत में भाव से भरल गजल रूपी सुगंधित फूल के खेती कइले बाड़ें गहमरी जी। गहमरी जी ओह गजलन मे जीवन आ लोक परिवेश के सच्चाई के परोसले बाड़न। जीवन आ समाज में समय के साथ उठत - गिरत लहरन पर शब्द के नाव पर गजलकार सवार होके सामाजिक सच्चाई से अवगत करावे के सफल प्रयास कइले बाड़ें। ओह सच्चाई के विविध वर्णी रूप के दर्शन संकलन ' केकरा से मांगीं अँजोर ' में हो रहल बा। संकलन के एही सब गुण देखि अदम गोंडवी साहेब के एह संकलन के बारे में कथन बा कि- " लोक-अंचल की विभूति माथे पर सजाये इस कवि की चेतना रससिक्त रहने की आदी है और उसकी रचना-धर्मिता, अपने परिवेश की मिठास और कड़वाहट दोनो पक्षों को काव्य रचना की शास्त्रीय पद्धति की लक्ष्मण रेखा में सुरक्षित रखकर जो कुछ पेश करती है वह कवि से ज्यादा कवि के जमीनी परिवेश का लेखा-जोखा है। " अनिरुद्ध सिन्हा संकलन पर प्रतिक्रिया देत संग्रह के गुणवत्ता पर कहले बाड़ें कि - " मिथिलेश ने अपने काव्य-कौशल का परिचय देते हुए अपनी ग़ज़लों में समकालीनता और आधुनिकता का अपना मौलिक चिंतन दिया है। इनकी बहुसंख्यक गजलों में समय की प्रधानता है, जो सुखात्मक भी है और दुःखात्मक भी तथा सामाजिक विसंगतियो, उपभोक्तावादी संस्कृति में दहकते नाते-रिश्ते, महँगाई में पिसते मध्यवर्गीय समाज राजनैतिक अवमूल्यन उभर कर सामने आते हैं, जो अपनी विविधता और सप्राणवता के कारण विशिष्ट हैं। जहाँ तक शिल्प विधान की बाते हैं तो यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि 'मिथिलेश' की गजलें निर्धारित छन्द (बहर) को अपने साथ लेकर चलती हैं, कहीं कोई अवरूद्ध और हनन की बात नहीं आती है। जिहाफ प्रक्रिया से लोकरागों में बह ढूँढकर उन्हें गजलों में ढालने की 'मिथिलेश' की कोशिश क़ाबिले तारीफ है।" मिथिलेश ने खुद अपना गजल संग्रह के बारे में कहत बाड़ें कि " हम त बस अपना समय, समाज, संवेदना के नेंवरती (नाँवें) अपना माटी से, जिनिगी से जुड़ल-भोजपुरी भाषा में गजल सिरिफ गजल कहले बानीं। " संकलन पर गजल के दुनिया के दूगो महान हस्ती के मंतव्य रेघरिआवे जोग बा आ संकलन में सम्मलित गजलन के रूप, सुभाव आ मरम समझे - समझावे खातिर काफी बा।

3. संकलित गजलन के रूप आ सुभाव :

संग्रह में संकलित गजलन के रूप आ सुभाव के सार कहे के होई त हम गजलकारे के शब्द उधार लेके कहब -

" होई 'मिथिलेश' के गजल, बाकिर
गैर के पीर से भरल होई। "

एगो अउर गजल के आलोक में कवि के जुबान के मरम समझल ठीक होई।

" जइसे गाँधी जी से 'सत्यागरह' जुड़ल बाटे
शायरी के उहे हमरा जुबान से रिश्ता। "

जहाँ अन्हार चहुँओर फइलल रहेला, दूर तक ले अँजोर ना लउके, मनई में मानवता मर गइल होखे त केकरा से मांगीं अँजोर के प्रश्न स्वभाविक बा।

पीर खातिर भोजपुरी में ढेर शब्द बा आ एह संकलन के गजलन में ढेर तरह के पीर के शब्दन में उकेरल गइल बा। पीर दैहिक, दैविक आ भौतिक ताप के उपज ह। दैहिक दवाई से आ दैविक समय से ठीक होला बाकिर भौतिक ताप से उपजल के दवाई ना भेंटाय काहे कि ऊ कामना के उपज ह। आज सांसारिक सुख, संपत्ति आ शक्ति के ललक मनई, समाज, लोक, राजनीति, परिवेश में बढ़ल जात बा अउर बाहरी चकाचौंध में फँसि मनई नैतिकता, सामाजिकता, लौकिकता खोके अपना खातिर खुद पीर पैदा करि माथ पर लदले घूमत चल रहल बा। समष्टि के भाव अपना स्वार्थ में निगल व्यष्टि के राह पकड़ि बाजार आ सत्ता के जाल में अइसन फँस गइल बा कि केनहूँ अँजोर नइखे मिलत। एही छटपटाहट में अँजोर के तलाश में भटक रहल बा मनई। गजलकार माटी, लोक, गाँव आ परिवेश से जुड़ल मनई हवे आ अपना अनुभूतियन के अपना स्मृति वन में संजोके रखले बाड़ें ई गजलन के सुबास कह रहल बा।

पीर के साथे अऊर बहुत कुछ बा संकलन में बाकिर उहो सब भौतिकता के विकास के थोपल पीरे ह। एह सामयिक गजल संग्रह के कुछ गजलन के अस्वाद आपो चखीं।

" दिल भइल काठ, रात के फिकिरे
आँखि अझुरल बिहान में देखलीं।

घर में खाए के माहुरो नइखे
रोग लागल बा धान में देखलीं।

करेजा काठ तबे होला जब दुख के बजर टूट जाला। रात के खाये के फिकिर जेकरा होखे, घरे माहुरो ना होखे, अगहनो के आस बुझा गइल होखे त बिहाने में नू अझुराइल रही। बिहान अँजोर के आस होला। ऐह गजल में सामाजिक पीर के गहनता अनुभव कइल जा सकेला। कवि कारणों ढ़ूढ़े के प्रयास करत बा कि आखिर अँजोर गइल कहाँ? ओकर इशारा बा कि एकरा पीछे खेला बा। सब के मेला में उझरा आपन खेल के साधत बा-

" ई, सोचे वाली बात बा, कि भोर का भइल कि जब
अँजोर के मुँड़ेर पर, अन्हार मुस्कियात बा।

कवि सोचते भर नइखे कारण बतावत कहत बा-

"देश के एह दुर्दशा पर हमके बा एतने बुझात
ओद लवना से पड़ल पाला, त अदहन का करी।"

बाकिर अँजोर पावे के भविष्य के प्रति तनिको आस नइखे लउकत तब त कहत बाड़ें -

" अबहीं त सउरी में गोड़ बा अँजोर के
ए' हुजूर, का बताई रूप-रंग भोर क। "

सामाजिक बिद्रूपता के आँगन में नैतिकता के नंगा नाच पर मिथिलेश के स्वर -

" जे बा डूबल गुनाह में, ओकर
होत पूजा जहान में देखलीं। "

" हाथ दुनिया मिला रहल, बाकिर
मन के भीतर अपार दूरी बा।
ऊँच सबका से बा मुड़ी ओकरे
आज जेकरा में जी हजूरी बा। "

समय, सामाजिक परिवेश, नैतिकता में आइल गिरावट ना त ई का कहाई?

आदमी भीतर से खोखला आ सिद्धांत विहीन हो गइल बा तब त गजलकार कह रहल बाड़ें -

" बिना पेनी के लोटा हो गइल बा आज के इंसान जमाना से दिनो-दिन उठ रहल एतबार, ए बाबू।

" वाह रे नयका जमाना, वाह रे ई सभ्यता
जानवर से दोस्ती, इंसान के दुतकार दऽ।"

कवि के भीतर के संस्कार आ दुनिया में माई के आजु स्थिति देखत कवि के मानवता भरल दृष्टि देखीं -

"बिना छत के भवन कवनो, अधूरा होला दुनिया में
कबो, माई के जनि बूझिहऽ तूँ आपन भार, ए बाबू।"

आजु के राजनीति के सच्चाई बयान करत व्यंग्य देखल जा सकेला-

"ई दुर्गति-दुर्दशा आपन देखावल जाव केकरा के
खबर बाटे कि आन्हर हो गइल सरकार, ए बाबू। "

" दाना-दाना बिना मरे परजा
बाटे राजा के ताज के चिन्ता।"

आजु विकास आ बाजार के चकाचौंध मे ़ भले मनई भुलाइल जा रहल बा बाकिर मनई के भीतर प्रेम आ मानवता के सोत सुखाइल जात बा। मिथिलेश के स्वर -

"तोहर द्वारिका भले सरग - मतिन बुझात बा
हमार बृन्दाबन त चारूओर से झुरात बा।
गरीबी पर महँगाई के

मार पे गहमरी जी के स्वर-

"बाघ महँगाई के हर छन बाटे अपना घात में,

अइसना में गाय-जइसन कवनो निर्धन का करी।"

प्रेम के ताकत बतावत गजलकार के कथन-

" दिल में तू मुहब्बत के ठहर जाये द छन भर

फिर तऽ सभे आपन बा, केहू आन कहाँ बा। "

धर्म के बाजार, मंदिर - मस्जिद के दुकान के आड़ में हो रहल खेल पर -

" सामने संत बा, कि बा शैतान

चेहरा-मोहरा से ना चिन्हाई, आज। "

व्यष्टि से समष्टि के ओर बढ़त कदम पर-

"अपना मन के रंगा गइल चुनरी

के करत बा समाज के चिन्ता।"

पलायन के साथ भोजपुरिया समाज जुड़ल रहल बा। पलायन के दरद गाँव आ ऊ मनई समझ सकेला, जे रोजी - रोटी खातिर आ अपना सपना के उड़ान देवे खातिर परिवार छोड़ि शहर मे भुलाइल बा, दोसर केहू नाहीं। कवि स्वर पलायन के दंश पर -

" शहर में, गाँव के जब याद आ गइल होई

देहाती पंछी के दिल तड़फड़ा गइल होई। "

जदी सनेह के दीया बुता गइल होई
हिया - हिया में अन्हरिया समा गइल होई।

लगाके आग मिलल रउवा के खुशी बाकिर
गरीब लोग के दुनिया लुटा गइल होई।

गुमान टूट गइल होई ऊँच उड़ला के
पतंग, डोर से छुटते बिला गइल होई।

कबो ना अइसहीं टूटे उमीद के डोरी
कपूत, बाप के देके दगा गइल होई।"

4. अंत में कहब:

' केकरा से मांगी अँजोर ' गजल के रूमानियत के दुनिया से ना लोक के समकालीनता से परिचय करावत बा। गजलन के बनावट आ बुनाहट गजल के सजीव बनावे में सहायक बा। टभकत पीर के साथ जीवन के रससिक्त बनावे के बातों कइल गइल बा संकलन में।संकलन के हर गजल बेजोड़ बाड़ी सं। संकलित गजलन के सबसे बड़ खूबसूरती ओकर सरल आ ठेठ भाषा बा जे गजल के सुबास आ मिठास बढ़ा देता। बहर के डहर पर का कहल जाय, अदम गोंडवी आ अनिरुद्ध जी सप्रमाण अपना बयान में गजल के तकनीकी पर बात रखलें बाड़ें। मिथिलेश के गजल सभ आपन गहराई आ विस्तार बतावे में सक्षम बाड़न सं। गजल से गुजरला पर गजल के गुणवत्ता, गजलकार के मेहनत आ सधल साधना साफ झलकत बा। भोजपुरी के एगो आदर्श गजल संग्रह के एह संकलन के संज्ञा देल जाय त कवनो गलत ना कहल जाई। लमहर मनई

के बुद्धि ठेहुना में होला, एह कहाउतो के झूठलावता ई संग्रह। गजलन के शब्द चयन, जीवन दृष्टि, समकालीनता दर्शन आ सहजता गजलन के प्रवाही बना देले बा। शब्दन के संयोजन पाठक के ठहर के, डूबके आगे बढ़े के कहत बा। ई गजलकार के गजलन के माध्यम से मानवीय दृष्टि के साधना, समष्टि के पक्ष में खड़ा होखल ना ह त का ह? संकलित गजल सभ शब्दन से दृश्य के निर्माण करत बाड़ी सं। गजलन में पीर के उपस्थिति पाठक के  अइसन भाव बोध में ले जाता जहाँ पाठक के ऊ आपन पीर लागत बा।शब्दन में भावन के ज्वार समेटले गजलन के बुनावट एह संकलन के विशिष्ट बनावत बा। भोजपुरी गजल संसार के क्लासिक परंपरा के बढ़ा रहल मिथिलेश जी के एह संग्रह के भरपूर स्वागत होखे के चाहीं। कामना बा मिथिलेश जी भोजपुरी में असहीं रचत - बसत भोजपुरी के साहित्य संसार समृद्ध करत चलीं।

कनक किशोर

राँची, झारखंड

समीक्ष्य पुस्तक - केकरा से मांगीं अँजोर

लेखक - मिथिलेश ' गहमरी '

विधा - गजल

प्रकाशक - सतयांश उपक्रम ( प्रा. ) लिमिटेड, बलिया

मूल्य - रु. 200/

◆ ◆ ◆

# भोजपुरी साहित्य में गीत विषयक संवाद डॉ० कमलेश राय के बिना पूरा ना हो सकेला

भोजपुरी साहित्य के समकालीन धारा में डॉ० कमलेश राय ओह विशिष्ट रचनाकारन में अग्रगण्य बाड़ें, जे अपना सृजनशीलता, वैचारिक प्रतिबद्धता आ संगठनात्मक सक्रियता के माध्यम से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के नया ऊर्जा देले बाड़ें। ऊ अइसन साहित्यकार हउवें, जिनकर लेखनी लोकजीवन के संवेदना, सामाजिक सरोकार आ सांस्कृतिक मूल्यन के समान गंभीरता आ आत्मीयता के साथे अभिव्यक्त करेला। कविता, गीत, ग़ज़ल, दोहा, निबंध, संपादन आ साहित्यिक संगठन—हर क्षेत्र में उनकर उल्लेखनीय योगदान बा। एह कारण ऊ समकालीन भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के एगो सशक्त, सम्मानित आ विशिष्ट हस्ताक्षर बन गइल बाड़ें।

31 अक्टूबर 1960 के उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद के मुर्तजीपुर गाँव में जनमल डॉ० कमलेश राय एम०ए० आ पी-एच०डी० के उपाधि हासिल कइले बाड़ें। उनका पिता स्वर्गीय आदित्य देव राय आ माता स्वर्गीय मदिता राय से मिलल संस्कार उनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व के गढ़े में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभवलस। ग्रामीण परिवेश से मिलल जीवनानुभव आ साहित्य के प्रति सहज अनुराग उनका के शुरूए से सृजन के ओर प्रेरित करत रहल। एही चलते साहित्य उनका खातिर खाली अभिव्यक्ति के माध्यम ना, बल्कि समाज, संस्कृति आ मानवीय मूल्यन के संरक्षण के आजीवन संकल्प बन गइल।

डॉ० कमलेश राय के साहित्यिक व्यक्तित्व खाली एगो रचनाकार तक सीमित नइखे। ऊ भोजपुरी भाषा के सजग संवाहक, कुशल संपादक, प्रभावशाली वक्ता आ सक्रिय संगठनकर्ता के रूप में भी समान रूप से प्रतिष्ठित बाड़ें। विश्व भोजपुरी सम्मेलन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, हिन्दुस्तानी अकादमी, भोजपुरी मैथिली अकादमी आ भोजपुरी साहित्य अकादमी जइसन प्रतिष्ठित संस्थन द्वारा आयोजित संगोष्ठी, सेमिनार आ कवि-सम्मेलन में उनकर सक्रिय सहभागिता रहल बा। जहाँ कहीं उनका के अवसर मिलल, उहाँ ऊ भोजपुरी भाषा के समृद्ध परंपरा, सांस्कृतिक अस्मिता आ

साहित्यिक गरिमा के प्रभावशाली ढंग से स्थापित कइले बाड़ें। अपना विशिष्ट काव्य-पाठ शैली, ओजस्वी वक्तृत्व आ सटीक शब्द-चयन के चलते ऊ श्रोता आ पाठकन के मन पर अमिट छाप छोड़ेलें आ लागेला कि जइसे ऊ बतियावत होखसु। भोजपुरी भाषा के भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में स्थान दियावे आ ओकर व्यापक विकास खातिर भी ऊ निरंतर सक्रिय आ प्रतिबद्ध रहल बाड़ें।

उनकर रचनन के प्रसारण दूरदर्शन, आकाशवाणी आ विभिन्न टेलीविजन चैनलन से लगातार होत रहल बा। भोजपुरी फीचर फिल्म 'चिरइयो न बोले' खातिर गीत-लेखन, संगीत-रचना आ संवादन के भोजपुरी रूपांतरण में भी उनकर महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा। ई उनकर बहुआयामी रचनात्मक प्रतिभा के सशक्त प्रमाण ह।

डॉ० कमलेश राय खाली सृजनधर्मी साहित्यकारे ना हउवें, ऊ एगो सफल संपादक भी हउवें। समकालीन चिंतन आ सृजन के समर्पित साहित्यिक पत्रिका 'शब्दिता' के संपादन आ प्रकाशन के माध्यम से ऊ वरिष्ठ आ नवोदित रचनाकारन के एगो सशक्त मंच उपलब्ध करवले बाड़ें। भोजपुरी साहित्य के विकास, विस्तार आ नयकी पीढ़ी में साहित्यिक चेतना के प्रसार में उनकर ई योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानल जाला।

वर्ष 2020 में डी०सी०एस०के० पी०जी० कॉलेज, मऊनाथ भंजन (मऊ) से सेवानिवृत्त होखे के बाद ऊ पूर्णकालिक रूप से साहित्य-सृजन, लेखन आ संगठनात्मक गतिविधियन में लगातार सक्रिय बाड़ें। वर्तमान में ऊ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन, प्रचार-प्रसार आ संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण खातिर निरंतर काम कर रहल बाड़ें। साहित्यिक संस्थन के संगठित करे, नयकी प्रतिभा के प्रोत्साहित करे आ भोजपुरी के व्यापक राष्ट्रीय मंच उपलब्ध करावे में उनकर भूमिका अत्यंत उल्लेखनीय आ प्रेरणास्पद रहल बा।

डॉ० कमलेश राय के साहित्य-संसार उनका द्वारा विभिन्न विधा में रचल कृतियन के माध्यम से अउरी व्यापक रूप में सामने आवेला। भले उनकर प्रकाशित किताबन के संख्या अपेक्षाकृत कम होखे, बाकिर ऊ अपना उत्कृष्ट रचनात्मकता के बल पर भोजपुरी साहित्य के फलक पर अमिट छाप छोड़ले बाड़ें। ऊ एह सत्य के सशक्त उदाहरण हउवें कि साहित्य में महत्त्व कृतियन के संख्या के ना, ओकर गुणवत्ता, वैचारिक ऊँचाई आ साहित्यिक प्रभाव के होला।

उनकर प्रमुख साहित्यिक कृतियन में 'तोहरे बिहान दाँव पर' (भोजपुरी गीत-संग्रह), 'अइसन आज कबीर कहाँ' (भोजपुरी गीत-संग्रह), 'हर समय में हँसे धरती' (भोजपुरी गीत-संग्रह), 'सन्नाटा बोलता है' (काव्य-संग्रह), 'रखिए शब्द सहेज कर' (दोहा पंचशती) आ 'समय संवाद' (निबंध-संग्रह) विशेष रूप से उल्लेखनीय बाड़ी स। एह कृतियन में लोकजीवन के पीड़ा, सामाजिक विसंगतियन पर तीखा प्रहार, मानवीय संबंधन के ऊष्मा, सांस्कृतिक चेतना आ जीवन-दर्शन के गहन अनुभूति अत्यंत सहज आ प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्त भइल बा। एकरा अलावा उनकर भोजपुरी ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशनाधीन बा, जवना के साहित्य-जगत उत्सुकता से बाट जोहत बा।

गीतकार के रूप में डॉ० कमलेश राय के एगो विशिष्ट पहचान बा। उनका गीतन में लोकजीवन के सहजता, प्रकृति के रमणीयता, मानवीय संवेदनन के ऊष्मा आ सामाजिक सरोकार के अद्भुत समन्वय देखे के मिलेला। ऊ प्रकृति के बिंब, प्रतीक आ उपमान के माध्यम से समय के विसंगति, बदलत सामाजिक परिवेश आ मानवीय संबंधन के जटिलता के अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करेलें। उनका भाषा में लोक-माटी के सोंधापन बा, बाकिर ओहमें समकालीन जीवन-बोध आ वैचारिक परिपक्वता के भी समुचित समावेश बा। उनका गीत खाली गेयता के कारण लोकप्रिय नइखे, बल्कि अपना संवेदनात्मक गहराई, सामाजिक चेतना

आ कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण पाठक आ श्रोता के आत्ममंथन खातिर भी प्रेरित करेला। एही विशेषता के चलते ऊ समकालीन भोजपुरी गीतकारन के अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित बाड़ें।

डॉ० कमलेश राय के साहित्य खाली भावाभिव्यक्ति तक सीमित नइखे, बल्कि ओहमें समाज के प्रति उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण के आग्रह आ मानवीय मूल्यन के प्रति अटूट आस्था साफ-साफ दिखाई देला। ऊ अपना रचनन के माध्यम से लोकभाषा के साहित्यिक गरिमा देवे के साथे-साथ नयकी पीढ़ी के अपना मातृभाषा आ लोकसंस्कृति से जोड़े के लगातार प्रयास कइले बाड़ें। एगो साहित्यकार, संपादक, वक्ता आ संगठनकर्ता के रूप में उनकर बहुआयामी व्यक्तित्व भोजपुरी साहित्य-जगत खातिर प्रेरणा के स्रोत बा।

डॉ० कमलेश राय के साहित्यिक अवदान के मूल्यांकन खाली सम्मान आ पुरस्कार के आधार पर नइखे कइल जा सकत। समीक्षक आ साहित्य-मर्मज्ञन के नजर में उनकर रचनात्मक योगदान एह औपचारिक मान्यता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बा। तइयो उनकर दीर्घ साहित्यिक जीवन में मिलल सम्मानन के सूची अत्यंत समृद्ध आ गौरवपूर्ण बा। उनका के राम नगीना राय स्मृति सम्मान (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन), राहुल सांकृत्यायन सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ), एकेडमी सम्मान (हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज), आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान (विद्याश्री न्यास, वाराणसी), आचार्य महेंद्र शास्त्री पुरस्कार (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना), साहित्य श्री सम्मान (काठमांडू, नेपाल), विशिष्ट साहित्यकार सम्मान (रोटरी क्लब), काव्य किरीट सम्मान (माधव फाउंडेशन, वाराणसी), पं. श्याम नारायण पाण्डेय स्मृति सम्मान (नेफोर्ड), सेवक साहित्य श्री सम्मान (साहित्य संघ, वाराणसी), बाबा श्याम दास सम्मान (बी.एस.डी., रेवतीपुर, गाजीपुर), स्वामी विवेकानंद सम्मान (भारत विकास परिषद), सरयू शिरोमणि सम्मान (आजमगढ़), सरस्वती सम्मान (कवि लोक, गोरखपुर), पाती अक्षर सम्मान (विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई), प्रो. रामप्यारे तिवारी स्मृति सम्मान (पूर्वांचल साहित्य कला परिषद), सर्जना सम्मान (मेरिटार, बलिया) सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान से अलंकृत कइल जा चुकल बा। ई सम्मान खाली उनका साहित्यिक व्यक्तित्व के ना, बल्कि भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के प्रति उनका आजीवन समर्पण के भी साक्षी ह।

निस्संदेह डॉ० कमलेश राय खाली एगो साहित्यकार ना, बल्कि भोजपुरी भाषा के सशक्त प्रतिनिधि, लोकसंस्कृति के सजग प्रहरी आ सांस्कृतिक चेतना के संवाहक हउवें। उनकर संपूर्ण साहित्य भोजपुरी समाज के आत्मा, संघर्ष, संस्कार आ अस्मिता के प्रामाणिक स्वर बा। ऊ अपना लेखनी से ई सिद्ध कइले बाड़ें कि मातृभाषा के साहित्य भी राष्ट्रीय विमर्श के सशक्त आधार बन सकेला। उनका रचनन में लोकजीवन के अनुभव के साहित्यिक ऊँचाई देत समाज के संवेदनशील, संस्कारित आ जागरूक बनावे के काम होत बा।

डॉ० कमलेश राय के व्यक्तित्व आ कृतित्व के सम्यक् मूल्यांकन ई सिद्ध करेला कि ऊ भोजपुरी साहित्य के खाली उत्कृष्ट रचना नइखन देले, बल्कि संगठन, संपादन, सांस्कृतिक चेतना, भाषायी अस्मिता आ साहित्यिक संस्कारन के संरक्षण आ संवर्धन में भी उल्लेखनीय भूमिका निभवले बाड़ें। वर्तमान में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में ऊ भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार खातिर निरंतर सक्रिय बाड़ें। भोजपुरी साहित्य के इतिहास में उनका नाम एगो समर्पित साधक, समर्थ गीतकार, कुशल संगठनकर्ता, दूरदर्शी संपादक आ लोकचेतना के प्रखर हस्ताक्षर के रूप में सदैव आदर, श्रद्धा आ गौरव के साथे याद कइल जाई।

उनकर साहित्यिक साधना, भोजपुरी भाषा खातिर कइल गइल काम आ योगदान खातिर हम उनका के हार्दिक अभिनंदन करतानीं। ईश्वर से कामना करतानीं कि ऊ सदैव स्वस्थ रहस आ उनकर कलम हमेशा चलत रहे।

◆ ◆ ◆

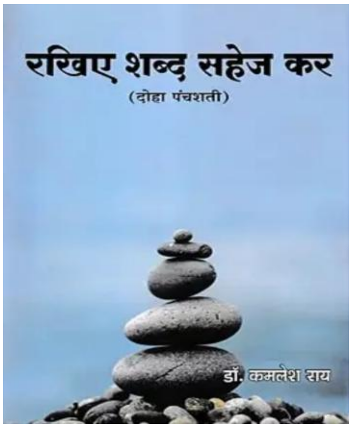

डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा

# 96 वसंत के बादो सक्रिय साहित्यकार : माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम'

नेपाल के बहुभाषी सांस्कृतिक परंपरा में अइसन बहुत साहित्यकार भइल बाड़ें, जे आपन मातृभाषा के साथे-साथे दोसरा लोकभाषा के भी समृद्ध करे खातिर बड़ महत्त्वपूर्ण काम कइले बाड़ें। अइसने साहित्यकारन में वरिष्ठ भोजपुरी आ नेपाली साहित्यकार माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के नाम आदर से लिहल जाला। ऊ आपन दीर्घ साहित्यिक जीवन में खाली नेपाली आ भोजपुरी भाषा में सृजन ना कइले, बाकिर शिक्षा, भाषा-संरक्षण आ साहित्यिक चेतना के प्रसार में भी उल्लेखनीय योगदान दिहलें। उनकर व्यक्तित्व शिक्षक, साहित्यकार, आयोजक आ भाषा-सेवी के सुंदर समन्वय प्रस्तुत करेला। नेपाल सरकार के "भोजपुरी भाषा आ संस्कृति" नाम के सामग्री में "माधव प्रसाद गौतम" के नाम नेपाल में प्रकाशित भोजपुरी किताबन के लेखकन के सूची में दर्ज बा। ऊ जीवन के 96 वसंत पार कइला के बादो साहित्य खातिर सक्रिय बाड़ें।

माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के जनम 11 अप्रैल 1934 के नेपाल के बारा जिला के पिपरा-बसतपुर में भइल। उनकर पिता श्री योगेन्द्र राज उपाध्याय 'गौतम' अपना क्षेत्र के विद्वान आ शिक्षाप्रेमी व्यक्ति रहलें। माता श्रीमती खोम कुमारी उपाध्याय रहलीं। परिवार के संस्कारपूर्ण वातावरण उनकर व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभवलस। आगे चल के इहो संस्कार उनकर साहित्य में लोकजीवन, सामाजिक चेतना आ मानवीय संवेदना के रूप में दिखाई दिहल आ साहित्य में भी दिखल।

उनकर शिक्षा के दिशा सुरुआत से ही गंभीर आ व्यापक रहल। ऊ साल 1956 में भारत के विश्व प्रसिद्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से मानविकी संकाय में स्नातक के उपाधि प्राप्त कइलें। ओह समय वाराणसी भारतीय ज्ञान, साहित्य आ संस्कृति के प्रमुख केंद्र रहल। काशी के साहित्यिक वातावरण उनकर रचनात्मक प्रतिभा के विकसित करे में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभवलस। विद्यार्थी जीवन में ही ऊ साहित्यिक गतिविधियन से जुड़ गइलें आ अपना साहित्यिक मित्रन के साथे मिल के लेखन करे लगलें।

एही काल में उनकर पहिला प्रकाशित कहानी 'ए गो वेश्या' एगो संयुक्त कहानी-संग्रह में प्रकाशित भइल। ई

उनकर साहित्यिक यात्रा के प्रारंभिक बाकिर महत्त्वपूर्ण पड़ाव रहल। एकरा बाद कहानी, कविता, लेख आ हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में उनकर लेखन लगातार आगे बढ़त गइल। बनारस से प्रकाशित 'युगवाणी-दीपक' जइसन पत्रिका में भी उनकर रचना प्रकाशित भइल। उनकर प्रारंभिक रचनन में हास्य आ व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियन के सामने ले आवे के प्रवृत्ति दिखाई देला।

माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के जीवन खाली साहित्य-सृजन ले सीमित ना रहल। ऊ शिक्षा के भी अपना जीवन के प्रमुख कर्मक्षेत्र बनवलें। अपना पिता द्वारा स्थापित जनता मिडिल स्कूल में ऊ प्रधानाध्यापक के रूप में काम कइलें। ओह समय नेपाली भाषा के विद्यार्थियन तक सरलता से पहुँचावल एगो चुनौती रहल। स्थानीय स्तर पर भोजपुरी आ हिंदी के प्रभाव के चलते विद्यार्थियन के नेपाली समझावे खातिर हिंदी के सहारा लेवे के पड़त रहे। एही व्यावहारिक जरूरत के ध्यान में रख के ऊ 'हिंदी-नेपाली शिक्षक' नाम के किताब लिखलें। ई प्रयास उनकर भाषाई समन्वय के दृष्टि के स्पष्ट करेला।

बाद में श्री सिद्धेश्वर संस्कृत विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में काम करत ऊ शिक्षा के साथे साहित्यिक चेतना के भी बढ़ावा दिहलें। ऊ विद्यार्थियन के खाली पाठ्यपुस्तक तक सीमित ना रखत रहलें, बाकिर लेख, कविता आ कहानी लिखे खातिर भी प्रेरित करत रहलें। उनका खातिर विद्यालय साहित्यिक प्रतिभा के विकसित करे के भी केंद्र रहल। एही काल में उनकर अनेक हास्य-व्यंग्य लेख अलग-अलग पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित भइल आ पाठकन के बीच चर्चित भइल।

उनकर रचनात्मकता के एगो महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकर हास्य-व्यंग्य लेखन बा। ऊ सामाजिक आ प्रशासनिक विसंगतियन, राजनीतिक विडंबनन तथा तत्कालीन जीवन के अनेक समस्या के हास्य के माध्यम से अभिव्यक्त कइलें। उनकर रचनन में खाली हँसी पैदा करे के उद्देश्य खाली ना रहे ।ऊ हास्य के भीतर सामाजिक टिप्पणी आ व्यंग्यात्मक चेतना भी निहित रहे। 'कवि जी की वीरगंज यात्रा' तथा 'तुलना कलेया से काठमांडू तक' जइसन रचना एही प्रवृत्ति के प्रतिनिधि मानल जालीं।

उनकर साहित्यिक जीवन नेपाल के सीमा तक सीमित ना रहल। ऊ नेपाल के अलग-अलग जिला में साहित्यिक आयोजनन के संचालन आ आयोजन में सक्रिय भूमिका निभवलें। वीरगंज में आयोजित साहित्यिक कवि-गोष्ठियन में ऊ कविता-पाठ कइलें। भारत के पश्चिमी चंपारण के हरिनगर आ बगहा जइसन क्षेत्रन में भी उनका भोजपुरी कविता-पाठ के अवसर मिलल। उहाँ भोजपुरी में कविता-पाठ खातिर उनका उत्कृष्ट कवि के रूप में सम्मानित कइल गइल। ई उनकर साहित्यिक संबंधन के व्यापकता आ भोजपुरी भाषा के प्रति उनकर समर्पण के प्रमाण बा।

उनकर जीवन के एगो अउरी महत्त्वपूर्ण अध्याय नेपाल सरकार के पर्यटन विकास समिति से जुड़ल बा। लोक सेवा आयोग के परीक्षा उत्तीर्ण कइला के बाद ऊ टूरिस्ट रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम कइलें। विदेशी पर्यटकन से संपर्क आ नेपाल के सांस्कृतिक विविधता के नजदीक से देखे के अवसर से उनकर अनुभव-संसार अउरी व्यापक भइल। नौकरी के साथे-साथे उनकर साहित्यिक लेखन भी जारी रहल।

एह अवधि में उनकर रचना 'समीक्षा' साप्ताहिक समेत अलग-अलग पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित होत रहल। खास तौर पर गाई जात्रा के अवसर पर लिखल उनकर हास्य-व्यंग्य पाठकन के बीच लोकप्रिय भइल। 'मंत्री बनाने वाला ट्रेनिंग सेंटर' जइसन रचना उनकर व्यंग्य-बोध के उदाहरण बा। एही क्रम में उनकर रचना 'जीर्ण रोग', 'सोर्स फोर्स' आ 'सुदामा का पुनर्जन्म' भी प्रकाशित भइल। 'जीर्ण रोग' पत्रिका 'कलाकार' में, 'सोर्स फोर्स' 'रूपरेखा' पत्रिका में तथा 'सुदामा का पुनर्जन्म' सप्तरी के राजविराज से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'त्रियुगा' में प्रकाशित भइल।

माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के साहित्यिक पहचान के सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकर भोजपुरी के प्रति अनुराग बा। नेपाल में भोजपुरी खाली बोलचाल के भाषा ही ना बाकिर एगो समृद्ध लोक-सांस्कृतिक परंपरा के वाहक बा। ऊ एह भाषा के साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम बनावे के प्रयास कइलें। उनकर रचनन में भोजपुरी के सहजता, लोकधर्मी शब्दावली आ जनजीवन के आत्मीयता दिखाई देला।

उनकर भोजपुरी कृति 'झूठ-साँच' खास उल्लेखनीय बा। ई उनकर एकमात्र प्रकाशित किताब के रूप में सामने आवेला, जेकरा उनकर बेटी नीता गौतम के प्रयास से प्रकाशित कइल गइल। ई तथ्य खास तौर पर उल्लेखनीय बा कि ऊ भोजपुरी कविता के अनेक पांडुलिपि तइयार कइलें, बाकिर ऊ प्रकाशित ना हो सकल। ऊ भोजपुरी के शब्दकोश तइयार करे के भी प्रयास कइले रहलें, बाकिर परिस्थिति के चलते ई काम पूरा ना हो सकल। एहसे उनकर भीतर भोजपुरी भाषा के प्रति मौजूद गहिर लगाव आ भाषा-संरक्षण के चेतना के पता चलेला।

कवनो साहित्यकार के मूल्यांकन खाली ओकर प्रकाशित किताबन के संख्या से ना कइल जा सकेला। कई बेर साहित्यकार के अप्रकाशित पांडुलिपि, ओकर अध्यापन के काम, साहित्यिक आयोजनन में ओकर सक्रियता आ भाषा के प्रति ओकर प्रतिबद्धता भी ओकर साहित्यिक व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण हिस्सा होला। एह दृष्टि से माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के योगदान व्यापक दिखाई देला। ऊ लेखन के साथे-साथे साहित्यिक वातावरण के निर्माण में भी भूमिका निभवलें।

उनकर साहित्य में भाषाई समन्वय खास तौर पर उल्लेखनीय बा। नेपाली उनकर प्रमुख साहित्यिक भाषा में रहल, जबकि भोजपुरी उनकर लोकजीवन आ सांस्कृतिक अनुभव के भाषा रहल। हिंदी से भी उनकर गहिर संबंध रहल। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कइला आ हिंदी के माध्यम से नेपाली भाषा के शिक्षण के प्रयास कइला के कारण उनकर साहित्यिक व्यक्तित्व तीन भाषाई संसारन के बीच संवाद स्थापित करत दिखाई देला।

उनकर ई भाषाई दृष्टिकोण आज के संदर्भ में अउरी महत्त्वपूर्ण हो जाला। भाषा खाली संप्रेषण के साधन ना होला; ऊ कवनो समाज के स्मृति, संस्कृति, परंपरा आ सामूहिक चेतना के सुरक्षित रखेला। माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' अपना स्तर पर भोजपुरी आ नेपाली के बीच जे संवाद कायम कइलें, ऊ नेपाल के बहुभाषी समाज के सांस्कृतिक एकता के समझे में सहायक बा।

उनकर साहित्यिक यात्रा में लोकजीवन आ सामाजिक यथार्थ के महत्त्वपूर्ण स्थान बा। हास्य-व्यंग्य के माध्यम से ऊ समाज के विसंगतियन के पहचानेलें आ ओकरा पाठकन के सामने रखेलें। उनकर व्यंग्य में आक्रोश के बदले सहज विनोद के सहारा अधिक दिखाई देला। एही कारण उनकर रचना मनोरंजन के साथे-साथे सामाजिक चेतना भी पैदा करेला।

उनकर साहित्यिक व्यक्तित्व खाली लेखक के ना ई एगो अइसन शिक्षक के भी बा जे अपना विद्यार्थियन में भाषा आ साहित्य के प्रति रुचि जगावे के प्रयास कइलें। प्रधानाध्यापक के रूप में उनकर काम शिक्षा के सामान्य दायरा से आगे बढ़ के साहित्यिक संस्कार देवे के भी रहल। ऊ विद्यार्थियन के लेखन खातिर प्रेरित कइलें आ विद्यालयन में साहित्यिक गतिविधियन के स्थान दिहलें। एह तरह से उनकर अध्यापन भी उनकर साहित्य-साधना के ही विस्तार रहल।

साहित्यिक आ सामाजिक योगदान खातिर उनका अलग-अलग संस्था द्वारा सम्मानित कइल गइल। देवकोटा स्मृति सभा, कलेया द्वारा नेपाली साहित्य के उत्थान तथा स्मृति सभा के स्थापना में उनकर योगदान खातिर प्रशंसा-पत्र दिहल गइल। मोहन विक्रम (रामराजा) बहुमुखी कैंपस के संस्थापक सदस्य के रूप में उनकर सहयोग खातिर उनका अभिनंदन-पत्र मिलल। साल 2074 वि.सं. में वीरगंज साहित्य के ओर से भोजपुरी साहित्य के उत्थान, प्रचार-प्रसार तथा उत्कृष्ट भोजपुरी लेखन आ वाचन खातिर उनका प्रशंसा-पत्र दिहल गइल। एकरा अलावा नेपाल भोजपुरी फाउंडेशन, फेटा-3, बारा तथा भोजपुरी साहित्य विकास मंच द्वारा भी उनका अभिनंदन-पत्र दिहल गइल।

एह सम्मानन के खाली व्यक्तिगत उपलब्धि के रूप में देखल पर्याप्त ना होई। एह सम्मानन के पीछे उनकर लंबा साहित्यिक आ सामाजिक योगदान के स्वीकृति निहित बा। खास तौर पर भोजपुरी साहित्य खातिर मिलल सम्मान ई प्रमाणित करेला कि नेपाल में भोजपुरी भाषा के साहित्यिक विकास के क्षेत्र में उनकर योगदान के साहित्यिक समुदाय महत्त्व दिहलस।

माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के जीवन हमनी के ई भी सिखावेला कि साहित्य-साधना खाली किताबन के प्रकाशन से निर्धारित ना होला। साहित्यकार के वास्तविक योगदान ओकर समय, समाज आ भाषा के साथे ओकर संबंध से भी निर्धारित होला। ऊ सीमित

संसाधनन के बीच लेखन कइलें, अध्यापन कइलें, साहित्यिक आयोजनन में भाग लिहलें, विद्यार्थियन के साहित्य खातिर प्रेरित कइलें आ भोजपुरी भाषा खातिर शब्दकोश तैयार करे जइसन महत्त्वाकांक्षी प्रयास कइलें। उनकर अनेक पांडुलिपि भले प्रकाशित ना हो सकलीं, बाकिर उनकर प्रयास खुद साहित्यिक इतिहास के महत्त्वपूर्ण हिस्सा बा। अप्रकाशित पांडुलिपियन पर आ उनकर जीवनी पर नेपाल के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गोपाल अश्क काम कर रहल बाड़ें। आशा कइल जानी कि ई सामग्री जल्दी ही पाठकन तक पहुँची।

आज जब भाषन के अस्तित्व आ ओकर संरक्षण के सवाल गंभीर होत जा रहल बा, तब माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' जइसन साहित्यकारन के काम के नया दृष्टिकोण से देखे के जरूरत बा। ऊ अपना समय में भोजपुरी आ नेपाली के बीच जे सांस्कृतिक संवाद स्थापित कइलें, ऊ वर्तमान पीढ़ी खातिर प्रेरणादायी बा। उनकर साहित्यिक यात्रा ई संदेश देला कि कवनो भाषा के समृद्धि खाली बड़ा प्रकाशनन आ संस्थागत समर्थन से ना, बलुक ओह लोगन के व्यक्तिगत निष्ठा से भी होला जे विपरीत परिस्थिति में ओकरा खातिर लिखेला आ काम करेला।

माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के व्यक्तित्व एही साहित्यिक निष्ठा के परिचायक बा। ऊ नेपाली साहित्य में लेखन कइलें, भोजपुरी के अपना रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम बनवलें आ हिंदी के माध्यम से भाषाई शिक्षण के उपयोगी पहल कइलें। एगो शिक्षक के रूप में ज्ञान बटलें, साहित्यकार के रूप में समाज के देखलें, व्यंग्यकार के रूप में विसंगतियन पर प्रहार कइलें आ भाषा-सेवी के रूप में भोजपुरी के संरक्षण आ विकास के प्रयास कइलें।

अंततः कहल जा सकेला कि माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' नेपाली आ भोजपुरी साहित्य के बीच एगो महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक सेतु हउवें। उनकर साहित्यिक अवदान भले प्रकाशित किताबन के संख्या से बहुत बड़ ना दिखाई दे, बाकिर उनकर जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य उनकर योगदान के गंभीरता के स्पष्ट करेला। उनकर रचना, अध्यापन-कार्य, साहित्यिक सक्रियता, भाषा के प्रति प्रतिबद्धता आ भोजपुरी खातिर कइल गइल प्रयास उनका विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व प्रदान करेला।

उनकर जीवन आ कृतित्व आवे वाली पीढ़ियन खातिर एह बात के प्रेरणा बा कि भाषा के सेवा खाली प्रसिद्धि पावे खातिर ना, बलुक अपना सांस्कृतिक जड़ के जीवित राखे खातिर कइल जाला। भोजपुरी आ नेपाली साहित्य के इतिहास में माधव प्रसाद उपाध्याय 'गौतम' के नाम एही समर्पण, संघर्ष आ भाषाई चेतना खातिर आदरपूर्वक याद कइल जाए के चाहीं।

◆ ◆ ◆

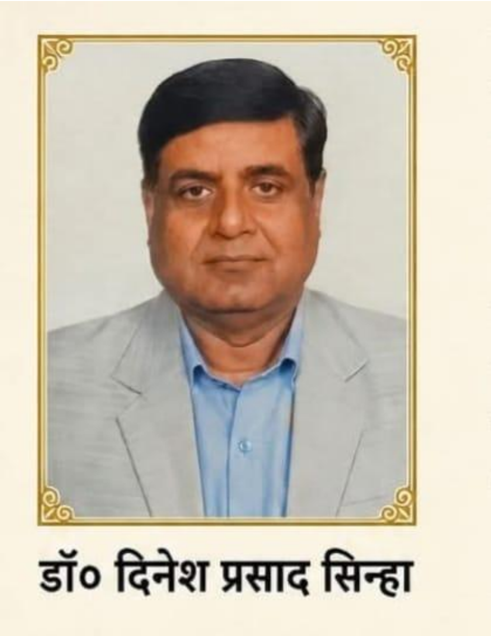


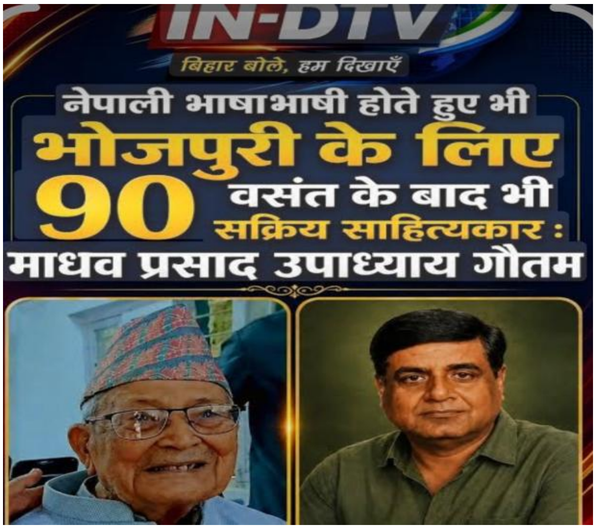

# ओझाई

दुअरिया भींजल, अँखिया भरि आई,
का-का देखनी गाँव के ओझाई।
रोवत बुआ, जागत रहली दाई,
गाँव में अइसन होत रहल ओझाई।

बबुआ तपत रहे, देहिया जरत रहे,
माई के अँखियन से लोर बहत रहे।
कउनो कहे नजर बा, कउनो कहे बुराई,
एहिजे से शुरू भइल सगरी दुखाई।

लोग कहे, "देर मत करऽ, मोरे भाई।"
बाबूजी ले अइलें तब ओझा बोलाई।
दुअरा पर जुट गइल सजी गाँव जवराई
जुमला सरजान ओझा के चालू ओझाई ।

नीम के डार, राख, गमछा, सियाही,
मंतर फूँकत बइठल गाँव के अगुआई।
फूँक-फाँक, टोटका, नेहुओ मिलाई,
रात अँधेरिया में शुरू भइल ओझाई।

नीमिया के पतई से होत रहे झराई,
धूनी में जरत रहे लोबान-मिरचाई।
धुँई से लाल मुँह, अँखिया गइल लोराई,
घंटन ले चलत रहल असहीं ओझाई।

कउनो कहे भूत-प्रेत भइल असवार बा,
मानर के थाप, चारू ओर गुंजार बा।
काँपत रहे देह, बोलत रहे परछाईं,
रात भर होत रहल असहीं ओझाई।

भोर भइल त चउरा पर मनौती चढ़ाई,
नारियल, चुनरी, सब देवी पर चढ़ाई।
जोड़ल हथवा, सबै माँगे भलाई,
भींजल अँखियन में बसल आस समाई।

दू-चार दिन बाद बैद जी बोला गइलें,
नाड़ी शोध के दवाई-दारू शुरू कइलें।
लाहे-लाहे लवट गइल देह के लुनाई,
रहल ऊ बेमारी, काम कइलस दवाई।

रीत पुरान, लोक के गहराई,
सुख-दुख संग गाँव के सच्चाई।
जे देखनी, से लिखनी, ना कवनो बड़ाई -
का-का देखनी गाँव के ओझाई।

◆ ◆ ◆

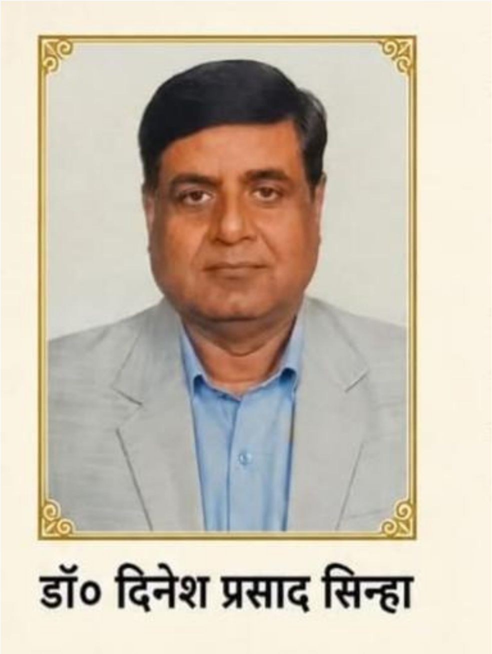

# कनक किशोर के चार गो कविता

## 1. इहो सांच ह

रोज ना पैदा होले
कबीर
कबीर वाणी जिंदा रहेला
लोक में

रोज ना पैदा होले
गान्ही बाबा
गान्ही के सत्य के राहि
देर - सबेर जीतेला

रोज ना पैदा होले
भिखारी ठाकुर
बता गइले उहे बांची
जे नाची

राजा जी के ना भावे
सत्य के राहि
ना कबीर वाणी
नाचबो ना करस,
नचावले अंगुरी पर
अत राजो के ना चले
ढेर दिन
इहो सांच ह।

◆ ◆ ◆

## 2 भूख

ओस चटला से
भूख ना भागी

भूख ओस ना ह
कि धूप देखते
उड़ जाई

भूख बीज ह
संघर्ष के
विद्रोह के
जननी ह
जन आंदोलन के

धुआँत आँत से उठत
भूख जरा दी
सोना के लंका
पोषित सत्ता के
सत्तावान के।

◆ ◆ ◆

## 3 बदलल गाँव के रंग आ रंगत

गाँव
हमार गाँव
ओहिजे बा, जहाँ रहे
ओइसन नइखे, जइसन रहे,
गाँव, घर, बधार
सब बदलल - बदलल

गोतिया - दयाद
सब बदलल - बदलल

प्रीत बदलल, रीत बदलल
गँवई जीवन के गति बदलल
माटी ना रहल, जे रहे
ना रहल मनई ऊ अब, जे रहे
आ बइठल बाजार गाँव में
सहर के जहर मनभावन,
खेत में चिमनी धुआँ उगले
खोजीं कहाँ हरियरी सुहावन,

रिसता झुलस रहल बा आजु
केहू ना बइठे आजु - बाजु
सहर आ घुसल गाँव आज कि
गाँव जा बइठल सहर के बाजु?
पलायन नियति बनि डंसलस
विकास हाथ के रोटी छीनलस
राजा जी के थोपल सपना
खेतवन के कारपोरेट संउपलस,

बिया, बाल सब मोल किनाये
दूध - दही घरे नजर ना आवे
डीजे धुन पर नाचे बहुरिया
ससुर जी संग में रील बनावे,
ना कहीं चौपाल, ना कहीं पंगत
देखि गाँव के ई रंग आ रंगत
कनक कबीर मन में ई उपजल
कबीर के थाती गाँवन में थउसल।

◆ ◆ ◆

## 4 बाबूजी

बाबूजी
कल्पवृक्ष
माई के आंचर
स्वर्ग

भगवान के
साक्षात् रूप
माई - बाबू

अपने आंगन में
बइठल बाड़े
आजु उदास
पूजा के आभाव में ना,

घर - परिवार रहते
घरे पसिरल
अकेलापन से
सून आँगन देखि के।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची, झारखंड

# हरिना

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

जहाँ सीताजी के अपहरण में हरिना के बड़ भूमिका रहल, ओहिजे दुष्यन्त के शकुन्तला से मिलाहूँ में मृगे के देन रहल।सीतावाला मायामृग रहल त दुष्यन्तवाला असली।सत्य से छल ना जुड़े आ ना छल से सत्ये।एही से छलित जानकी के जीवन में वियोग के साथे राक्षस-राक्षसियन के बीच लंकावास मिलल त दुष्यन्त-शकुन्तला के संयोग-सुख।

वस्तुतः ई बात जसही हरिना प लिखे चललीं, तसही हमरा इयाद पर गइल।एह सुन्दर पशु से जुड़ल ना जाने अउर कतना कथा-कहानी बाड़ी सँ! बाकिर; कथा-कहानी त कहेके नइखे।एहिजा त मात्र हरिना के कुछ खास शाब्दिक विशेषतन के रखेके बा।त चलीं; विषय प रहल जाउ।

हँ त; ई एगो जंगली जानवरे हा।ई बुला बकरिये के जाति के हा।तबो; एकर अनेक रूपो होलें। एसे भेदोपभेदो बतावल-देखावल गइल बाड़ें।'अमरकोश' पलटीं त ओकरा दूसरा कांड में एगो 'सिंहादिवर्ग' बा।एह वर्ग में जंगल में जवन-जवन पशु-पक्षी पावल जालें, लगभग सभे संगृहीत बाड़ें।लगभग एसे जे ई अपना समय के, अर्थात् चौथी सदी के अनुपम भारतीय आकर ग्रन्थ हा।भारतीय कहला के मतलब ई जे हमनी किहाँ जे-जे वन्य जीव प्रचलित रहल, उनुकर पर्याय के साथ संकलन कके ग्रन्थकार हमनी के बहुमूल्य धरोहर सँउपले बाड़ें।

खैर; पहिले हमनीका हरिना के पर्याय प आईंजा।त; अनेक कोशन के देखला प समानार्थी शब्दन में ई मिलताड़ें-- मृग, कुरंग, कुरंगम, वातायु, हरिण अजिनयोनि, सारंग, चलन, पृषत्, भीरुहृदय, मयु, चारुलोचन, जिनयोनि, ऋष्य, ऋश्य, रिष्य, रिश्य, एण, एणक, कृष्णतार, सुलोचन, वातप्रमी आ वातमृग।

अब शब्दन प ध्यान दिहल जाउ।त; पहिला प्रश्न जे हरिना के मृग नाम काहें परल? त; एकर उत्तर एही शब्दे में बा।ई संस्कृत के 'मृग्--अन्वेषणे' धातु से बनल बा, जेकर अर्थ खोजल आ शिकार कइल हा।एह अर्थो में अन्तरे लउकता।अन्वेषण तक त ठीक बा, बाकिर खोजल आ शिकार कइल मेल नइखे खाता।एही से विद्वान लोग अपना मोताबिक व्युत्पत्तियो बना लेलें।एक के अनुसार— 'मृगयते अन्वेषयति तृणादिकं मृग्यते वा' त दोसरा मत से— 'मृग्यते व्याधैः'। मतलब; पहिली व्युत्पत्ति ई बतावतिया जे घास खोजे ऊ मृग ह त

दोसरकी बतावतिया जे शिकारी जेकरा के खोजे, ऊ मृग हा।घास त गाइ-भँइस आदि कतने जानवर खोजेलें, चरेलें।बाकिर; ई शब्द हरिने खातिर रूढ़ बा।बेचारा शुद्ध शाकाहारी हा।जंगल में रहेला, घूमेला, चरेला आ जीयेला।बाकिर; ई नू शाकाहारी ह, लोगवा ना नू! शेर, चीता आदि ना नू! जेकरा मुँहे एकर मांस लागल, ऊ एकर जान ना नू छोड़े! एही से एपर दोहरी मार परेले।एक ओर मांसाहारी जंगली जीव जीअल सिहनी करेलें त दोसरा ओर मांस-लोलुप मानव।

मानवो में दू भेद हो जाला।एगो शिकार के शौकीन त दोसर मांस-विक्रेता बहेलिया।एही से व्याधा के नाम मृगयु, मृगजीवन आ मृगवधाजीव परल।माने ई जे ऊ मृग के मारिके भा जाल में फँसाके ले आवेला आ ओकरा के खड़े भा ओकर मांस, चमड़ा आदि बेचिके जीविका चलावेला।शायद; शौकिया, माने कामज व्यसन में रत लोगन खातिर, विशेषकर राजा आदि खातिर आखेट-प्रवृत्ति के चलते मृगया बनल।अइसे त एकर व्युत्पत्ति-मूलक अर्थ बतावता जे उनुका खोजे में खाली मृगे ना अउरो पशु होलें— 'मृग्यन्ते पशवः अस्याम् इति'।बाकिर; लागता जे प्राथमिकते एकरे रहलि।ई आखेटो आसुरी वृत्तिये हा।काहें कि जब व्यक्ति के चित्त में कठोरता आ दयाशून्यता आई, तबे नू निर्दोष जीवन के मारी! व्यर्थ पशुहिंसा शास्त्रो में वर्जित बा (भागवत:4.26)।

अब कुरंग प विचार कइल जाउ।त; एकर व्युत्पत्ति-मूलक अर्थ बा, जे पृथ्वी प विचरण करे—'कौ पृथिव्यां रंगति गच्छति इति'(कु + रगि—गतौ (धातु) + अच् (अ) प्रत्यय)।बाकिर; एसे हरिना के कवनो विशेष गुण परिभाषित नइखे होत।एसे त बस; एकर सचरता प्रकटित होतिया।कुरंगम (कौ पृथिव्यां रंगं मिमीते—कु + रंग + मा—माने शब्दे च + ड (अ) प्रत्यय) भी कुरंगे नियन बा।हँ; वातायु (वातम् अयते इति—वात + अय्—गतौ + उण् (उ) प्रत्यय), वातप्रमी (वातं प्रमिमीते वाताभिमुखं गच्छतीति—वात + प्र (उपसर्ग) + मा (नापल, शब्द कइल धातु) ई प्रत्यय) आ वातमृग (वाताभिमुखगामी मृगः) से पता चलता जे ई खूब कूदे-फानेला, छलांग लगावेला आ जेने के हवा रहेला, ओने भागेला भा जाला।सबसे बढ़िके नाम बा हरिण।बढ़िके एसे जे ई हिन्दी में अपना तद्भव रूप के साथे खूब प्रयुक्त बा आ भोजपुरियो में।हिन्दी में हिरन त भोजपुरी में हरिना।

हरिण प विचार कइल जाउ त एकर दू व्युत्पत्ति आइल बाड़ी सँ— 1.'हरति मनः' आ 2.'ह्रियते गीतेन वा'।ई शब्द 'हृ' धातु आ 'इनच्' (इन) प्रत्यय के योग से बनल बा।मतलब; जे अपना सुघरई से मन मोह लेबे आ जे गीत सुनिके मुग्ध हो जाउ।ई गीत सुनिके चरलो भूलि जाला, अइसन बात महाकवि माघो कहताड़ें—

"विगत-सस्य- जिघत्समघट्टयत्

कमल-गोपवधूः न मृगव्रजम्।

श्रुततदीरित- कोमल- गीतकं

ध्वनिमिषेऽ निमिषेक्षणमग्रतः"।।

अर्थात्; कुआर के महीना बा।मेहरारू धान के रखवारी करताड़ी सँ आ जोर-जोर से गीतो गावताड़ी सँ।सामनही धान चरे आइल हरिना खाड़ा बाड़े सँ।ना त ऊ ग्वालिने ओहनिन के भगावताड़ी सँ आ ना हरिने चरताड़े सँ।कारन कि मेहरारू गावे में मगन बाड़ी सँ त हरिना सुने में मगन बाड़ें सँ।

सम्भवतः पहिले वस्त्र के उत्पादन कम होत रहे आ जंगल के अधिकता से पेशेवर शिकारी लोग अनेक पशुअन के मारिके मांस आ चर्म आदि बेचत रहन।बकरा, हरिना, बाघ, सिंह, हाथी के खाल के लोग पहिरे, ओढ़े आ बिछावे के काम में लेत रहन।ओही चमड़ा के अजिन कहात रहल।चूँकि; जंगली जीवन में सबसे सहज हरिना के शिकार कइल रहल, एसे ओकर हत्या ढेर होत रहलि।एही से ओकर एगो नाम अजिनयोनि परल।कुछ लोग के अनुसार काला मृगछाला के ई नाम हात; इहो हो सकेला जे ऊ बहुते सुन्दर लागत होखे।युगानुसार धर्मो में परिवर्तन होत रहेला।एही से प्राचीनकाल में ई आसन आ परिधान के रूप में पवित्र मानल जात रहे।एही से पहिले ब्रह्मचारी आदि धारण करत रहन।परन्तु; अब विविध प्रकार के वस्त्र आ आसन के उत्पाद बढ़ल बा, साथ ही वन्य प्राणियन के शिकार प्रतिबन्धित बा, एसे अजिन के प्रयोग वर्जित बा।

'अमर' कोश कहता—

"चातके हरिणे पुंसि सारंगः शबले त्रिषु"।(नानार्थवर्ग, गान्त 23)

[10/9, 12:46 pm] मारकण्डेय शारदेय: 'मेदिनी कोश कहता—

"सारंगः पुंसि हरिणे चातके च मतंगजे।

शबले त्रिषु हेमांगो गरुडे परमेष्ठिनि।।"(गान्तवर्ग, गत्रिक 50-51)

मतलब; सारंग नानार्थक ह जेकर अर्थ पपीहा, हरिण, चितकाबर, हाथी, हेमांग, गरुड आ ब्रह्मा होला।हमरा समझ में चितकाबर हरिणे एहिजा विशेषार्थ बा।

पता ना; चलन से मृगबोध कइसे ग्रहण कइल गइल! काहें कि चले से एह शब्द के जुड़ाव बा। चले, एसे चलन।एही तरे मयु नाम बा, जे 'मय गतौ' धातु से बनल बा।ई अलग बात बा जे कुछ विद्वान 'मिनोति सुन्दर-शब्दं करोति'; यानी सुन्दर शब्द कइला से एह शब्द के उत्पत्ति मानताड़ें।

पृषत शब्द के बारे में 'अमरकोश' बारहसिंगा के वर्ग में रखले बा।अइसन बुझाता जे जवना बारहसिंगा हरिना के ऊपर सफेद-सफेद बूँद के छींटा अस बनल होखे, उहे पृषत ह।हरिना के भीरुहृदय भइल आश्चर्य के बात नइखे।कारण कि सबसे ओकरा डर लागेला।आखिर; ऊ केकरा प विश्वास करो! शुरुए से बाघ, शेर, हुँड़ार से लेके आदिमयो सतावत आइल बा।कब के झपट परी, कहाँ से तीर लागी आ ओकर जीवनलीला समाप्त क दी; कहल मुश्किल बा।एही से ऊ चकित दृष्टि से तिकवत रहेला।चारुलोचन भा सुलोचन; ई दूनो हरिना के पर्याय ओकर आँखि के सुघरई आ चकित चितवन के कारण बाड़ें।एही से सुन्दर आँखिवाली के कवि लोग मृगनयना भा मृगनयनी कहेलें! 'भोजप्रबन्ध' के एगो श्लोक देखल जाउ, जेमें मृगलोचना में कतना आकर्षण बतावल गइल बा—

"कवित्वं न शृणोत्येव कृपणः कीर्ति-वर्जितः।

नपुंसकः किं कुरुते पुरःस्थित-मृगीदृशा"।।(130)

अर्थात्; सामने उपस्थित रससिद्ध कवि से कविता यशोहीन कंजूस एसे ना सुने जे कुछ पारितोषिक देबे के परी।एही तरे नपुंसक के सामने मृगनयनी के उपस्थितियो बेकारे होले।

तुलसीदास के सीतो मृगनैनिये रही।तबे त जानकी के बने-बन खोजत रामजी पूछताड़ें-

"हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।तुम्ह देखी सीता मृगनैनी"।।(मानस: 3.29.9)

अजिनयोनि के अर्थ त स्पष्ट हो चुकल बा।बाकिर; अजिनयोनि के उलुटा जिनयोनि काहें एकर नाम परल स्पष्ट; नइखे होता।जिन के अर्थ बुद्ध आ विष्णु बतावल गइल बा।ई लोग दिव्यात्मा रहन।तन, मन आ इन्द्रियन के साथे समस्त जीवात्मा प विजय पावल सम्भव रहल।बाकिर; ई हरिना एमें कहाँ से आ गइल! एकरा में कवन शक्ति बिया! तबो कोशकार मनले बाड़ें त मानही के नू परी! कहल गइल बा— "अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः"।अर्थात्; महान व्यक्ति विधिवत् पत्थरो स्थापित क देला त ऊ देवमय हो जाला।

अब ऋष्य, ऋश्य, रिष्य आ रिश्य; एह चार शब्दन प ध्यान दियाउ।त; ई चारो एके बुझाताड़ें। 'ऋ--र' आ 'श--ष' में खाली ध्वन्यात्मक अन्तर बा।तबो; कमे लोग सही उच्चारण क पावेलें। तबो; ऋश्य 'ऋश् गतिस्मृत्योः' धातु में 'क्यप्' (य) प्रत्यय के योग से त ऋष्य 'ऋष् गतौ' धातु में 'यत्' (य) प्रत्यय लगला से बनल बा।सम्भवतः दूनो में गतिये के ग्रहण कइल बा। तबो; हमरा समझ से ऋष्य ऋषि-सम्बन्धी ह।काहेंकि; वैदिको काल में अउर लोग सूती-रेशमी वस्त्रन के उपयोग करत रहन, बाकिर ऋषि लोग मृगचर्मे के अजिन के अधिक उपयोग करत रहन।हँ; इहो सम्भव बा जे 'ऋ--गतौ' धातु से ई बनल होखे। काहेंकि; 'अमरकोश' के 'रामाश्रमी' टीका में 'ऋ' धातु आ 'श्यन्' प्रत्यय देखावल बा।एही से बनल ऋश्य के वैकल्पिक रूप ऋष्य बतावल बा।ई चौसिंगा हरिना खातिर आइल बा।

'रिष' धातु हिंसार्थक ह।मतलब; जे मारे योग्य पशु ह, ऊ रिष्य भा रिश्य ह।'शब्दरत्नावली' चारो में ऐक्य देखत कहतिया—

"ऋष्य ऋश्यो रिश्यो रिष्य एणः स्यात् एणकोऽपि च"।

अब आगे आइल एण आ एणक के देखल जाउ त इहो दूनो एके हवें।संस्कृत में स्वार्थ में, मतलब आवश्यकता प 'क' (कन् प्रत्यय) जोड़ दियाला (स्वार्थे कन्)।जइसे बाल- बालक, घोट-घोटक।ओसही एण-एणक बा।ई 'इ गतौ' धातु से बनल बा— 'एति द्रुतं गच्छति इति'।मतलब; जे जल्दी जाए। हरिणा के दउर प्रसिद्धे ह।एही से एकर नाम वातप्रमी आ वातमृगो ह।मतलब;

हवा नियन दउरेवाला।अमरसिंह ऐणेय आ एण्य कहिके करिया हिरना के चाम आदि बतावताड़ें— “ऐणेयम् एण्याः चर्माद्यम्”।काहेंकि; टीकाकार बतवले बाड़ें।

अब कृष्णतार प ध्यान दियाउ त ई अइसन हरिना के द्योतक बा, जेकरा शरीर प छोट-छोट करिया-करिया बुनुका बा।उहे तारा के बोधक बा।।

अमरसिंह अलग-अलग मृगभेदो बतावत कहताड़ें—

“कदली कन्दली चीनः चमूरु-प्रियकौ अपि।

समूरुः चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः”।।

कदली, कन्दली, चीन, चमूरु, प्रियक आ समूरु; ई छवगो भेद अइसन हरिना के ह, जेकर चमड़ा के अजिन बढ़िया होला।एकरा अलावे कृष्णसार, रुरु, न्यंकु, रंकु, शम्बर, रौहिष, गोकर्ण, पृषत, एण, ऋश्य, रोहित आ चमर; ई लाल बारहसिंग के भेद बतवले बाड़ें।

चूँकि हरिनियो स्तनधारिये होले आ बकरिये के जाति के हिय, एसे एकर दूध बकरी के दूध लेखा लाभकारी बतावल गइल बा— ‘मृगीणां जांगलोत्थानाम् अजाक्षीर-गुणं पयः’।

◆ ◆ ◆

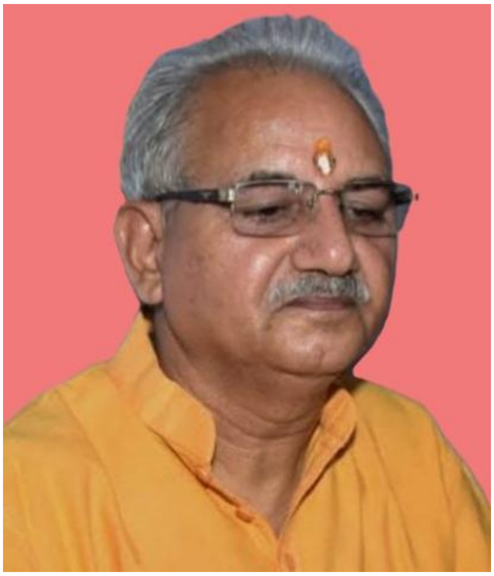

**मार्कण्डेय शारदेय**
**पटना**

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

# कइसे कहब?

ढंग ना रोवे के आइल तब गजल कइसे कहब?
पीर से ना मन पिराइल तब गजल कइसे कहब?

मीत दुश्मन यार रिश्तेदार कुचरा मतलबी
आज ले जब ना चिन्हाइल तब गजल कइसे कहब?

कर्ज में डूबल किसानी दह गइल कुछ सुख गइल
आह ना उपजल, लिखाइल तब गजल कइसे कहब?

रोग ना डाक्टर बतावे जोतिषी ना ग्रह दशा
जानि तन ना कँपकँपाइल तब गजल कइसे कहब?

चान के जोन्ही चिढ़ावे मूढ़ बादर सूर्य के
देखि - सुन के मुँह फेराइल तब गजल कइसे कहब?

हाथ में लिहले कटोरा बेबसी में द्वार पर
आ गइल, कुछ ना दियाइल तब गजल कइसे कहब?

नीति में दुर्नीति लिख राजा खजाना लूटि ले
शोर ना कतहीं सुनाइल तब गजल कइसे कहब?

गाँव माटी देश थाती जोगि के राखे घरी
नाँव ना आगे लिखाइल तब गजल कइसे कहब?

बहि रहल 'संगीत' के दरिया जमाना मस्त बा
ताल सुर लय ना बुझाइल तब गजल कइसे कहब?

✍ संगीत सुभाष

# ना आधा रहे

इजहार ना आधा रहे, इकरार ना आधा रहे।
आधा अधूरा में कहीं ई प्यार ना आधा रहे।

मन से निभाईं दोस्ती, मन से निभाईं दुश्मनी
गलबाँहि ना ढीला परे तकरार ना आधा रहे।

आगत के बोलीं स्वागतम् जे जात उनके शुभ विदा
सत्कार सेवा - भावना बेवहार ना आधा रहे।

कौनो सभा में हाजिरी मन से दिहीं पूरा दिहीं
मनहूसियत बड़ रोग ह किरदार ना आधा रहे।

धारा बदलि दी रास्ता नइया किनारा पा लिही
दरकार बा मल्लाह आ पतवार ना आधा रहे।

मालिक अगर दू आँख से देखी त घर फुटबे करी
जनता भले आधा रहे सरकार ना आधा रहे।

कुकुहार कौना काम के जब शांति बा 'संगीत' में
सुर तान के मृदुगान के संसार ना आधा रहे।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष

# दोहा

रोजे मुरुगा बांग दे, अनसुन कइले कान।
मकरचाननी  राति में, चलले नदी नहान।

मजनूँ लब से मध चुअल, लैला नैन शराब।
धधकत तन-तंदूर में, जिनिगी भइल कबाब।

बरगद का छाता धरे, रंगसाज बनटेस?
लँगड़ा का पगले पके, साधुन भेस-बिसेस?

मूढ़ सिखावन का भला, का कसबाँवरि सींच?
बंजर बलथर खेत में, मुईं उलीच-उलीच?

बकुला कपट पढ़ाइ के, नपले सभ दरियाव।
चढ़ल पिठइयाँ केंकड़ा, ले बेटा फरियाव।

नदी कछारे राधिका, रहली गुमसुम ठाढ़।
पता न कब उमड़ल फफक, गंग-जमुन में बाढ़।

सूखल टूटल गिर परल, तरु से पात अभाग।
आखिर बिछुटे के सबब, लागल बन में आग।

प्रान भभीखन पात के, कइसन सहज मिसाल।
जरिहें तन लंका बिरछ, इहे टूट के चाल।

गुन औसर साधन सुलभ, कारज ऊँच न नीच।
साबुन छाँटे गंदगी, कींच न सकिहें फींच।

सइ-टकिया के देसिला, दस के चिखना चाट।
चार घरी के बाँकुरा, बीच सड़क पर बाट।

जे पौधा हरियर सघन, भरल-पुरल छतनार।
ता पर बेसी व्याधि पय, सइ-सइ संकट मार।

मधुर-कसाइँध होंठ के पातरि पनियल स्वाद।
बारिस की फूही घुले, जीवन के संवाद।

उठे फुरहुरी देहि में, पुरवा झोंक झटास।
अइसन सावन में सखी, ना हऽ नीक खटास।

केश न नागिन घन-घटा, ना अझुरा ना बंध।
घनि के सँवरल केश में परकिति के अनुबंध।

आँखिन में ना खासियत, सब भंगिमा अधीन।
शोख चकित मासूम गुन,  खंजन हिरना मीन।

सेन्ह फोरि भीतर  ढुके, पाछे के भरि चोर।
तजे पोंछ माथा रछे, चतुर बिछौंती मोर।

लाइ कलेवा लाभ का, ऊँचा खेत मचान।
हाँके काग परोसिनी, दे दे धा-धा तान।

◆ ◆ ◆

✍ दिनेश पाण्डेय

# जुड़ाव

जाहिल जमाना नहिं जाने जोग जुग-गति,
जबरी के बनेला सयान।
छोड़िके जमुन-जल, कदम के जुरछाँही,
बिरिजा के बछिया बथान,
पर-पगडंडी बनखंडी गउ खुरधूरि
करे कौन जिनिगी जियान?
जहिया से जरीमनी राधा से जुरलि जिया,
नीक लागे दुनिया-जहान।

◆ ◆ ◆

# छोभ

नंदजी के नन्हका के नखरा हजार गुईं,
नोका-झोंकी कहलो न जाय।
नवहँड़-दही लेले बेंचे खाती जात रहीं,
नाहीं केहू छाँही के सिवाय।
दिशा बुझि कंकरी के, धाई के दबोचि लेनीं,
निबुकि के कहाँ त पराय।
फुटला के गम नाहीं, गम बस छुटला के,
भले टूटे बिपत बलाय।

#बनटेस फूले#
पँतरे में खिलल परास।
पानी ना पवन कहीं, धरती अगिन रहे,
कहाँ रहे अगम अकास?

रहले ना सुरुजो, ना सीतल चनरमे
रहे ना नखत के उजास।
चिरई बोले न डोले सिरसिर नदिया,
कहाँ रहे बन के हहास?

रहे बस सपन सलोना नई दुनिया के
अन्तरे में छुपल हुलास।
केकर परस से निखरि गइली जिनिगी ई?
पसरेला मधुर सुहास।

कलेवा काल
पतइन के झिर्री से
चेहरा प टपकत ह
बारह से ऊपर के घाम।
पाक रहल चाम।

फाटत हराई से उठत
टटकी माटी के सोन्ह गंध
थिराइल ह तनकी।

बलभिस के पिंडी अस सतुआ
आ पिआज के महक से तिरपित आतमा
ओठंग गइल,
बुढ़वा परास के छँहिरे,
घरी भर।

कलेवा के बेरा।
चुन रहलें चिरई
हराई में चेरा।

◆ ◆ ◆

# तिलचट्टा

निकस अइलें हँ बहरी
कतिने ना तिलचट्टा-
कुछ छोट, कुछ बड़
घर के नकारा कोन से,
रन्ह से।

सिर प संवेदी मोंछ
उटंग पीठ
छवटंगा।

उनकर दमघोंटू साँस से
माहौल में घुँटन बा,
एक घिनावन अहसास
बोय बसाता सगरे
ठीक ओइसने
जइसन अक्सर सरल फफुंदी के
उकट देला से पैदा होला।

तिलचट्टा दीर्घजीवी हवें
हाली मूअस ना।

◆ ◆ ◆

# चटोरी

चटनी गे चटनी!
दुर्र भतरकटनी!
कब-दो त,

कइसे-दो त
चाट गइल,
बरगूना के सतह के सरबस छाली।
तवाँते रहल जाली,
ओसहीं
जस-के-तस।

बिलरो बदनाम भइली,
बिलरू मवाली।

ईहे त दुनिया के रीत ह,
केकर त गीत ह-
"मुँह खाए खुद्दी-चीनी
पेन चाभे खीर"
करे ना जुगाली।

◆ ◆ ◆

# लोरी

सुतजा बबुआ,
गहिर निनरिया,
निंदिया रानी फिर ना अइहें।
सुतजा बचवा!

कहँई बोलल खिखिर तान से।
अइसन लागे कूच कर रहल
बनराकस दल,
साफ सुनाता गल-बल।
सोनचिरैया चिंगुला के मुँह दाब रहलि ह।
कौनि अनेसे रात-पखेरू जाग रहलि ह?

कहईं गदह-दिमाग चलल ह,
मुँह से भभकत आग बरल ह,
चारो ओरि लुकारी, तितकी,
बनराकस फिर से घहरल ह।

करिले देह सुहुत हो बबुआ।

◆◆◆

दिनेश पाण्डेय,
संचार नगर, खगौल,
पटना

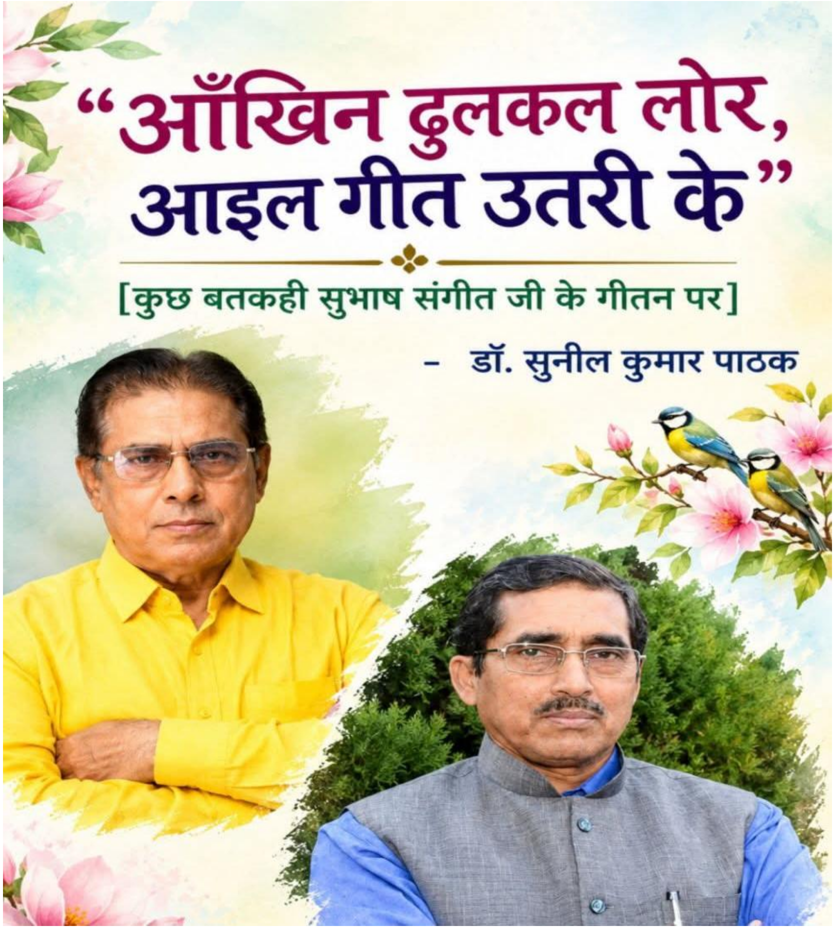


भोजपुरी के काव्य -साहित्य अधिकतर गीतात्मक रहल बा चूँकि लोक जीवन के संवेदना आ अनुभूतियन के जेतना सुन्दर-सुघर अभिव्यक्ति गेय,लयात्मक आ छान्दसिक रूप में हो सकत बा, ओतना दोसर कवनों काव्य-रूप में सुन्दर -सुघर रूप में संभव ना हो पाई।लोक जीवन का, गीते से गति मिलेला आ ओकर गतिये मौका पाके सुमधुर गीत बनि जाला।

सुप्रसिद्ध गीतकार उमाकांत मालवीय जी के कहनाम बा कि"गीत एगो अनवरत बहत नदी ह।" एगो अइसन नदी जवना के बहाव में कबो कवनों तरे के रुकाव नइखे रहल ।एह नदी में आत्मीयता ,पावनता,धवलता,रागात्मकता आदि अइसनका घुलल-मिलल रहल बा कि ऊ सहजे काव्य-रसिकन के मंत्रमुग्ध करे में सक्षम हो जाला।गीत पर लिखत सुप्रसिद्ध गीतकार कन्हैया लाल नन्दन जी के बहुते मार्मिक टिप्पणी बा- "अपार क्षमता वाली एह काव्य विधा के छवि बहुवर्णी बा ,गीत कर्म के उद्बोधन ह,प्रेम के आत्मनिवेदन ह,सम्वेदना के मानक छवि ह,रागात्मकता के प्रतिफल ह,विडम्बनन के प्रतिध्वनि ह।संभवत:कविता के आदिम रूप ह ,जवना के मनुष्य मात्र के मातृभाषा कहल जा सकेला।" (श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन-संपादक-कन्हैया लाल नन्दन,पृष्ठ-22)

आधुनिक भोजपुरी गीत के उमाकांत वर्मा,अनिरुद्ध, मोती बी.ए,भोलानाथ गहमरी ,सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश',अविनाश चंद्र 'विद्यार्थी',हरेराम द्विवेदी,रामनाथ पाठक 'प्रणयी',अर्जुन सिंह 'अशान्त ',राधामोहन चौबे 'अंजन', परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी',दिनेश भ्रमर,कैलाश गौतम,माहेश्वर तिवारी,विश्वरंजन,एंथोनी दीपक,विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी,रामजियावन 'बावला', गंगा प्रसाद 'अरुण ', अशोक द्विवेदी,प्रकाश उदय,आनंद 'संधिदूत ',विजेन्द्र 'अनिल',भगवती प्रसाद द्विवेदी,कुमार विरल,बलभद्र, रिपुंजय निशांत,हरेन्द्र 'हिमकर' सहित अनेक सुचर्चित गीतकारन से लगायत अक्षय पांडेय ले एगो लमहर परम्परा रहल बा।एह गीतकारन से भोजपुरी गीत के गौरव-यात्रा काफी बहुआयामी,रुचिर आ भाव-कल्पना-संवेदना-सोच हर दिसाँई पोढ़ आ पारंगत होत आगे बढ़ल बिया।संगीत 'सुभाष' (सुभाष पांडेय) ओही गीत-

परम्परा के एगो मनभावन आ सशक्त कवि बाड़न जिनका लगे गीत अपना मौलिके रूप में बिना कवनों अतिरिक्त वैचारिक आग्रह के मौजूद बा।

संगीत सुभाष जी के कविता संग्रह 'कलरव में राग अमंद' हालॉकि एक साल पहिलहीं हमरा 2025 में गाजीपुर के एगो साहित्यिक आयोजन में पांडेय जी दिहले रहनीं बाकिर आसकते आ कुछ सुजनी ना जुटला के चलते एह पर आज हम कुछ लिखे के कोशिश कर रहल बानीं।एह किताब के बहुत जबरदस्त भूमिका अग्रज कवि दिनेश पांडेय जी लिखले बानीं आ सुभाष जी के गीत के स्वर के "भोजपुरी के वादी सुर" कहिके संबोधित कइले बानीं।किताब के शुरुआतीये खंड में प्रो.जयकांत सिंह जी के साढ़े पाँच पेजी टिप्पणी 'दू शब्द हमरो ' शीर्षक से शामिल बा।गीतकार के आपन 'आमुख ' काव्यात्मक बा जवना में समरस समाज के स्थापना के दिसाँई उनकर मनोकामना प्रकट भइल बा-

"सभे रहे सुख से सुभाव में

रहे न कवनों रोगी काया

सभका ऊपर एक्के जइसन

बरदहस्त बरदानी छाया

दुअरा पर संगीत मनोहर

सोहर तान उठत अँगनाई ।"

कवि के 'आमुख' के एह पाँतिन में "सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया " के मंगलकामना समाहित बा।'सुभाव ' से सुन्दर भाव आ स्वभाव - दूनू के अर्थ ध्वनित हो रहल बा।

सुभाष संगीत जी के एह गीत- संग्रह के शीर्षक 'कलरव में राग अमंद ' देखके महाकवि जयशंकर प्रसाद जी के सुप्रसिद्ध गीत "बीती विभावरी जाग री!" के दू गो छंद हमरा दिमाग में नाचे लागल बा-

"खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा....

×× ×× ××

अधरों में राग अमंद पिए ...."

-एह गीत के पहिलका छंद के पहिल पाँति से 'कलरव' आ दूसरका छंद के पहिल पाँति से 'राग अमंद ' मिला के 'कलरव में राग अमंद ' शीर्षक सुन्दर आ भावपूर्ण बनल बा।पक्षियन के चहक- धुनि (कलरव) में जवन शांति आ मधुरता घुलल-मिलल रहेला ओह में तीव्र(अमंद)प्रेम(राग) के मिलला पर जवन अवलेह तइयार होला उहे शायिद गीत होला। सुभाष जी अपना एह गीत-संग्रह के 'अमंद राग' के चार गो उपशीर्षकन-अंतर- राग,रितुराग,अनुराग आ लोकराग- के अंतर्गत संयोजित करत अपना सब गीतन के परोसले बानीं। गीत प्रथमत: आ अंतत: आंतरिक मनोभाव आ मनोदशा के अभिव्यक्ति होला- एही से ओमें वैयक्तिक अनुभूतियन आ संवेदना के सर्वाधिक महत्व मिलेला।आत्म प्रकृति आ अनात्म प्रकृति दूनू से गीत के रिश्ता चूँकि बहुते अंतरंग आ एकात्म भाव के होला शायिद एही से सुभाष जी 'रितुराग' नाम से आपन दूसरका खंड रखले बाड़न। 'अनुराग' के समुझावत दिनेश पांडेय जी अपना भूमिका में लिखत बाड़ें- "अनुराग अथाह प्रेम के बोधक शब्द ह।केहू से लगाव के ओजह से अविकारी भाव का संगे ओकरा में रत भइल अनुराग के लच्छन ह। ×××× अनुराग के अँखुवाये के कुछ संकेत होलें आ अइसन तब होला जब जिनिगी में 'संघतिया' के पइसार भ गइल होखे।" माने साफ बा कि ई 'राग' जागी तबे जब एकरा कवनों आलंबन (संघतिया)भेंटाई आ तब ई 'अनुराग ' (पीछे से) आके ओह पर पसर जाई। बाकिर एह सभन से मनोहारी आ मार्मिक ऊ राग होला जवना आपन लोकव्याप्ति बना चुकल होखे। वैयक्तिक राग के लोकव्याप्ति तबे बन पावेला जब ओह में जन-जन के पुलक आ पीड़ा रचल-बसल रहेला।लोक के जीवन-रस में जवन राग सनल-सउनाइल रहेला उहे "सुरसरि सम सभकर हित होई "(तुलसीदास) होके कवनों कविर्मनीषी के सुमधुर पदावलियन में ढलि के 'रसात्मक वाक्य' बनि के गीत भा कविता के मान-मरजाद आ सौन्दर्य गहि लेला।

'अंतर-राग' उपशीर्षक में संकलित गीतन में जवन अंतर-राग बा ओकरो आलंबन कवनों

मनई,कवनों प्राकृतिक उपादान भा कवनों सगुन-निरगुन बरह्मे बाड़ें।आत्मरति से भक्ति आ पररति से प्रेम जनमेला।सुभाष जी के गीतन में भक्ति आ प्रेम दूनू के रूप देखे लायेक बा।कवि माता दुर्गा आ सरस्वती,भोले बाबा,राम-लखन-सीता,कृष्ण-राधा आदि देवी-देवता से जुड़ल गीतन में अपना भक्ति-भावना आ समरपन के अभिव्यक्ति बहुते रमणीय रूप में कइले बा-

1-"लाल चुनरिया लाल पताका लाले चुनरी सोहे

लाल भाल पर लाल सिनुरवा,रुपया मनवा मोहे"

2- "माई अछइत आँख अन्हार /तनिक उजियार करीं/माई हियरा जोति पसार /तनिक उजियार करीं।"

3-"भोला! राउर सुन्दर देश .../माँगे ना लवटे ऊ खाली झोरी भरि ले जाला /जाति धर्म कुल गोत कबो ना पूछल जाँचल जाला /ना बैरी केहू सब अपने सभकर कटत कलेस।"

4-"भारत के कल्यान की जय राम-लखन के बान की जय/जनकसुता जगमातु जानकी वामांगी वरदान की जय।"

5- "कन्हइया अँगनइया खेले घुमरी -परइया ।"

ईशभक्ति में रमल कवि अपना दीनता के बोध ,पूरा समरपन आ सगरो आदर्श स्थितियन के मंगलकामना करत पावल जाला।सुभाष जी एकर अपवाद नइखन ।

भोजपुरी गीतन में निरगुनिया ब्रह्म के प्रति भक्ति आ साधना के खूब महत्व मिलल बा।इहे कारन बा कि निरगुनिया काव्य के भोजपुरी में एगो लमहर आ समृद्ध परम्परा रहल बा।सुभाष जी के कुछ गीत ओह परम्परा के आजो जुगवले -जगवले दीखत बाड़न-

"सुगना कहवाँ उड़ि के जइबऽ

अगम अपार अथाह गगन में

आँखि-पाँखि छितरइबऽ

ना मिलिहें जब रैन-बसेरा

सिर धुनि-धुनि पछतइबऽ

सुगना कहवाँ..........?"

निरगुनिया भावधारा के कवितन के एगो खास विशेषता होला कि घोर श्रृंगारिक आ गार्हस्थिक बिम्बन से शुरु होके ऊ अगम -अगोचर तत्व का ओर बढ़ि जाली सँ।एकर सुन्दर उदाहरण सुभाष जी के एगो गीत बा -

"पनघट नीर भरन ना जाइबि

पिय से नियरे कूप खोनाइबि ।"

- एह गीत में सास-ससुर -भसुर,ननद-देवर आदि से निबटत एगो नारि आखिर में कहे लागत बिया-

"अतल कुँआ के अमरित पानी

पीअत सफल होत जिनगानी

जिनिगी के जँवजाल भुलाइबि।"

- "अतल कुँआ के अमरित पानी " पिअले बिना जिनिगी के सफल भइल संभव नइखे। घोर गार्हस्थिक बिम्ब से शुरु करिके एह गीत में आपन आध्यात्मिक रूझान झलका देबे में कवि का भरपूर सफलता मिलल बा।

एगो आउरो भक्ति में पगल अपना गीत में सांग रूपक के छटा ठाढ़ करत कवि कहत बा-

"आँखि के ढिबरी देह के बाती सुधि के तेल जरा के/कर दीं जगमग रहिया तहरी आपन सब बिसरा के/आ जइतऽ मड़ई में हमरी रोज सुबह आ साम के/अनुपम रूप रहनि गुन सोभा सुघराई के धाम के।"

-एह गीत में देह के बाती आ सुधियन के तेल डालि के आँखि के ढिबरी जरावे के बात करत कवि ओह अनुपम रूप के आवाई खातिर राह जगमगा देबे के चाहत बा।एतने ना ओकर कामना बा कि ओकरा मड़इयो में सुबह -साँझ आके ऊ अपना अनूप रूप के झलक दिखा जास। एह गीत के ई विशेषता बा कि दोसरा पद आ गीतन में भक्त जहाँ आपन पथ आलोकित करे खातिर प्रभु से प्रार्थना करेला ओजवे एह गीत में एगो भक्त कवि अपना झोपड़ी पर अपना भगवाने के नेवतत उनकर राह जगमगा के स्वागत करे के चाहत बा।भगवान धरा- धाम पर अपना भगतन के पुकार पर आवे खातिर तइयारो रहेलें,एह से कवि के पुकार में कवनों अस्वाभाविकता नइखे मानल जा सकत।

'अंतर राग' खंडे के एगो रचना में कवि अपना गीति-साधना के स्पष्ट करत कहले बा-

"गोदी रतन सुतवले धरती गावे गीत सृजन के

उड़ति उछाहे नन्हकी चिरई नापत रोज गगन के

अदिमी छपिटाता/करि नित सीनाजोरी।"

कवि के एह पाँतिन से ई बात साफ हो जात बा कि ओकर गीत वायवीय नइखन सँ ,ऊ धरती के गीत बाड़े सँ जवनन में एगो नन्हकी चिरई के आसमान नाप लेबे हौसला बा आ एगो आम मनई के छटपटाहट आ ओकरा संघर्षो के स्वर मिलल बा।

अब हम कुछ बात एह संग्रह के 'रितुराग' उपशीर्षक में शामिल कुछ प्रकृतिपरक गीतन के करे के चाहब।भोजपुरी कविता का प्रकृति से बराबरे बहुत नगीची रहल बा।प्रकृति के आलम्बन आ उद्दीपन दूनू रूप में एजवा इस्तेमाल भइल बा। खास कर के गीतकार सभे त प्रकृति -वर्णन में आपन जवन अभिरुचि देखवले बा ओह से भोजपुरी कविता में प्रेम,संयोग आ वियोग श्रृंगार से जुड़ल मनोभावन के सहज प्रकटीकरण के त अवसर मिलले बा ओकरा चलते काव्य में चारुता आ रमणीयतो समाहित हो सकल बा।

सुभाष जी प्रकृति -वर्णन के क्रम में भारतीय ऋतुअन के त चित्रण कइलहीं बाड़न प्रकृति के ' मानवीकरण' करत मानव -मन के प्रकृति पर पड़ेवाला प्रभावनो के बहुते भावातुरता से उकेरले बाड़न।

एगो बहुत सहज मनोभावन पर आधारित गीत बा जवना में प्रियतम अपना विवाहिता नायिका से कहत बा कि हमरा पगरी के भिंगावे चहुँपल ई बदरी तहरा नइहरे से आइल बिया।समुझे के बात बा कि भोजपुरी समाज में पगरी के केतना महातम बा।अपना बाबा के पगरी के लाज बचवले राखे खातिर बेटी सभ केतना मरजादा के मानत अपना ससुरा में रहेलिन -ई हर भोजपुरिहा जानेला।एजवा नइहर से आइल बदरी नायक के पगरी के भिंजा-भिंजा डालत बिया-

"तोर नइहर से आइल हई बदरी

भिंजावे मोरि पगरी धनी !

×× ×× ××

संगे बिजुरी सहेली,घूघ टारि बिहँसेली

मारि कनखी लुकाई जाली कगरी

भिंजावे मोरिस पगरी धनी!

चढ़ि रहेली कपारे भोर- साँझे- भिनुसारे

ना बिचारे घेरे रोकि देत डगरी

भिंजावे मोरि पगरी धनी!"

ससुरारी से आइल बदरी के ठिठोरी से पगरी के भिंजला पर नायक का जवन सरस आनंद मिल रहल बा , भोरे- साँझे घिरल रहिके ई बदरी जइसे बाहर निकले से ओकरा के बरजि रहल बिया- ओहू से ओकरा नायिका संगे जादे समय बितावे के मौका मिल गइल बा।एह तरे ई बदरी बहरी पगरी त भिंजावते बिया, भीतरी मनो के भिंजा के सरस प्रेममय बना देबे में अचिको कोर कसर नइखे छोड़त। प्रकृति के मानव-मन पर पड़े वाला ई प्रभाव अद्भुत बा।

अइसहीं एगो आउर गीत के हम उल्लेख करे के चाहब।प्रकृति के उपादानन खास करिके पवन आ चिरई-चुरुंगे से संदेशा भेज के नायिका अपना विरह भावना के इजहार करत दिखल बाड़ी सँ। एजवा अपना गीत में खुशी आ मस्ती के प्रतीक वसंत ऋतु से नायिका आपन कुछ अजबे तरह के संदेशा भेजत नजर आवत बिया ।ऊ एजवा वसंत के अपना हँसी-ठिठोली आ राग-मस्ती से बरजत कहत बिया कि ओजवा फगुआ-होरी कुछऊ के जरूरत नइखे ,तिरंगा ओकरा गोली लागल सीना पर पहिलहीं से चढ़ल बा। एह से आपन गुलाल अपने लगे छिपवले खाली अँजुरी भर फूल चढ़ावत नमन निवेदित करत ओह वीर शहीद के लगे से धीरे से निकल जइहऽ-

" ए वसंत धीरे से जइहऽ भर-भर अँजुरी फूल चढ़इहऽ/गइहऽ राग देश बस उहँवा/ना फगुआ ना होली /बबुआ खा के सूतल बाड़ें सीना ऊपर गोली।"

वीर शहीद आ वसंत के रिश्ता साहित्य में पूर्वप्रचलित रहल बा। एह संबंध में हिन्दी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता के बरबस

इयाद आवे लागत बा। प्रकृति- राग में देश- राग के एह समाहार से गीत एजवा गौरवान्वित हो उठल बा।अइसहीं गरमी ,शीत, शिशिर आदि ऋतुअन के वर्णन में कवि के मौलिकता ,नवीन कल्पनाशीलता आ रुचिर चित्रण के क्षमता देखते बनत बा। एजवा एगो आउर गीत हम उद्धृत करे के चाहब जवना में कवि जमीनी जथारथ से जुड़ल रहिके जिनिगी के मजबूरी आ हकीकत के बयान करत दिखत बा।फगुआ के रंग एजवा फींका पड़त दिख रहल बा , काहे कि -

"मनरेगा के कइल मजूरी खाता में ना आइल

सगरी राशन डीलर खइलें कुछुओ ना भेंटाइल

कतिना जोरे करीं अनबनी

ना पाकिट में एक चवन्नी!

बिरिधा पेंशन छठे छमासे कभी-कभार भेंटाला

ओहू में से ढेर कमीशन बाबू लोग खा जाला

कहिए चूक गइल अगहनी

ना पाकिट में एक चवन्नी!"

सुभाष जी के खाली प्रेम-पथिक आ प्रकृति के पुजारी बतावे वाला समीक्षक सभे का उनका अइसनका गीतो का ओरि नजर डाले के चाहीं।उनका गीतन में जवन घर-बार आ गर-गिरहस्थी के जवन चित्रण भइल बा उहो कवनों महली-दूमहली में मजे से जिनिगी जीयत कवनों मियाँ -बीबी के विलासिता आ रसिकता से भरल नइखे।ई ओह मजूरन के चित्र बा जवन दिनभर जाँगर ठेठवला के बाद रात में पलखत पा के दू- टूम बतिआइये के खुश हो लेत बाड़ें -

"नीक लागे बतिया आ मीठ लागे बतिया

जहिया से जिनिगी में अइले संघतिया

टूटली पलानी का चढ़ली जवानी

अंगना में अंग -अंग छींटे निशानी

भाग गइल रोग -सोक सगरी बिपतिया।"

दू-टूम के बात-बतकही से दिन भर के सगरी हरारते-थकान नइखे मिटत रोग -सोक सभ परा जात बा।अइसनके भाव- बोध प्रकाश उदय आ अशोक द्विवेदी जी के गीतनो में बड़ी मार्मिक रूप से उतरल बा-

1-"उनसे का बइठि के बतिआइब हम/रात के पहिला पहर अइहें जब/कुछ ना बोलब /महटियइबि हम।"(अशोक द्विवेदी)

2-"रोपनी के रँउदल देहिया /साँझहीं निनाला तनीं जगइहे पिया/जनि छोड़िके सुतलके सुति जइहे पिया।"(प्रकाश उदय)

अपना अइसनके गीतन के जरिये सुभाष जी 'ऋतुराग' से मानवीय 'अनुराग 'के अँगनई में सरकि आवत बाड़न आ गावे लागत बाड़न-

"सुनिलऽ भइया हो ,ऊँचा ह परबत से प्यार

अल्हड़ बयार नियन ,शीतल फुहार नियन

नदिया के रसवंती धार।"

कवि के एह 'अनुराग' खंड में प्रेम आ विरह के वर्णन के साथे-साथे ओह वासकसज्जा नायिको के रूप -वर्णन बा जवन अभिसार खातिर तइयार हो रहल बिया।एही तरे एगो पारम्परिक कजरी "पिया मेंहदी लिआ द मोतीझील से ,जाके साइकिल से ना" -के तर्ज पर सुभाष जी के एगो कजरी बा जवना में विरह से दुबराइल एगो मेहरी अपना पिया से मुसहरी बाजार से टवनिक ले आवे के फरमाइस करत बिया-

"पिया टवनिक लिआ दऽ जाइ कार से

मुसहरी बाजार से ना।

×× ×× ××

एक त हम कमजोर

ननदी अति मुँहजोर

बात सासु के लगत चइलामार से ।

दुख देखि बड़ा खुश

ई देवर मनहूस

तनि डाँटि दऽ बुझाई दऽ ना प्यार से

मुसहरी बाजार से ना।"

एह गीत में नायिका के दुबरई खाली टवनिके से नइखे मिटे वाला। सास के चइलामार बोली

आ ननदी के मुँहजोरई के संतापो ओकरा झेले के पड़त बा।बाकिर ई सभ ऊ झेल लीत अगर देवर मनहूस ना रहित। बाकिर इहाँ त देवर मुँहलटकावने मिलल बा एह से ओकर काया दिन-रात गलल जा रहल बा।कौटुम्बिक परिवेश के पिरोवले ई गीत भोजपुरिहा समाज में नारी के दयनीय दशा के साफ तरे झलका रहल बा।सुभाष जी घोषित तौर पर कवनों 'वाद' से प्रेरित-प्रभावित होके गीत रचना करे वाला कवि ना हउवन बाकिर उनका गीतन में नारी विमर्श, बृद्ध विमर्श आदि से जुड़ल कथ्यो मजिगर ढंग से अभिव्यक्त भइल बा-

1-" एगो सरीरिया फिकिरिया हजारन

केतना सुनाईं सजन!

×× ×× ××

हाथ लाख होखे तबो ना सिराई

औरत-जाति काज छोड़ि कहाँ जाई

जिनिगी भरि जिनिगी भइलि बा बहारन

केतना सुनाईं सजन!" (नारी विमर्श-अनुराग खंड)

2- "मिलि जात जून पर नून -भात माँड़ बा त

बुझि जा ए बुढ़ऊ! कि भाग तोहर चाँड़ बा

लागल पियास पूत लेइ नीर ठाड़ बा त

बूझि जा ए बुढ़ऊ कि ..........।"(बृद्ध विमर्श -लोकराग खंड)

सुभाष जी के प्रेम आ श्रृंगार वर्णन में आधुनिकतो के खूब रंग चढ़ल बा ।उनकर नायिका इंटरनेट आ वॉट्सएप्प के जानकारी राखे वाली बिया।ऊ इहो जानत बिया कि जिन मरद-मानुस एकरा फेरा में पड़ि जात बाड़ें उनकरा अपना मेहरी खातिर समय निकालल मुश्किल हो जात बा।

'लोकराग ' उपशीर्षक के अंतर्गत संकलित गीतन में प्रकृति,पर्यावरण, सामाजिक विसंगति ,बेटी-बेटा के सामाजिक स्थिति ,माई के प्रेम,भोजपुरी के महिमा आदि महत्वपूर्ण विषयन से जुड़ल बा।

एगो दीन-हीन भूमिहीन मनई के पीड़ा के अपने पीड़ा जस उकेरत पूरा गहिर संवेदना आ महीन अनुभूतियन में पगल सुभाष जी के एगो गीत के पाँतिन पढ़े जोग बा-

"पाँव राखे के हमरा जगह ना मिलल

उनके पाँखि ना हिला आसमान मिल गइल।

हमसे जोन्ही गिनावल गइल रात भर

उनका बखरा में जगमग बिहान मिल गइल। "

विसंगति के ई रूप जमीन आ धन के असमान वितरण आ जातिगत विषमता भर सीमित नइखे।घर -परिवार में एके माई-बाप के दू गो संतान-बेटी आ बेटा के दू नजर से देखे के विसंगति तक पसरल बाटे। बेटी जेकरा कवि सुभाष जी अपना एगो गीत में "खोंइछा के शुभ सोनगठरी","दमकति ईजत केरि पगरी","परिजन हिया के रसगगरी,"त्याग शील करुना के डगरी" आ "सीता -राधा-लछिमी सगरी" -कहिके संबोधित कइले बाड़न ,का आजो देश आ समाज में बहुते जलालत झेले के पड़त बा। बाकिर समय धीरे-धीरे अब बदल रहल बा। बेटी-बेटा के बीच फरक ना मानेवाली समझदारी समाज में जाग रहल बिया।आगे आवे वाला समय भरोसा जगावत सुभाष जी के गीतन में दिखत बा।उनकरा गीत के एगो छंद देखे लायेक बा-

"कर जोरि बिनवे दुलारी बेटी

बाबू जनि काटीं हरियर गाछि पलंगिया का कारन जी!"

एगो पारम्परिक भोजपुरी गीत में चिरई-चुरुंग के बसेरा रहला का चलते गाछिन के जोगावे के बात कइल गइल बा जबकि एजवा गाछि कटवा के पलंग गढ़वा दहेज में देबे से बरजल गइल बा ।एही तरे कवि बेटा-बेटी में फरक ना माने के सीख देत अपना एगो गीत में कहत बा -

"एगो दुअरे सिंगार

एगो अँगना बहार

एगो टुहटुही धूप

एगो भोर के निहार

देवतो निरेखे पिय

हमरी पानी

बेटा सोने के घड़ा

बेटी निरमल पानी।“

माई भोजपुरिहा मनई के जान -परान होले।ऊ जाले ले रहेले अपना बाल-बचवन के अपना नेह -प्यार से छपले रहेले।ओकरा पराते जिनिगी तवाँये लागेले,ओकर लय टूटि जाला।एगो बहुते मार्मिक गीत माई के लेके सुभाष जी के बा -

"ए माई तनिएसा घुट से खिया दे।

×× ×× ××

भूजा ,काढ़ा, लपसी, बारा,मीठ-मीठ गुलगुला

ढकनेसर, घोरुआ, पुआ का सोझा का रसगुल्ला

जिनिगी के कुरुता फाटल बा आजु बखिया दे।"

अपना बेटवन के जिनिगी के कुरुते बखियावत मतारी लोग गुजर जाला लोग आ जवान समझदार बेटवो अनाथ हो जालें।

माई पर गीत लिखेवाला सुभाष जी अपना माईभाषा भोजपुरी पर गीत ना लिखस , ई भला कइसे संभव रहे। भोजपुरी माई पर लिखल उनका एगो गीतन के कुछ पाँतिन के देखि के ई कहल जा सकत बा कि अपना मतारी ले अचिको कम ऊ अपना एह माई भाषा के नइखन मानत-

1-"बजड़ा से बचपन उपजाईं,जौ से जोश जवानी/माटी से माटी के कविता भोजपुरी के पानी /हम्मर नइखे कवनों सानी,रउरा मानीं भा ना मानीं।"

2-"पूरब- पच्छिम उत्तर -दक्खिन जल-थल,परवत -घाटी

धूम मचावे मन हरखावे सरल सहज परिपाटी/ई ह भोजपुरी के माटी,सतुआ -भूँजा, चोखा -बाटी।××

×× ××

चलल कारवाँ तनिक रुकी ना मंजिल तक अब जाई/कवनों बाधा ,बिकरा ,ठिकरा ,राह रोकि ना पाई/पुरुखन के थाती हउवे ई हेन-तेन जनि होखे/मिली हाथ से हाथ त झंडा मंगल पर फहराई/दुनियाँ के सिरमौर कहाई धोती कुरता लाठी।"

सुभाष जी के काव्य-कला के देखत ई कहल जा सकत बा कि निठाह भोजपुरी शब्दन के अनुपम भाव-छटा एजवा देखे लायेक बा।उनकर गीत प्रेम,भक्ति,ज्ञान,कर्म ,प्रकृति,राष्ट्रीयता , सामाजिक दुख-दैन्य ,विषमता-विसंगति - सभके एके साथे साधत चलल बा।आनुप्रासिकता के व्यामोह कहीं-कहीं काव्य-चमत्कार के उद्देश्य से कवि देखवले बाड़न जवना चलते शब्दन में तोड़-मरोड़ उनकरा करे के पड़ल बा लेकिन एह से अर्थ- ग्रहण में कवनों जादे बाधा नइखे पड़ल,जइसे-

"जुगवल जिनिगी जान जवानी,जियरा जरि-जरि जालें /पलक परेखत पंथ पिया के पपनी -पच्छ पिरालें।"

-एजवा अनुप्रासे के चक्कर बा के 'जुगवल जिनगी' आ 'पलक परेखत' कवि का लिखे के पड़ल बा।

एह विवेचना से ई स्पष्ट बा कि सुभाष जी भोजपुरी गीति विधा के एगो दमगर कवि बाड़न।

इनका गीतन के नवगीत, जनगीत, मनगीत भा कवनों आउरो दोसर संज्ञा से अभिहित ना करि के हम गीते कहे के चाहब ।केहू आदमी में अगर आदमीयत बा त ऊ अपना मूल रूपे में एकेसाथे सबकुछ बा ; ओइसहीं सुभाष जी के गीतन में अगर मूल रूप से गीताई बा, त ऊ 'गीते' नियन पावन ,मनभावन आ ज्ञान-कर्म, बुद्धि-विवेक,भाव-विचार सबकुछ सबहरे जगावे वाला बाड़े सँ।अपना एह आलेख के समापन हम सुभाष जी के गीत के एगो छंदे से करे के चाहब जवना से उनकरा काव्य-साधना के सबकुछ पूरा तरे फरछीन रूप में सामने हाजिर हो जात बा-

"जखनि तवल हियरा हिम-पाथर ,आँखिन ढुलकल लोर/आइल गीत उतरि के/भूभुरि तपन देह- मन दाहल उठल पीर गहिरोर /आइल गीत उतरि के।"

एजवा तवल हियरा (विदग्ध हृदय) के चलते आँखिन से ढुलकल जवना लोर के गीत के रूप में उतरि आवे के बात कवि करत बा ,ऊहे गीत के मधुरतम रूप होला।पाश्चात्य कवि पी.बी.शेली के कथनो एह बात के गवाह बा-

"Our sweetest songs are those that tell of saddest thought." (To a Skylark:P.B.Shelley)

□□□□□□

सुनील कुमार पाठक

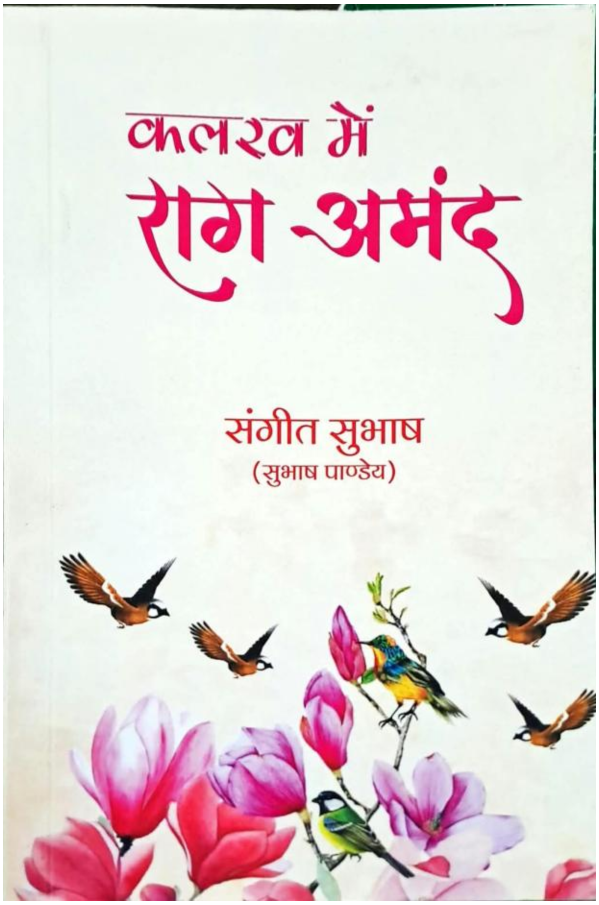

## कहाँ रोक पवले बा केहू

ठंडी, गर्मी, बरखा- बूनीं, पछुआ भा पुरवाई के।
कहाँ रोक पवले बा केहू मौसम के अँगड़ाई के।

कोहरा आ बदरी छपले बा धरती से असमाने ले,
सुरुज देव अँतरे जा छुपले पाहि लगल प्रभुताई के।

जवना देह पर एगो हल्लुक गमछा ले भारी लागे,
उहे देह जब ठिठुरे त, लागेला गरज रजाई के।

हाड़ गलावत जाड़ा में जे पाला- पानी से जूझे,
बजर करेजा ओह किसान के देखीं हाल सिंचाई के।

हाथे- हाथे बा मोबाइल घर- घर एसी कार भइल,
झुठहूँ लोगवा छाती पीटे असर कहाँ मँहगाई के।

'संजय' मौसम के माफिक अब अदिमी बदलत बा इहँवा,
के पूछे माई - बाबू के, के भाई - भउजाई के।

◆ ◆ ◆

## गजब हो गइल

सबके आपन बनावल गजब हो गइल।
असहीं जिनिगी जोगावल गजब हो गइल।

जेकरा कथनी आ करनी में अंतर रहल,
ओके ऐना देखावल गजब हो गइल।

जहँवा इचिको अँजोरिया रहल ना उहाँ,
एगो दियना देखावल गजब हो गइल।

केहू सुसुकत मिलल जो कबो राह में,
बढ़िके गरवा लगावल गजब हो गइल।

माई - बाबू के पुजनीं भगत - 'भाव से,
घर के तीरथ बनावल गजब हो गइल।

'संजय' हमसे भइल ना चरण- वंदना,
साँच कविता सुनावल गजब हो गइल।

◆ ◆ ◆

## मुस्कुरात रहीं

काँट हियरा में जब गड़ल होई।
लोर अँखियन से तब ढरल होई।

असहीं हिचकी कबो ना आवेला,
केहू अचके में मन पड़ल होई।

पियले होई ऊ फूँक के मट्ठा,
दूध से ओठ जब जरल होई।

हार गइलो पर मुस्कुरात रहीं,
जिनिगी जीयल बडा़ सरल होई।

गीत - कविता उहे रची जेकर,
जिंदगी दर्द से भरल होई।

काहे बानीं अधीर 'संजय' जी,
गाछ बिस्वास के फरल होई।

◆ ◆ ◆

# ईमान का होई

नीति नीयत ईमान का होई ?
साँच बोलत जुबान का होई ?

केहू केहू से इचिको कम नइखे ,
राखीं अपने ले ज्ञान, का होई ?

नौजवानी उघार नाचति बा,
एसे बढिके उठान का होई ?

जेकरा हियरा में सुख भरल बाटे,
ओकरा दौलत मकान का होई ?

फैसला तय बा झूठ के हक में,
राउर सँचका बयान का होई ?

जहँवा पइसा मिले, करी शादी,
रूप -गुण -खानदान, का होई ?

छोड़ीं 'संजय' जी फायदा घाटा,
करिके उघटा पुरान का होई ?

◆◆◆

संजय मिश्र 'संजय'
कार्यकारी संपादक
'सिरिजन' भोजपुरी तिमाही पत्रिका

# भाई बहिन (लघु कहानी)

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एके टके... टूटल फुटल राह के... मड़ई के दुआरी पर बईठ के... टूटल चश्मा के डाटी में सुतरी लगा के... कान पर चढ़ा के... फुटल शीशा के चश्मा से हर आवे वाला राही के निहारात.... एगो 65-67 साल के बुढ़िया दादी के रघुआ पीपल के नीचे चबूतरा पर बइठल कबसे देखता उनका के....

उ बुढ़िया दादी के चेहरा के भाव आ इंतज़ार साफ बतावत बा कि बुझाता केहू उनकर दुलरुआ कउनो आवे वाला होखे.......

लगभग 2 घंटा के बाद उ दादी एकाएक साड़ी में मुँह पोछत... कपार पर लुगा धरत... आगा के एगो दुगो बचल दांत से लुगा के कोर दबावत... चेहरा पर ख़ुशी के भाव के साथ... दुआरी पर खड़ा भईली....

चबूतरा पर बैठल रघुआ उनकर हाव भाव से जान गईल कि जेकर इंतजार ई पिछला 2 घंटा से करत रहली ह... उ लउक गईल बाड़े...

इ जेने देखके ख़ुश भईली हमहू ओने देखनी त सामने से एगो 70-72 साल के बुढ़ बाबा बकुली के जगहा हाथ में डंटा के सहारा लिहले.. पुराने धोती कुरता में धीरे धीरे आ रहल बाड़े..... जेकरा संगे एगो 10-12 साल के लइका हाफ पैंट आ पियर टी शर्ट में... हाथ में बोरा वाला झोरा लेले.. आ बाबा के सहारा देत.. बाबा के चाल में आ रहल बा.....

बूढ़ी दादी के मुसुकी.. आ चेहरा के भाव से बुझाइल कि आवेवाला उनकर केहू खास दुलरुआ होई....

त रघुओ धीरे धीरे उनका भीरी मड़ई के दुआरी त आके अभी पूछही वाला रहे कि ए दादी हो... उ के ह हो... केकरा खातिर अतना धधाईल... परेशान लउकत बाड़ू.. कि देखते कहतारी कि जानतारे रघुआ.... हमार भईया हवे... उनके इंतज़ार करत रहनी हा देख होदे....अपना छोटका नतीया संगे आवतारे... जानत रही कि भईया अइहे जरूर काहे से कि हर राखी मे कतनो काम रहो..

तनियो देर खातिर आवे लन... बाकी आवेलन.. जरूर... आज तनी देर होत रहे त कबे से दुआरी पर बईठ के उनकर बाट जोहत रहनी ह.... देख देख आ गइलन हमार भईया...

ख़ुशी से खिलखिलात चश्मा सम्हारत भावुक आवाज मे कहतारी कि पिपरा तले से भुआरा के बोला के तनी चौकिया मड़ईया में बिछवा दे.... तले हम बतासा पानी ले आवतानी.... पतोहीयो नईहर गईल बिया नातियन के लेके.... राखी बन्हवावे....आज राखी नू ह....कहत डबडीयात आचर से ख़ुशी के लोर पोछत...भीतर गइली....

ई भाव... ई प्रेम.... ई छोह.... एगो बुजुर्ग भाई खातिर..... हेह उमर में देख के आँख भर गईल... आ ई प्यार दुलार देखें के मन में अउर ललक लालसा जाग गईल..... कि ई बुढ़वा भाई आ बुढ़िया बहिन के प्यार तनी देखल जाऊ....

हमहू भुआरा के बोलके चौकी बिछवा देनी... तले बाबा दुआरी पर आ गईलन... आ बचीया बचीया... केने बाड़े रे बचीयो.. पुकारत मड़ई के भीतर आ गईलन... त बिछल चौकी पर बैठे के हम कहनी... भईया के प्यार भरल आवाज सुन के लोटा में पानी आ चार गो बतासा लेके रोवत दादी अइली.... आ भईया के गोड़ लागत.. आचारा से लोर पोछत चौकी के पटिया भीरी भुइया बईठ गइली..... भाइयों के देखनी कि उनकर आँख भर गईल बा लोर से... जेकरा के गमछा से पोछत सर समाचार होखे लगुवे..... गाँव घर के समाचार... खेती बाड़ी के समाचार.... अड़ोस पड़ोस के समाचार के बाद आजी राखी अपना भईया के कलाई पर बांधे खातिर ले अइली.... दही, रोरी, खड़ा चाउर से कापत हाथ से टिका कइली....आरती उतरली... फिर राखी बंधली.... फिर मुँह में बतासा खियवली...... बाबा अपना झोरा से साड़ी निकाल के बहिन के हाथ में देलन...आ पाकिट वाला गंजी से 10.. 20... 50... के नोट के निकाल के 501 गिनत हाथ में धरवलन जवन देख के लागल कि ढ़ेर दिन से पाई पाई जोड़ के रखलें रहन....

ई सब रघुआ टूकुर टुकुर निहारत.... आपन सुना कलाई के देख के सोचत बा कि काश हमरों एगो बहिन रहित त उहो हमरा के एही भाव.... नेह..... छोह..... दुलार.... प्यार...... से राखी बान्हित नू.... काहे से कि रघुआ दादी के भाई के इंतजार से लेके.. राखी बान्हे तक जवन देखलस नू.. आज बहिन खातिर भितरे भितरे कुहूक गईल........ चौकी पर से सब समान हटा के... दादी अपना भईया के आराम करें के कहत भीतर चल गइली...... तले भुअरा पिपर त चबूतरा से चीचीयाता कि अरे रघुआ तोर भईस खुटा तुरा के धनखेती ओर गईल... ई सुनते दादी से कहनी कि जा तानी दादी भईस बान्हे..... तुरईले बिया.. कहत दौड़त मड़ई से भगनी धनखेती देने................ 🙏

◆ ◆ ◆

राघवेंद्र प्रकाश 'रघु'
ब्रह्मपुर धाम, बक्सर (बिहार)

# मन मारे के पड़ी

मन मारे के पड़ी,
चुप रहे के पड़ी।

बसावे खातिर परिवार,
बहुत कुछ सहे के पड़ी।

कुछ सुने के पड़ी,
कुछ सुनावे के पड़ी।

कुछ कहला से उनका,
कुछो फर्क ना पड़ी।

निभावे के बा नेह त,
कुछ सोचे के पड़ी।

कुछ समझे के पड़ी,
कुछ समझावे के पड़ी।

राखे खातिर दिल उनकर,
दिमाग दौड़ावे के पड़ी।

मन मसोसे के पड़ी,
मन मिलावे के पड़ी।

एतना समझा देनी,
सब कुछ बता देनी।

फायदा नइखे समझावे के,
ना उनका से बतियावे के।

जब बाते ना समझे के,
का मतलब समझावे के।

मन मारे के पड़ी,
चुप रहे के पड़ी।

कभी-कभी हालात में,
मुस्की धरे के पड़ी।

दर्द दिल में राख के,
आँसू पीए के पड़ी।

रिश्ता के बचावे खातिर,
खुदे झुके के पड़ी।

जे देहले संस्कार पुरखन,
ओकरा के बढ़ावे के पड़ी।

मन मारे के पड़ी,
चुप रहे के पड़ी।

◆ ◆ ◆

शिवेंद्र गौतम,
बैकुंठ पुरी, मुजफ्फरपुर

# ई सब छोड़ऽ

तू मारल खुरचारी छोड़S
पारल तनी हुँकारी छोड़S
अब्बो से तू सुधरS बाबू
तू देहल पुचकारी छोड़S ।

तनिका टांग अड़ावल छोड़ऽ
छोटहन बात बढ़ावल छोड़ऽ
बेरा पर चुप रहल ठीक हS
दुसरा के घुरियावल छोड़S ।

बड़ के आगे बहसS मति ना
देखS बाबू सहकS मति ना,
पीयऽ बाकी लुका छिपा के
पी के बाबू महकS मति ना ।

बात से आगि लगावS काहें
झूठ मूठ भुलियावS काहें,
उनसे बनS दूध के धोवल
तब कतहीं घुरियावऽ काहें ?

ढेर राढ़ ना बेसहल जाला
सगरे राज कहल ना जाला,
होखे कहीं जो इज्जत माटी
ओजग चुप्प रहल ना जाला ।

जान आँखि से मारल छोड़S
शेखी ढेर बाघारल छोड़S,
जीत आस के नीमन बाटे
खेलल जूआ हारल छोड़S।

धोती कपड़ा लुरगर रहे
अदिमी होखे मुँहगर रहे,
ठठरा गाय त दर्जन बाड़ी
गाय रहे तS लगहर रहे ।

ढेर चोनाइल नाहीं जाला
ढेरकी ना कोहनाइल जाला,
कोआ खा तS समने रहS
मुंगड़ी ले ना जाइल जाला ।

छोड़S "उमेश" ना केहू सुनिहें
झूठ मूठ बस अपने धुनिहें,
नीक राय जो देबऽ उनके
नीमन छोड़ीं बाउर गुनिहें ।

◆ ◆ ◆

उमेश चौबे "अश्क"
नगर पंचायत कटेया गोपालगंज

# लछुमन रेखा

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखंड

रमेसर के माई शहर से गाँव गइली कि घर दुआर में दीया-बाति हो जाई। घर हमेशा बंद रहे के चीझ ना ह। बाकि दीवाली से पहिले उनुका डायरिया हो गइल। टोला-पड़ोस लोग साथ दिहल, आ डॉक्टर बोला के दवा-दारू करावल त ऊ ठीक हो गइली। पुरनिया के माटी से मोह होला बाकि जब आपन कहाए ओवा समय पर साथ ना देला त मोह भंग हो जाला। इहे भइल रमेसर के माई संगे। रमेसर उनुका के कहत रहन कि माई, अबहीं हमरा छुट्टी नइखे बाद में चल के घर -दुआर के साफ-सफाई करा दिआई, बाकि उनुकर ललक ना मानल। आ गाँव चल गइली।जब डायरिया में परली तब उनुका बुझाइल कि ना बेटा-पतोह के बात हमरा माने के चाहत रहे, हमार ऑंख के अंजोर आउर के बा?

आ एगो अतीत के दिरिस उनुका इयाद आवे लागल, उनकर बुढ़िया (सास) तंगी रहे त अपना ओह अंगना (गोतिया के घर) से लोटा लिहले आवत रही, बँटवारा के बाद उनकर सास अपना जमला के छोड़ के इनिके जोरे रहत रही आ कहत रही कि हमार जामल अनेत करऽता त करे, हम एकर साथ ना छोड़ब आ एकरे में रहब। से भइल का कि रजेसवा बुढ़िया संगे गली में हाथाबाहीं करे लागल -"लोटा देखाव, तूं उहनी खातिर कुछ चोरा के ले जात बाड़ीस हमरा घरे से, उहनी के हमार केहू ना हवसन, खइला- खइला बिना मुअसन, बुढ़िया सास लोटा बिग के आपन पानी बचइली कि- "हम बेदाग बानी रे।" आ गली के लोग धिक्कारे लागल, रजेसवा के। एह दिरिस से रमेसर के माई के दोबारा ऑंख खुल गइल आ अपना मन में तय कर लिहली, दीया-बाति केकरा खातिर? घर खातिर? अपना जिनिगी के जोख़िम में डाल-झोंक के? ना ,,ना,,,, हमरा बेटा के बात लछुमन रेखा बा, हम ना पार करब लछुमन रेखा। हमरा इयाद बा हमरा जीवन में बीतल सब दिन।

◆ ◆ ◆

# संकोच नइखे

जाने कइसन घरी आ गइल बा,
कुछ भी कहला में संकोच नइखे।
जवन आए ना आए भा ओपर,
राय बन्हला में संकोच नइखे।

देश खातिर चिता-ज्वाल-जौहर,
मान के बिन्दु आपन रहल बा,
देश-गौरव के ए बात पर भी,
मुँह बनवला में संकोच नइखे।

कइसन कइसन चलल बा डिजाइन,
ढकल कम बा, खुलल देह जादा,
देह आपन ह जइसे रहीं हम,
कुछ पहिरला में संकोच नइखे।

के के ज्ञानी कहीं, के के बुरबक,
अब समझ से परे ई बा हमरा,
बड़का कॉलेज के लइकी आ लइका,
लँगटे नचला में संकोच नइखे।
दुनिया कइसन भइल आज 'संजय',
कल्पना के भइल बा सहारा,
आपन इतिहास जाता भुलाइल,
राह छोड़ला में संकोच नइखे।

◆ ◆ ◆

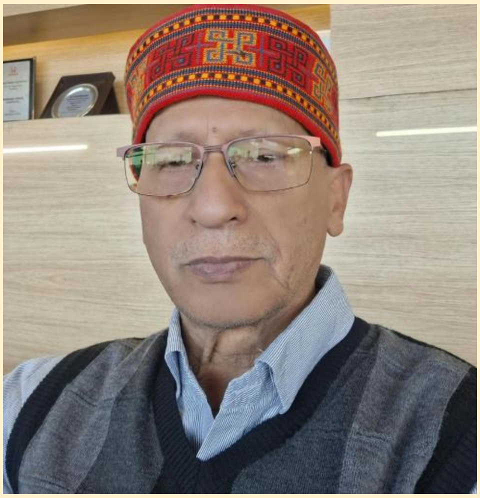

संजय कुमार राव
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

# बारह मासा

शुरू होत चइते से साल भर के खेला,
ऋतुअन के लागेला खूब नींक मेला।
खूब नींक मेला भाई, खूब नींक मेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[1.चइत]

चइते गमके मंजरी करे कोइलिया शोर,
महुआ के मातल मँहक बान्हे मन के डोर।
टिकुवा टोरत लइका, सगरो मन लहेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 2. बइसाख]

बइसाख लू के लपट, झुलसत बावे देह,
तलवा राही के जरे, छूटे सगरो नेह।
अगिया के झोंका, अगन के झमेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[3.जेठ]

जेठे के तपनी सखी, डगमग डोले प्रान,
पोखरा के माटी फटल, सूखल बा खरिहान।
घाम के तीखी लहर, केतना देहिया सहेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 4:.असाढ़]

आसाढ़े बादर उड़े, हर-पारी सज खेत,
सोन्ही माटी के महक, जियरा के हर लेत।
आशा किसाने के, बरखा के खेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 5. सावन]

सावन झूला पड़ गइल, गूँजे कजरी तान,
रिमझिम बरसे बादरा, भींजे सजी जहान।
नद्दी-नाला उमड़ल, हरियर सुख बहेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[6.भादो]

भादो रात भयावनी, चमके बिजुरी जोर,
डर लागे अन्हियार में, सूनसान चहुँओर।
मूसलधार बरखा के अतने बा खेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 7.कुआर]

फूलल का कुआर में, उज्जर भइल अकाश,
अइले दुर्गा मात के, जगल आत्म-बिस्वास।
नवरातर के घंटा जग शुभ कहेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 8.कातिक]

कातिक में छठ के बरत, गूँजे सुग्घर गीत,
दियना से जगमग भइल, जाड़े लागे मीत।
गंगा के तीरे, गजबे झंझेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 9.अगहन]

अगहन धान कटल नया, भरल सजी खरिहान,
मीठ ईख तुरि तूरि के, चाभे नया पुरान।
मेहनत के फल, आज सफल भेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 10.पूस]

पूसे में थर-थर कँपे, कुहरा लिपटले देह,
पानी देखि हिया डरे, अगिनी से बा नेह।
सिहरन बढ़ल बा, भइल जाड़ा के डेरा,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[ 11.माघ]

सरसों पियरी माघ में, ऋतु बसंत मुस्काय,
पियरी धरती पेन्हि के, दुलहन अस सरमाय।
हल्का-हल्का बा निमनिया, मन ई रहेला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

[12 फागुन]

फागुन उड़त अबीर बा, होली में चहुँओर।
बाड़ें रंगल विनायको, गतर - गतर सरबोर।
ढोल-मँजीरा बाजे, सजे फगुआ के मेहला,
बारह मास बीत जाला साँचो अकेला।

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"
श्रीकरपुर,सिवान

# गाँव शहर अब एक भइल बा

घर घर देखीं बिजली बाटे,
ओही से अब खेतो पाटे।
ए.सी, कूलर, मिक्सी, मोटर,
शहरे खनिया सेट कइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।.....

धोबी कपड़ा प्रेस करेऽले,
बिजली से हीं फ्रेश करेऽले।
बढ़ई के घर बिजली चालित,
नया नया ऑब्जेक्ट धइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।.....

जूता चप्पल खाद बिकाता,
सहरे के माहौल बुझाता।
पोली पैक में भर सामग्री,
बढियाँ से सब वेट कइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।.....

गाँव में बा अब टेंटो हाउस,
फोटोकॉपियर लेपटप माउस,
छर सिमेंट गिट्टी आ बालू,
सब जोगाड़ परफेक्ट कइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।.....

तकनीकी विकास बा आइल,
बदलल बाटे पहिरल खाइल।
बहुत सजग गाँवों बाटे अब,
ई ग्लोबल इम्पेक्ट गइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।.....

उड़ के शहर त नइखे आइल,
गाँवे से बा फलल फुलाइल।
गाँवे से बा शहर के रौनक,
भले गाँव नेगलेक्ट कइल बा।
गाँव शहर अब एक भइल बा।

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र

# नीक - बाउर

गजल नीक-बाउर लिखाइल बहुत बा l
अमर भाव मन से गढ़ाइल बहुत बा l

सबद से अरथ ले बा सुख - दुख के बतिया -
नगीचे से जिनगी पढ़ाइल बहुत बा l

भरल बाटे परथा से पोथी गजल के-
सहर अउरी गँउआ समाइल बहुत बा l

जुड़ल बा उला अपने सानी से कसके -
कि आपस में मिसरा बन्हाइल बहुत बा l

रखल बा धियाने में मतला से मकता -
नजर काफिया पर धराइल बहुत बा l

कठिन बा गजल के बहर सगरो बहुते -
रदीफे के कीमत बुझाइल बहुत बा l

समझ ब्याकरन के बहुत नइखे "कृष्णा"-
मगर कइके कोसिस रचाइल बहुत बा l

◆ ◆ ◆

कृष्ण कुमार श्रीवास्तव "कृष्णा"
हाटा - कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

# छठ गीत

उगीं ना पुरुब से सुरुज देव लेईं ना अरघ मोर हे
गंगा घटवा लगल भारी भीर भइल भिनुसार भोर हे

मनवाँ में सरधा अपार बा रउरे अधार बा हे
अब देईं ना हे देवता असीस नयनवाँ भरल लोर हे

महकेले बेदिया सुहावन अति मनभावन हे
राउर महिमा हवे बड़ भारी मचल चारू ओर सोर हे

जगमग जरेला दियनवाँ करेला उजियार मन हे
जन-जन में जगाई पिरितिया जुड़े नेहिया के डोर हे

गितिया राउर हम गाइब जग के सुनाईब हे
जवने अँगना 'असीम' अन्हार करा दीं उहाँ अँजोर हे

✍️ डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'

# दू-दू गो माई

दू-दू गो माई हमार, एक जनीं मउसी लगेली
देली सनेहिया अपार, सबका से नीमन कहेली

नव माह कोखिया में भोजपुरी रखली
हिन्दी जनमवे से पोसली-खियवली

उर्दू सजा के लिलार, माथे पर टीका धरेली
देली सनेहिया.....

नानी ह सन्सकिरित, खूब दुलरावे
हमके सिखावे, पढ़ावे, लिखावे

पढ़ि-पढ़ि के मंतरि हजार, भगिया बनावत रहेली
देली सनेहिया.....

दुनिया कहेले ई भासा ह सगरी
हमरा खातिर ह ई नेहिया के गगरी

करें 'असीम' के सिंगार, देखि-देखि हुलसल करेली
देली सनेहिया.....

✍️ डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'

# जरेला दियनवाँ

जगमग जरेला दियनवाँ महलिया के भागि जागल हो
अइलें राम जी लखन सिया साथे अवध के अभागि भागल हो

ढोल मिरदंग अउरी झाल बाजे गितिया अकास गूँजे हो
नाचें सब नर-नारी पहिनि के सनेहिया के तार तागल हो

देसवा धरम के बचावे बदे अँखिया सजग रहे हो
डारे फेरु न कुदिठिया अवध पर कवनो हुड़ार पागल हो

त्रेता में चउदह बरिस रहे कलजुग में पाँच सौ हो
हमरे राम जी के काहें दोहरउनी कठिन बनबास लागल हो

लागल त लागल अब देखिह न फेरू कवनो भेद लागे हो
अब दमकी 'असीम' अँजोरिया ई मनवाँ में आस जागल हो

✍️ डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'

# बिहान हो जाला

राति जागल बिहान हो जाला
जब केहू जिउ-परान हो जाला

जान आफति में जब परेला तब
दूर पोथी-पुरान हो जाला

मन में धइला से बाति स्वारथ के
नेह-नाता जियान हो जाला

बैर-चाकी चले त गोहूँ के
घून साथे पिसान हो जाला

चार होला त पार दिलवा के
उनके अँखिया के बान हो जाला

पोढ़ बिसवास अउरी सरधा से
मौन मूरति में जान हो जाला

लोग आपन न केहू लउकेला
जब समइया उतान हो जाला

राज हियरा के जनि बतइह तूँ
छन में उघटा-पुरान हो जाला

पाँखि उगते 'असीम' चिरई के
गोड़ तर आसमान हो जाला

◆ ◆ ◆

डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय 'असीम'
कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

# गोस्वामी तुलसीदास

जग में अमर हो गइलें,
तुलसी बाबा नमवाँ,
कि कामवाँ अइसन
कइ के गइलें ना।

राम चरित मानस के लिखलें,
अवधी में रचि रचि के।
सियाराम हनुमान के रखलें,
मनवा में बसि बसि के।
रामलला नहछू बरवै,
रामायन प्रश्न सलाका।
संदीपनी जानकी मंगल,
के नित उड़े पताका।
विनय पत्रिका की विनयन से,
सबके मनवाँ डोले।
हनुमान चालीसा सबके,
बंद आँखि के खोले।
बजरंग बाण पढ़त से,
भूत भागे अंगनवा।
कि कामवाँ अइसन
कइ के गइलें ना।

माई हुलसी के बेटा,
रहलें कवि तुलसीदास।
दुनिया की मेला में आके,
सचहूँ भइलें पास।
बाप आत्माराम के दाई,
रहली चुनिया माई।
माई बाप की ना रहला पर,
दुनिया सजी देखाई।
मूल नखत में जनम भइल त,
माई बाप के खइलें।
नाना की घर दउरल गइलें,
उहों निकारल गइलें।
पन्द्रह सौ बत्तीस ईसवी के,
शुक्ल सप्तमी आइल।
जनमत ही लइका की मुँह से,
रामे नाम सुनाइल।
राम नाम की जाप के सुनि के,
नाम पड़ल राम बोला।
गाँव नगर सब खूब चिहाइल,
अउर चिहाइल टोला।
बड़े बड़े मूड़ी पर रहे बार,
दाँत बत्तीसो।
बाबा नरहरि गुरु भेंटइलें,
ज्ञान बतइलें बीसों।
"माहिर"तुलसी कइलें,
पुस्तक के रचनवाँ,
कि कामवाँ अइसन,
कइ के गइलें ना।
जग में अमर हो गइलें,
तुलसी बाबा नामवाँ
कि कामवाँ अइसन,
कइके गइलें ना।।2।।

✍ माहिर विचित्र

# हे पन्द्रह अगस्त

हे! पन्द्रह अगस्त तूं अइलऽ।
भारत की सगरी दुश्मन के,
पकड़ि पकड़ि के कच्चे खइलऽ,
हे! पन्द्रह अगस्त तूं अइलऽ।

आजादी खातिर आजाद आ
भगतसिंह के तूं अजमइलऽ।
गांधी की चरखा में आ के,
अंग्रेजन के मारि भगइलऽ।
हे! पन्द्रह अगस्त तू अइलऽ।
हे! पन्द्रह अगस्त तू अइलऽ।।

लाल किला पर राष्ट्गान के,
आके तू हरदम दोहरइलऽ।
पीएम की हाथे रसरी बन,
तिरंगा के तू फहरइलऽ।
हे! पन्द्रह अगस्त तू अइलऽ।
हे! पन्द्रह अगस्त तू अइलऽ।।

◆ ◆ ◆

माहिर विचित्र

# अब बीरान होता

धीरे- धीरे खाली सब मकान होता जी,
बिहसत गउआँ देखीं अब बीरान होता जी।।

केहू पुछनिहार नाहीं केहू देखनिहार बा,
गाँव छोड़ि सबके अब रुचत शहर बाजार बा,
पुरुखन के जोगावल धन जियान होता जी,
बिहसत गउआँ देखीं अब बीरान होता जी।।

जवना माटी में खेल कूद के भइल लोग सेयान,
ओकरा ऊपर देत नइखे केहुओ अब धेयान,
दू चार दिन ला आ के बस एहसान होता जी,
बिहसत गउआँ देखीं अब बीरान होता जी।।

परती परल खेत खरिहान बाग बधार बिलाता,
बिगहा बेंचि कट्ठा कड़ी शहर में अब किनाता,
गली कूची दुआर दलान सुनसान होता जी,
बिहसत गउआँ देखीं अब बीरान होता जी।।

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह 'निकुम्भ'
आरा, बिहार

# हाय- तउबा मचल बा

इहाँ हर तरफ़ हाय- तउबा मचल बा
हथेली प सरसों भला कब उगल बा

मुहब्बत के  बाती बचाईं त कइसे
हवा बैर-नफरत के सगरो चलल बा

जरावल गइल बा कहीं कोई बस्ती
धुँआ कह रहल बा कई घर जरल बा

इ कइसन जमाना सभे लोग उलझल
कवन जाल में देस-दुनिया फँसल बा

भले आँकड़न में दिखत बा तरक्की
ग़रीबी इहाँ दर-बदर फिर रहल बा

रही चार दिन ही चमक चाँदनी के
इ कुल जगमगाहट नजरिया के छल बा

◆◆◆

हिमकर श्याम
मोराबादी, रांची,झारखण्ड

# प्रेम के दुश्मन पइसा

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

मदन बिहाने के निकलल तिजहरिया की बेरा सायकिल से ढहत ढिमलात घरे अइले अउरी सायकिल दुआरे खड़ा कऽ के थहरा के जाके खटिया पर पटा गइले। दुर्बल देंह के थकान एतना, कि बुझाइल बेहोश हो जइहें। पटा के लगले उल्टा सांस लेबे। तले दुआरे केहूके आहट पा के उनके मलिकाइन दमयन्ती बाहर निकलली अउरी उनके हालत देखि के पूछली,

'कहां गइल रहनीं हं?'

'इन्तखाब लेबे के रहल हऽ। लेखपाल की घरे गइल रहनीं हां।'

'झूठे न एतना परेशान बानी? जेकरा ए धन-बीत से सुख-सवारथ बा, ओकरा तऽ एइसे कौनो गरजे नइखे। तऽ रउरा का मुए के ह? ऊ लोग जब सलामिए नइखे लेत तऽ, रउरा का करे के बा? जान दिहले कौनो फायदा बा?' लेकिन मदन कुछ ना बोलले। हारि के पटाइल चुपचाप दुआरे निहारत रहले। दमयन्ती पानी ले के अइली, उठि के पियले, तब जाके जीउ तनी फुर्सताह भइल त दमयन्ती से बतियावे लगले।

'परबतिया आइल बिया।'

'ऊ लोग तऽ आवते जात रहेला। दुरपतियो बबुनी तऽ अबे बटलहीं बाड़ी?' दमयन्ती कहली

'हं, - मधुबन काका के घर ए बेरा लइकन से गुलजार भइल बा। दुरपतिया के दू गो लइका अउरी परबतियो के एगो लइकनी, तीनू मिल के घर के चिरइन की तरे गुलजार कइले बाड़े सन। मधुबन काका के घर ए बेरा सचहूं में मधुबन बनल बा!'

'जहां लइका रहिहे सन उहां गुलजार रहबे करी। रउरे नतिया घरे रहिते सन, तऽ गुलजार ना रहित।' दमयन्ती कहली। लेकिन तले मदन कौनो सोच में डूबि गइले। दमयंती भी नाती कुलिनी की याद मौन होके तड़पे लगली। लेकिन दस मिनट की बाद पति के सोच में डूबल देखि के दमयन्ती पूछली, कि 'का सोचऽतानीऽ?' तऽ मदन जइसे नींद से जागल होखसु, बड़हन सांस छोड़त लगले कहे।

'इहे सोचऽतानी कि बेटा खोजत-खोजत मधुबन काका का जब चार गो बेटी हो गइली सन, तऽ लोग का

बुझाउ कि ओकने के कवनेंगा ऊ बियहिहें। ना कौनो नोकरी-चाकरी, ना कौनो आथि अलम। बेटियने के देखि के उनके भाई तपन काका अलगा हो गइले। उनका बुझाइल कि एकट्ठा रहेब तऽ एकनी की बियाह में हमरो पइसा लगावे के पड़ी। लेकिन देखऽ, भगवान के अइसन मर्जी कि सगरिन के निमने बियहि दान दिहले। सगरी सुखी बाड़ी सन।' तले दमयन्ती बीच में बाति काटि देहली ।

'अरे बड़को रासपति बबुनी के दुलहा सरकारी मास्टर हवें। आइल रहली, तऽ कहत रहली कि उनके लड़िकवो बनारस बीएचयू से एमबीबीएस करऽता।'

'हं हो, सगरी सुखी बाड़ी सन। छोटकियो के पहुनवा इंजिनियर हऽ, -- बहुत पइसा कमाला। भगवान मधुबन काका के चार गो बेटी दिहले तऽ सुबहित दिहले। चारू सुन्दर सुकान्त अउरी जंगरइत हई सन। ओकनी के रूपे अउरी गुन देखि के सभे बियाह कऽ लिहल। सगरिन के नीमन नीमन घर में बियहले बाड़े।' कहि के मदन जोष से भरल उठि के बइठले। - 'एगो बाति कहीं तहसे?' सुनि के दमयन्ती उनकी मुंह की ओर ताके लगली। 'बेटी, बेटा लोग से लाख दर्जा नीमन बाड़ी सन। - बाप महतारी के दुःख सुनत भर में धमकि आवेली सन अउरी आके छापि लेली सन। जबकि बेटा लोग के तूं अपनिए इहां देखि लऽ। बाप महतारी की मुअलो जियला के ए लोग का तनिको भीर बा?' कहि के तनी देर चुप हो गइले अउरी फेरू कहे लगले।

'आवऽतानी तऽ देखनीं हं, मधुवन काका दुआरे बइठि के नाती कुलिनी से बतियावऽ ताड़े। देखि के केतना नीमन लागल हऽ। बुढ़ापा के इहे नू आनन्द हऽ, कि नाती कुलिनी से घर भरल होखे। उहें तपन काका अकेले दुआरे बइठि के माछी मारऽ ताड़े। उनके मलिकाइन हीलत कांपत बर्तन धोवऽ ताड़ी। ऊ कमाई, चमकत घर, रुपया पइसा, बेटन के नोकरी, कौनी काम के, कि बुढ़ापा में अकेले रहे के पड़े। घर के सिंगार बेकतिए नू हई।'

'काहें, उनहू का परिवार बटलहीं बा। दू दू गो बेटा, पतोहि, नात नतकुर सब बटलहीं बा।' दमयन्ती कहली

'कौनी काम के? नाव के अन्हारी बारी,, हूम करे के पल्लो ना। चार चार गो बेटिन के बाप मधुबन काका की घरे आजु छाछन-बिछन भइल बा। जबकि दू दू गो कमासुत अउरी अधिकारी बेटन के बाप, तपन काका की घरे भम लोटऽता। बेटा खाली मुअला पर कान्ह लगावे खातिर ना नू खोजाला। बेटा एकरा खातिर खोजाला कि बेटी तऽ अपनी घरे चलि जाई। लेकिन बेटा रही तऽ ऊ अपनी साथे रही, बाप के हिम्मत बनि के। लेकिन उनके बेटा कुल केतना सहारा बनिहे, लउकत नइखे? ई अवस्था ओ लोग के खुदे बनावे खाए के ना नू हऽ।'

'तऽ एकर निदान का बा। ई रउरो कपारे बा।'

'बटलहीं बा। हमहू अभागा बानी। आजु भगवान हमरो के एगो बेटी दिहले रहिते तऽ हमरो छाती उतान रहित कि हमनीं के सहारा बा।' कहि के चुप होके फेरू विचार की आन्ही में उधियाये लगले। दमयन्ती भी उहें बइठि के इहे कुलि सोचत रहली, तले मदन पूछले,

'कवनो जना के फोन आइल रहल हऽ का?'

'ना !'

'जाए दऽ । तुहूं जनि करिहऽ। जब ओ लोग का हमनीं से गरज नइखे तऽ हमनीं का ओ लोग से कौन गरज बा? ऊ लोग अपना के, तऽ हमनियो का अपना के। जांगर चली तऽ कऽ के खाइल जाई, नाहीं चली तऽ खेत बेंचि के खाइल जाई, लेकिन ओ लोग की आगे अधीन ना बनल जाई।' सुनि के दमयन्ती मुसुकियाए लगली,

'अरे खेतो बेंचब तऽ पइसे नू मिली, -- जांगर ना नू मिली? पइसा रउरा के पानी ना दी! रसोई ना बनाई खियाई! कपड़ा लत्ता ना फींची। पइसा एगो खाली सन्तोष हऽ, हिम्मत हऽ। परिवरिस खातिर जांगर चाहीं।' सुनते मदन ताल ठोके लगले,

'अपनीं सेवा टहल खातिर नौकर राखब। एगो के पद बा चार गो राखेब। कौनो गोड़ दबाई, कौनो नहवाई, कौनो धोती फींची, कौनो बनाई खियाई।'

'ठीक बा। लेकिन नौकर राउर धोती फींचि दी, गूह ना धोई। नोकर जहिया धोती में गूह देखी, छोड़ि के चलि दी। पइसा से केहू रसोई बना दी, लेकिन दिनभर लगे रहि के परोस के खियाई-पियाई ना। समय पर आई काम करी, अउरी चलि जाई। ओकरी बाद कब पियास लागल, कब शौच लागल, ई कुलि ऊ ना देखी। ऊ

समय से आई, अउरी समय से जाई। समय की बाद केहू मरियो जाई तऽ ऊ ना पूछी। ई कुलि उहे लोग करी जे आपन होई। रो के करो लोग चाहें हंसि के करो लोग, करहीं के पड़ी। समाज की लाजे करे के पड़ी। अबे बूढ़ नइखीं नू भइल? जब होखब तब देखल जाई।'

अबहिन तऽ दमयन्ती समझावल शुरूए कइले रहली तले उनके फोन बाजे लागल। दउरि के जा के फोन उठवली। तले एने मदन बेचैन हो गइले,

'के के फोन हऽ हो?

'बड़कू हवें।' सुनते मदन के रिसि ओरा गइल अउरी दउरि के दमयन्ती की लगे जाके कान लगा के लगले फोन सुने कि बड़कू का कहऽ ताड़े। सगरी हाल चाल की बाद बड़कू माई से पूछले, 'पापा कहां बाड़े?' सुनि के मदन हाथ लगले डोलावे कि मति बतावऽ। दमयन्ती भी कहि देहली कि 'होने दुआरे बाड़े। दिन राति बेबात के बात बतियावऽ ताड़े कि बुढ़ापा में हमनीं के देखवइया केहू नइखे।'

'ओ हो, अबे बूढ़ हो गइले का?'

'ए बाबू, ऊ नब्बे बरिस के पुरनिया हो गइल बाड़े, एकदम अथाऊर। एहिंगा बतियावते बाड़े। एगो काम करऽ साग शब्जी खातिर उनके कुछू पइसा भेजि दितऽ। रोजे कहऽताड़े।

'काहें, गेहूं बेंचले, ऊ खतम हो गइल का?'

'हं ! खेती में सब लागि गइल।'

'त अउरी बेंचि लेसु। अउरी बा नू?'

'बा, तऽ कहऽताड़े कि रेट बढ़ी तऽ बेंचब।'

'त मुअसु खइला बिना। पइसा के गरज होई तऽ रेट खोजल जाई, कि बेंचि के काम चलावल जाई। कहां बाड़े? तनी देबू।'

दमयन्ती से मोबाइल ले के मदन कान से लगवले। तले ओने से बेटा के आवाज आइल, 'पापा।' सुनते मदन का हुलास आ गइल अउरी रोवे लगले। गंटई रुन्हा गइल। ओने से बड़कू कहे लगले, 'गेहूं जब बटलहीं बा त बेंचि के काम चलावऽ।' लेकिन मदन कुछ ना बोलसु। बड़कू आपन धुनले रहले। कुछ देर बाद मदन अपना के संयत करत कहले,

'का करीं बाबू, दिन पर दिन जिनगी अकेल भइल जाता। बुझाता कि जिनगी के कौनेंगा पार घाट लागी।'

'काहें? अबे बूढ़ हो गइलऽ का?'

'अउरी ना त का? पैसठ साल के उमिर हो गइल हमार।'

'ठीक बा। बूढ़ हो गइलऽ तऽ घर में ताला मारि के चलि आवऽ लोगें हमरी लगे।'

'कौनेंगा आई? इहां बाप के बुनियाद बा, खानदानी जायदाद बा। चलि आईं तऽ सब हेन-पतर तऽ हो जाई।

'तब हमहीं नौकरी छोड़ि के चलि आईं का? बिना कमइले हमरी परिवार के गुजर हो जाई! अगर हो जाई तऽ कहऽ, आजा तानी? खेती की कमाई से अगर बर बाजार, रोग बियाधि, पढ़ाई लिखाई सगरी हो जाउ तऽ का गरज बा हमरा परदेश में रहला के।'

'ना बाबू, हम ई नइखीं कहत।'

'तऽ का कहऽ ताड़? हमरा खातिर ना नोकरी छोड़ल सम्भव बा, ना बाप महतारी के। लेकिन स्थिति ई बा कि जहां बाप महतारी बा उहां नौकरी नइखे, अउरी जहां नौकरी बा उहां बाप महतारी नइखे। तऽ का करीं बताव?' बेटा के बाति मदन चुपचाप फोन कान से सटवले सुनत रहले, 'अरे, जबले पार लागऽता रहऽ होगें गांवे। जब पार ना लागी तऽ चलि अइहऽ लोगें। मन करी हमरी लगे रहिहऽ लोगें, मन करी छोटका की लगे रहिहऽ लोगें। लेकिन ई जानि लऽ कि पइसा चाहीं तऽ प्रेम छोड़े के पड़ी।

बेटा के तर्क सुनि के मदन मोबाइल दमयन्ती के दे के दुआरे खटिया पर आके पटा के सुमगुम होके सोचे लगले। तनी देर बाद दमयन्ती भी जब फोन कटल तऽ बाहर निकलली अउरी मदन उनके देखि के कहे लगले।

'सही में दुःख के कारण ई पइसा बा। पइसे खातिर लइका परदेश में दुःख भोगऽ ताड़े सन। आजु अगर पइसा ना रहित नू, तऽ हमार परिवार हमरी लगे रहित। ऊ जमाना केतना नीमन रहे, जब सभे लगे रहे। बाप-महतारी रहे, भाई-भउजाई रहे, बेटा-पतोह रहे,

नाती-नतकुर रहे। एके गो खटिया पर माई हमनीं, दू दू गो बेटा अउरी दू दू गो बेटिन के ले के सूति रहे। केहू ओकरी छाती पर सूते, तऽ केहू गोड़े पर। लेकिन ओ बेरा ई दुःख दुःख ना बुझाउ। दादी जब खाए बइठसु तऽ हमनी का चारू भाई बहिन उनकी थाली की चारू ओर घुरिया के बइठीं जा। दादी सबकी मुंह में एकहक कौर खियवला की बाद खासु। एक लगे रहले सबका सबसे प्रेम रहे। लेकिन आजु पइसा प्रेम छीनि लेहलस। पइसा खातिर सब छींटा गइल। प्रेम खतम बा। आजु ना बाप बा, ना महतारी बा, ना भाई बा, ना भउजाई बा, ना बेटा बा, ना पतोह बा। बस पइसा बा। सही में प्रेम के दुश्मन पइसा बा।

◆◆◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
भठहीं बुजुर्ग कुशीनगर

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

# गज-लोक

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

प्राचीन काल से ही गज यानी हाथी भारत में ही ना बल्कि, संपूर्ण एशियाई क्षेत्र में सांस्कृतिक चेतना में एगो सबसे बड़हन आ विराट जीवित प्राणी के रूप में उपस्थित रहल बा। जइसन कि हमनी जान तानी कि हाथी के खाली गज नाम से ही ना बल्कि कुंजर, हस्ती, करी, मतंग, नाग आ वारण जइसन अनेक नामन से भारत में पुकारल जाला।

मानल ई जाला कि हाथी जहाँ एक ओर अपना पीठ पर देवता लोगन के वहन कइले बा, उहई दोसरा ओर राजा लोगन के युद्धभूमि तक पहुँचवले भी बा। गज प्राचीन से अर्वाचीन काल तक विज्ञान, साहित्य, मिथक, आ अनुष्ठान के विषय रहल बा; साथ ही गज व्यापार, कला आ सांस्कृतिक परम्परा के भी अभिन्न अंग रहल बा। मानल ई जाला कि गज के स्वरूप ही अइसन बा कि ऊ सहज ही भक्ति, मनोरंजन के ही ना बल्कि मनुष्य के कलात्मक अभिव्यक्ति- विशेष रूप से चित्रकला आ मूर्तिकला- के महत्त्वपूर्ण माध्यम बन जाला।

भारतीय संस्कृति आ सनातन परम्परा में गज खाली एगो पशु ही ना ह, बल्कि ई शक्ति, बुद्धि, शुभता आ करुणा के प्रतीक भी ह। एह से एकरा के भारतीय परम्परा आ संस्कृति में बहुत ही शुभ आ पूजनीय मानल जाला। इहाँ तक कि अपना इहाँ कवनों भी शुभ काम के शुरुआत गजानन गणेश के पूजा से ही कइल जाला। एतने भर ना, गजानन के भारतीय संस्कृति में केतना ऊँचा स्थान बा एकर अनुमान एह बात से लगावल जा सकेला कि अपना इहाँ कवनो भी शुभ काम के शुरुआत करे खातिर जे मुहावरा बनल बा, ओह मुहावरा के ही कवनो काम के 'श्री गणेश' कइल कहल जाला।

दक्षिण एशियाई सभ्यता में गज के उपस्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई देला। भारत में प्रचीन काल से ही गज के साक्ष्य मिलल बा। उत्खनन से प्राप्त सिन्धु घाटी के सभ्यता के मोहरन पर हाथी के चित्र त मिलले बा। एकरा साथ ही

मृण्मूर्तियन (Terracotta) पर अंकित गज के छवि भी मिलल बा, जे एह बात के प्रमाणित करता कि अपना धरती पर बड़हन-बड़हन साम्राज्यन के उदय होखे के पहिले से ही गज हमनी के सभ्यता, सांस्कृतिक आ प्रतीकात्मक अर्थ से बहुत गहराई से जुड़ चुकल रहे। सिन्धु घाटी के सभ्यता के समय इहाँ के लोगन के हाथी के बारे में जानकारिये भर ना रहे, बल्कि ओह सभ्यता में हाथी के बहुत महत्त्व भी रहे। एही से नू, उहाँ के मोहरन पर हाथी के चित्र अंकित रहे। दक्षिण एशिया से लेके दक्षिण-पूर्व एशिया तक फइलल व्यापक सांस्कृतिक संसार में शायद ही कवनो अन्य पशु मानव-जीवन में एतना बहुआयामी स्थान प्राप्त कइले होखे। काहेकि गज एके साथे कई भूमिका के वाहक रहल बा। ऊ एके साथे एगो पवित्र आ राजनीतिक, पूजित आ शोषित, स्वतंत्र आ श्रमशील के प्रतिनिधित्व करेला। एह से ई एशियाई इतिहास आ संस्कृति के सबसे जटिल तथा अर्थपूर्ण प्रतीकन में से अपना के एक बनावले बा।

जहाँ ले हम समझतानी कि ब्रह्मांड के जेतना हाथियन के जरूरत रहे, ओतने जरूरत राजा लोगन के भी रहे। एही से राजा-महाराजा लोगन के सेना में एगो गजसेना भी रहत रहे। मानल ई जाला कि प्राचीन काल में पाटलिपुत्र के मौर्य सम्राटन के लगे जइसन विशाल गज सेना रहे, वइसन विशाल गजसेना ओकरा पहिले संसार कभी देखले ना रहे। चाणक्य के अर्थशास्त्र में 'गजसेना' के बहुत महत्त्व देहल गइल बा। काहेकि समय के ओह काल खण्ड में गज युद्ध के समय एक तरह से टैंक के काम करत रहे। एही से सम्राट अशोक के लगे भी एगो बहुत बड़हन गजसेना रहे। बाद के काल खण्ड में भी गज के शाही सवारी कवनो राजा के रुतबा बढ़ा देत रहे। एही से राजा-महाराजा लोगन के शाही सवारी, जे प्राय: 'गजशाही सवारी' ही होत रहे, के बहुत महत्त्व रहे। मुग़लकाल में भी हाथी के पाले वाला लोगन के पूरा के पूरा गाँवे रहत रहे। अवध के नवाब के शोभा यात्रा त पूरा उप महाद्वीप में प्रसिद्ध रहे। हाथी राजनीतिक शक्ति के सर्वोच्च साधन आ सबसे प्रभावशाली प्रतीक रहे। समय के ओह खण्ड में हाथियन पर नियंत्रण रखे के अर्थ होत रहे ओह भू-भाग पर आपन नियंत्रण रखल। इहाँ तक कि राजा लोगन के बीच हाथी भेंट कइल एक तरह से आपसी मित्रता आ कूटनीतिक संबंध के घोषणा भी होत रहे। कवनो राजा के हाथी पर आरूढ़ युद्ध भूमि में उतरला के अर्थ इहो होत रहे कि ओह राजा के ओह भूमि पर आपन वैध अधिकार के दावा कइल।

जइसन की अपने सभे जान तानी कि कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' मौर्यकालीन शासन काल के, विशेष रूप से चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के राज्य-व्यवस्था, कृषि, आर्थिक व्यवस्था , सामाजिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, आ धार्मिक व्यवस्था के ज्ञान-भंडार ह। एकरा के एह तरह से भी कह सकेनी कि ई राज्य-प्रबंधन विषयक ऊ महान ग्रंथ ह, जे पाटलिपुत्र में रचल गइल रहे। एह ग्रंथ में भी कौटिल्य मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के समय के हस्तिशाला, ओकरा प्रबंधन पर एगो पूरा अध्याय समर्पित कइले बाड़न। एतने भर ना एह अध्याय में हाथियन के अनेक गुण आ विभिन्न सैन्य कार्य में हाथियन के उपयुक्तता के आधार पर कौटिल्य द्वारा वर्गीकृत भी कइल गइल बा। कौटिल्य के एह ग्रंथ में हाथी अउर वन के राज्य के एक मूल्यवान सम्पदा मानत ओकरा संरक्षण के व्यवस्था निर्धारित कइल गइल बा। साथ ही एह ग्रंथ में राजकीय हाथियन के क्षति पहुँचावे भा ओकर दुरुपयोग कइला पर मौर्य काल में दंड के विधान के भी चर्चा बा। ओह समय हाथी खाली युद्ध के एगो उपकरण, चाहे कवनो राज्य के वैभव के प्रतीक भर ना रहे, बल्कि हाथी राज्य व्यवस्था आ शासन के संरचना के अभिन्न अंग रहे। ओही परिवेश में हाथियन से संबंधित संस्कृत ग्रंथन यथा- गजशास्त्र आ हस्त्यायुर्वेद- जइसन ग्रंथन के रचना भी भइल। एही ग्रंथन के साथे चाणक्य के अर्थशास्त्र के भी रचना भइल, जवना में राजकीय हस्तिशाला से जुड़ल अध्यायन में राजकीय हाथी के हत्या के अपराध के श्रेणी में डालल गइल बा। एह तरह से हाथी राज्य के सम्वैधानिक व्यवस्था के भी एगो अंग बन गइल।

अभी तक के ज्ञात स्रोतन से पता चलल बा कि हाथी के मौर्यकालीन ज्ञात सबसे अधिक प्राचीन आकृति बराबर के चट्टानन में ही उकेरल गइल रहे। मौर्यकाल के बाद भी ई कड़ी टूटल ना। इहाँ तक कि मुग़लकालीन

बादशाहन के समय त हाथियन खातिर पूरा के पूरा नगर ही बसा देहल गइल रहे। एतने भर ना मुग़ल बादशाह लोग त हाथियन के अपना युग के कलाकारन खातिर एगो अतिप्रिय विषय ही बना देहले रहे। ओह समय हाथियन के एतना महत्त्व रहे कि हाथियन पर अधिकार होखे के अर्थ ही होत रहे, उहाँ के भूमि आ सत्ता पर अधिकार । ई स्थिति ओह समय तक बनल रहे, जबले अंग्रेजन के भारतीय सत्ता पर अधिकार ना हो गइल। अंग्रेजन के हिन्दुस्तान के सत्ता पर अधिकार होते ही सबसे पहिले इहे काम भइल कि ओह दरबारन के ही भंग कर के ओकरा के नष्ट कर देहल गइल, जवना दरबारन के आदेश पर हाथी के समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त रहे।

गज के अस्तित्व कवनो साधारण पशु के तुलना में अधिक प्राचीन आ अधिक विराट बा। इहाँ तक कि हाथी के विशाल आकार ब्रह्मांडीयता के आभास करावेला; गज के बुद्धिमता आ स्मृति ज्ञान के संकेत देला। जबकि ओकर कोमलता आ ओकर प्रकोप दिव्य शक्ति के संपूर्ण व्यापकता के व्यक्त करेला। एशियाई हाथी, Elephas maximus, ओह वंशावली के उत्तराधिकारी ह, जेकर जड़ प्लाइस्टोसीन काल में ढाई मिलियन बरिस से भी अधिक पीछे ले पहुँचे ले, ओकर पूर्वज Elephas hysudricus आजो शिवलिक पहाड़ियन में जीवाश्म अस्थी के रूप में विद्यमान बा। जे लोग हाथी के कल्पना एगो ब्रह्मांडीय सत्ता के रूप में कइले रहे, ऊ लोग अइसन जीव के साथे रहत रहे, जे ओह लोगन के देवता से कहीं अधिक प्राचीन रहे।

गज के राजनीतिक चाहे श्रमिक पशु बनला के पहिले ऊ एगो ब्रह्मांडीय प्राणी रहे-एगो अइसन जीव, जे एके संगे धरती, आकाश आ जल से जुड़ल रहे। मान्यता त ई बा कि आठ हाथी आठो दिशा में खड़ा होके एह संसार के अपना पीठ पर थमले बा। देवराज इंद्र अपना श्वेत गज, जेकर नाम ऐरावत रहे, के पीठ पर सवार होके विचरण करत रहलें। ऐरावत केवल इंद्र के वाहन ही ना मानल जाला, बल्कि ऊ वर्षा आ बादल के वाहक भी ह, जे धरती के उर्वरता आ प्रचुरता के संदेश लेके आवेला।

गज के संबंध नवजीवन से भी जोड़ल जाला। काहेकि जन्म लक्ष्मी जी के होखो भा गौतमबुद्ध के, दुनु में गज के वर्णन आवेला। मानल ई जाला कि जब लक्ष्मी जी के जन्म भइल, तब हाथी उनका के स्नान करवले रहे आ नवजीवन के पवित्र जल उनका शरीर पर उड़ेलले रहे। अइसहीं जब रानी माया के गर्भ में बुद्ध अइले, तब एगो श्वेत हाथी रानी माया के एह बात के संकेत देहलस कि ऊ बुद्ध के जन्म दिहें।

गज अपना पवित्र मिथक से निकल के समय के हिसाब से पत्थर में रूपायित हो गइल। जहाँ तक हमरा जानकारी बा, उड़ीसा के सबसे प्रारम्भिक शैल-उत्कीर्ण मूर्ति एगो हाथी के ही बा, जेकरा के 257 ईसा पूर्व भुवनेश्वर के नजदीक धौली में तराशल गइल रहे। एह दुर्लभ प्रतिमा के मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में कलिंग युद्ध के तुरत बाद एगो जीवित शीला पर स्थानीय शिल्पकार लोगन द्वारा उकेरल गइल रहे।

समय के साथ गज दरबार, मंदिर, शास्त्र आ व्यापार तक ही सीमित ना रहल, बल्कि ओह दुनिया से अलग जन साधारण के दैनिक जीवन के कल्पना में भी प्रवेश कर गइल। हमनी भोजपुरिया खातिर हाथी आनन्द के भी प्राणि ह, आ शोक के भी। एही से भोजपुरी लोकगीत में एकर दुनु रूप में चर्चा भइल बा। हाथी विवाह, धार्मिक जुलूस, उत्सव, मेला आ सामुदायिक जीवन के एगो हिस्सा ह। एही से बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र के मधुबनी चित्रकला में हाथी मंगल प्रतीक के रूप में दिखाई देला। ऊ विवाह आ पर्व के चित्र में भी दिखाई देला। एतने भर ना, हाथी के विवाह, धार्मिक जुलूस भा कवनो पर्व-त्योहार के मांगलिक अवसर पर भी आगमन होला। आजो गाँव के घर के बाहरी दीवार पर, कोहबर में, अँगना के चबुतरा पर हाथी के चित्र बड़ा मनोयोग से उकेरल जाला। एकरा अलावें कइगो दोसरो पारिवारिक आ सांस्कृतिक कार्यक्रम आ अनुष्ठान में भी हाथी के चित्र बनावल जाला। घर-दुआर पर हाथी के जवन चित्र बनेला ऊ कोई नामचीन कलाकार ना बनावे, बल्कि घर के ही महिला लोगन द्वारा बनावल जाला, जवना का चलते घर के छोट-

छोट बच्चियन में भी ई पारम्परिक चित्रकारी आ जाला। एह तरह से ई पारम्परिक चित्र-कला एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी में हस्तांतरित हो जाला। एह तरह से घर के महिला लोगन द्वारा उकेरल भित्तिचित्र के शुद्ध कला के श्रेणी में ही ना रखल जा सकेला। काहेकि ई कला भी ह आ अनुष्ठान भी।जवना में कला आ अनुष्ठान के एक-दूसरा से अलग करके ना देखल जा सकेला, काहेकि ई एक ही साधना के दुगो रूप ह।

हाथी लोक कल्पना के संसार में, राजनीतिक संसार से भिन्न आ पवित्र होला। हाथी के दरबार आ मंदिर धार्मिक आ राजनीतिक व्यवस्था के वाहक बनावेला। जबकि लोक परम्परा में हाथी अधिक निजी आ आत्मीय अर्थ प्रदान करेला। कवनो गाँव के आदमी के घरे देखल हाथी के स्मृति, नानी-दादी से सुनल कहानी के पात्र के रूप में हाथी, चाहे कवनो पारिवारिक अनुष्ठान में बार-बार दोहरावल जाये वाला हाथी के आकृति ओह अनुष्ठान के अर्थ के अभिन्न हिस्सा बन जाला। एह सब के असर ई भइल बा कि आज आम आदमी खातिर हाथी खाली शक्ति आ पवित्रता के प्रतीक भर ही नइखे रह गइल, बल्कि ऊ एगो पड़ोसी नाहिंन भी लागे लागल बा, जे अप्रत्याशित भी रहेला आ भव्य भी। बाकिर हमनी के हाथी पर शासन नइखे करेके, बल्कि ओकरा साथे हमनी के रहे के सीखे के बा।

हाथी के जब हम वर्तमान संदर्भ में देखेनी त पावेनी कि हाथी के अर्थ होला हजारो वरीस के साझा इतिहास, औपनिवेशिक समय में आइल परिवर्तन, 1989 में हाथीदाँत के व्यापार पर लागल प्रतिबंध आ हाथी के संरक्षण संबंधी संकट। काहेकि अंधाधुंध जंगल के कटाई से सिकुड़त जंगल के कारण हाथी आ मानव वस्ती के बीच टकराव अब शुरू हो गइल बा। एह परिस्थित में हाथी आज एक ही साथे आदमी के साथ के हाथी के सांस्कृतिक स्मृति, आज के परिस्थिति से उत्पन्न चिंता आ संरक्षण के चुनौती के प्रतीक बन चुकल बा। एह से आज हाथी के अतीत के प्रतीक के रूप  में ना बल्कि वर्तमान के जटिल वास्तविकता आ भविष्य के संभावना के संदर्भ में रूप में देखे के जरूरत बा।

भारत में प्राचीन काल से हाथीदाँत के बनल सामानन के व्यापार होत रहल बा। ई व्यापार देश के अंदर आ देश के बाहर, दुनु जगह होत रहे। देश के अंदर प्राय: राज परिवार आ आर्थिक आ राजनीतिक रूप से प्रभावशाली लोगन तक एकर पहुँच रहे। देश के बाहर एकर व्यापार ओह ऐतिहासिक प्राचीन व्यापारिक मार्गन से आरम्भ भइल रहे, जे मार्ग भारत के व्यापारियन के भारत से फ़ारस, आ रोम तक ले गइल रहे। हालाँकि हाथीदाँत के बनल सामानन के ई इतिहास मुग़ल दरबार से होके ही गुजरत रहे, जवना के अनुमति आ सहयोग से ही हाथीदाँत के तराश के अत्यन्त परिष्कृत आ कलात्मक वस्तु बनत रहे। आगे चल के एही कलात्मक वस्तुअन के कलाकार लोग अपना शिल्पकला के द्वारा सौन्दर्य, उपयोग आ आनन्द के सामान में रूपांतरित कर देहलस। भारत में सैकड़न साल से आदमी द्वारा अपना शौक खातिर हाथीदाँत से शतरंज के मोहरा, खेल के सामान, सुन्दर नक्काशीदार डिबिया, कागज़ काटे के औज़ार, पंखा आ हाथीदाँत के छोटा-छोटा कलाकृति बनावल जा रहल बा, जे अपना आकार में छोट भइला के बावजूद भारतीय हाथीदाँत शिल्पकला के उत्कृष्ट नमूना बा।

अपने सभे त जानते बानी कि हाथीदाँत कवनो सामान ना ह, बल्कि ऊ हाथी के शरीर के एगो अंग ह। बाकिर हाथीदाँत के बनल सामानन के व्यापार भारत से सैकड़न बरीस से होत रहल बा। हालाँकि मध्यकाल में हाथीदाँत के सामान के व्यापार होत रहे। बाकिर एकर अर्थ ई ना रहे कि अपना व्यापार खातिर कवनो हाथी के मार के ओकर दाँत निकाल लेहल जाव, अपना कलात्मक वस्तु के निर्माण खातिर। मुग़लकाल में भी अपना कलात्मक सामाग्री बनावे खातिर सिर्फ ओही हाथी के दाँत के प्रयोग कइल जात रहे, जेकर सेवा के दौरान मृत्यु हो जात रहे, भा जवना हाथी के स्वाभाविक मृत्यु हो जात रहे। बाकिर औपनिवेशिक काल में स्थिति एकदम से बदल गइल। उन्नीसवीं सदी में यूरोप में हाथीदाँत के माँग बढ़े लागल, जवना के पूरा करे खातिर हाथियन के शिकार आ हत्या के घटना भयानक रूप से बढ़ गइल। अफ्रीका में त हाथियन के जनसंख्या

में अप्रत्याशित रूप से कमी आइल। भारत में भी अब हाथियन के स्थिति कवनो संतोषजनक ना रह गइल, काहेकि जवना हाथीदाँत के शिल्प परम्परा आ ओकर नियंत्रित उपयोग नैतिक मर्यादा आ श्रद्धा के भीतर विकसित भइल रहे ऊ अब औपनिवेशिक शासन के दौरान औद्योगिक संहार के शिकार हो गइल।

मानल ई जाला कि बिहार के सोनपुर के लगे 'गज-ग्राह' के बीच युद्ध भइल रहे। 'भागवत पुराण' में 'गज-ग्राह युद्ध' के कथा बाटे। एह से धार्मिक दृष्टि से गज के बुद्धि, समृद्धि के प्रतीक के रूप में भी देखल जाला आ गणपति स्वयं गजानन के साथे बुद्धि, समृद्धि आ विघ्नहर्ता के रूप में प्रथम पूज्य मानल जालन। गजमुख गणेश विघ्न के नाश करेंले। एह से जीवन के कवनो शुभ अवसर होखे- छट्ठी-छीला होखे भा बिआह- शादी होखे, गणेश जी ही पहीले पूजल जालें। इहाँ तक कि कभी कवनो पढ़ाई-लिखाई के काम भी शुरु कइल जाला त ओहू में गजानन ही सबसे पहिले पूजालें। कहे के मतलब ई कि भारतीय संस्कृति में कवनो शुभ काम के शुभारंभ में सबसे पहिले गजमुख ही पूजल जालें। सनातन परम्परा में गज के बहुत अधिक महत्त्व बा। बाकिर एकर अर्थ ई ना भइल कि गज के महत्त्व खाली सनातन परम्परा आ बौद्ध धर्म में ही बा। जैन परम्परा में भी गज के बहुत महत्त्व बा। काहेकि जैन परम्परा में जवना चौदह सपना के कवनो तीर्थंकर के जन्म के घोषणा मानल जाला, ओह में हाथी के स्वप्न सबसे पहिले आवेला। हाथी से जुड़ल ई सब प्रतीक आ ओकर अर्थ खाली दक्षिण एशिया तक ही सीमित ना रहे, बल्कि दक्षिण एशिया के व्यापारियन आ बौद्ध धर्म के भिक्षुअन के साथे यात्रा करत एह पूरा महाद्वीप में ई फइल गइल। एकर नतीजा ई भइल कि बुद्ध के जन्म के भविष्यवाणी करे वाला ऊ श्वेत गज बर्मा से लेके कंबोडिया तक पहुँच गइल आ उहाँ के राजसत्ता के वैधता आ शासक के अधिकार के सर्वोच्च प्रतीक बन गइल।

पहिले जवना हाथियन के राजशक्ति के रूप मानल जात रहे, ओही हाथियन से मनुष्य के ज्ञान के एगो समृद्ध परम्परा के नींव पड़ल, उहे संवृद्ध परम्परा के अवलोकन, अनुभव आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण के माध्यम से विकास होत गइल। खासतौर पर महावत के बीच देखभाल आ प्रशिक्षण के परम्परा हाथियन के व्यवहार आ पर्यावरण के समझ के दरसावेला। 'गजशास्त्र', 'हस्ति विद्यार्णव' आ 'मातंगलीला' जइसन ग्रंथन में हाथियन के वर्गीकरण, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य, युद्ध में ओकर प्रयोग आ पशु-चिकित्सा संबंधी विधियन के वर्णन मिलेला। एही तरह के परम्परा दक्षिण-पूर्व एशिया के हस्तलिखित पुस्तकन आ ज्ञान के माध्यम से आगे बढ़त रहे।

अंत में हम इहे कहे के चाहब कि भारतीय ज्ञान-परम्परा के देखत-समझत गज से संबंधित अपना कवनो जिज्ञासा के शांत करे खातिर केहू जिज्ञासु के एह बात के समझे में देर ना लागी कि कइसे-कइसे हाथी सांस्कृतिक, पारिस्थितिक आ राजदरबारी जीवन के भीतर विशेषज्ञता आ ज्ञान के विशिष्ट प्रणालियन के आकार देहलस।

◆ ◆ ◆

डॉक्टर ज्योत्स्ना प्रसाद

# करा सन

आज करा ना काल करा सन
करे के जे तत्काल करा सन

अपने हित ना देखा लोगन
दूसर के भी ख्याल करा सन

प्यार मोहब्बत छींटा बोवा
दुनियाँ मालामाल करा सन

मन ही मन में कूढ़े से अच्छा
होखे जवन सवाल करा सन

एक्के चिनगारी काफी बाटे
फूँक के इहे मसाल करा सन

जिनगी के संग चले के बाटे
तेज तनी सा चाल करा सन

◆ ◆ ◆

राम अचल पटेल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

# सहोदर भाई

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

कुकुर के टंगरी उठवला से दरियाव में बाढ़ ना आवेला बाकिर झगरू आदत से लाचार रहन। नीमन-बाउर कइसनो बात प झझुआत रहन। सुरियाह त खूबे । दिनभर गरम दूध जस फफाते रहस।गाँव के लोगन में इनका खीस के खिस्सा मसहूर रहे। इनकरा में एगो बरियार खुबियो रहे कि कवनो काम में लंगोटा खोसि के भीड़स त ओकरा के पूरा करिए के मानस।

झगरू आ कवल सहोदर भाई रहन। दूनो भाई के एक दाँत के रोटी ओला संबंध रहे। एक-दोसरा खातिर जान देवे प तत्पर । आपस में खूबे सलाह होत रहे। पकवा संघतिया जस। एक दोसरा खातिर खुला किताब रहन। जेकरा जवन पन्ना चाहे उलट-पलट के पढ़ लेवे। कवनो बात एक भाई भीरी दबल ना रहत रहे। जब तक आपस में सभ बात के तास जस फेटस ना तब तक दूनो भाई के पेट के पानी ना पचत रहे।

झगरू बधार आ दुआर प के काम देखस आ कवल पढ़ल-लिखल रहन त सरकारी विद्यालय में पढ़ावत रहन। झगरू सज के खेती-गिरहती करत रहन आ कवल बाहर वाला काम हाट-बाजार,नेवता-हकारी करस। दूनो भाई साँझ के पहर दिन भर के कइल काम प विचार आ सलाह करस। कबो-कबो कवनो बात प जिरह भी होखे। झगरू कबो-कबो झझुआ के कवल के हुरपेट देत रहन त कवल अरुआइल पीठा जस मुँह बना लेस बाकिर इनकरा बात के दुख ना मानस। झगरू तनिके देर बाद कवल से कहस कि हमरा खीझ के दिल प ना लेनीं। हमार खीझ बहुते बाउर बा। ई हमनीं के कहियो गेंगो करवा दीही। कवल कहस कि तनीक दाँति लगावे के भी सीखS।

दूनो लोग के सादी-बिआह भइल। नीके-नीके खुसी से साल माथ लागे लागल । दूनो भाई के आपसी एकता गाँव में मिसाल बनल रहे। कहल बा कि लक्ष्मी आवेली त छप्पर फाड़ के आवे ली। खेती-बधारि आ सरकारी नोकरी के पइसा आपन रंग देखवलस। सहर आ गाँव में बढ़िया मकान ओरचलन लोग। गाँव के पहिलका थरेसर इनके लोग के किनाइल। दिन दूना रात चौगुना विकास होत रहे।

गरीबी के पथर प जब अमीरी के घास टटका-टटका लहचह होला त आँखि प गुरुर के छोपनी लागि जाले। फिरु लोग इतराए लागेलन। अब ना बुझाला कि ईतरी के भतरा ,भुँआ धरि की भढ़सरा।

झगरू के बेकत एक त गरीब घर से आइल रहली दोसरे ससुरार में अनघा चीज-बस्तु लउके लागल आ ऊपर से बिखिआहो रहली ।एक त करइला अपने तीत दोसरे चढ़लन नीम के डाली। झगरू के बेकत बात-बात प अपना गोतिन से अझुराए लगली। झगरू आपन बेकत के लेके फिकिर करस। कवल के बेकत सहमिलू आ सांत सोभाव के रहली। ई बात के जानकारी झगरू के बढ़िया से रहे काहेकि ऊ ढेर घरे-दुआरे रहत रहन। कवल ढेर नौकरी आ हाट-बाजार के चक्कर में बाहरे रहत रहन एहिसे इनका सभ बात के जानकारी ना रहे ।इनकर बेकत दूनो भाई के आपसी स्नेह देख के कलह-कुकुहार के बात इनका से ना बतावस कि परिवार चलावे खातिर तनि महटियावल जरुरी होला। झगरू कवल के बेकत के खूबे मानत रहन।

एक दिन झगरू बात-बात में कवल से अपना दिल के बात कहलन कि " तू ढेर भागमान बाड़S भाई ! तोहार बेकत हीरा बाड़ी । तोहरा भाग प हमरा डाह होला। हमार त करमवे जरल बा। हमार बेकत एकदमे करकसा बिया। बात-बात प कलह-कुकुहार करत रहेली। ई त तोहार बेकत गउ बाड़ी कि घर चलत बा ना त कहिए अलगाउज हो गइल रहित। हमरे बेकत कहियो अलगाउज के बिगुल फूँकी। भइया हमनीं के एकरा से चेतले रहे के होई।" कह के झगरू अरुआइल पीठा जस मुँह बना के मेहरा गइलन। कवल मुँह बाइ के सभ बात अचरज से सुनत रहन। दिल धक् से कइलस। इनकरा देहे कटले खून ना बाकिर अपना के सम्भालत कठकरेज क के झगरू के ढाढ़स बन्हवले " ना रे मरदवा ! हमनीं दूनो भाई ठीक रहे के त बेकत लोग टरटरात रह जइहन आ हमनीं के जस के तस रहे के।" झगरू धधाके कवल के अकवारि में धर लेलन आ नबोज बालक जस सिसके लगलन । कवलो के मन ढीठ कइलो प आँखि में पानी आ गइल।

झगरू आ कवल के माई-बाप बचपने में स्वरग सिधार गइल रहन। कवल के पढ़ा-लिखा के सिक्षक बनावे में झगरू के अनघा संघर्स आ तेयाग लागल रहे। दिन-रात एक क के अपना बूता से अधिक कवल के पढ़ाई-लिखाई कराके सिक्षक बनवलन । झगरू के तेयाग आ संघर्स देख के गाँव के लोग-बाग दाँते अंगुरी काटत रहन। एकर नेकी कवलो देत रहन। अपना नोकरी प पहिला अधिकार झगरुए के समझत रहन तबे नू अपना महीना के सभ रकम झगरू के हाथ प ध देत रहन आ आपन खेवा-खरच खातिर हर एतवार के झगरू से मांगस।कवल एकदम गऊ रहन। झगरू के अलगाउज ओला बात दिल में हूक बइठा देले रहे।

समय कटत देर ना लागे , उहो जब समय के सुख के पाँखि लागल होखे त दिन अउरि झटकले बितेला। महीना आ साल के अटकरे ना लागेला। देखते-देखते गुजर जाला बाकिर समय ढेर बालवानो

होला। ई इतिहास बदले आ गढ़े के बूता राखेला।

उहो दिन माथे आइल जब झगरू आ कवल के लइका सेयान हो गइलन। झगरू के बेकत के कलह के आगि अतना धधकल कि झगरू आ कवल के लाड़-प्यार जरि के स्वाहा हो गइल। ऊपर से लइकन के दबाव के उरेब अतना भारी पढ़ल कि दूनो भाई के मजबूरन बोलचाल छूटि गइल। दूनो भाई अलोता एकांत में मिलस त एक-दुसरा के अकवारी में ध के रोवस। लइकन के चलते विवस रहन लोग। आंगन में गेड़ी लागे से आपस में देखा-दरसन मोहाल हो गइल रहे। एहिसे खेती-बाड़ी के बहाने बधारि में मिलस लोग त भर मन बतियावस। भाई से मिले खातिर कवल खेती करत रहन जबकि खेती के क ख ग भी ना जानत रहन। चुपे-चुपे मिलला के बात गाँव-घर में फएल गइल। झगरू के बेकत जनली त खेती बन कराके बटइया प देवे लगली जवना से झगरू कवल से ना मिल पावस। झगरू के दुआर से हटे के मनाही रहे। दूनो भाई के मजबूरन बोलचाल आ देख-दरस छूट गइल। दूनो जाना कुहुक के रह गइलन।

जब मन, दिल के चाहत के पूरा होत ना देखेला बेचैनी के आगोस में चल जाला। दिमाग के सूप से जतने झटकार-फटक के मन से दूर कइल चाहेला ओतने ऊ बात दिल में बरियारी पलस्तिया मार के बइठ जाला तब ओह बात के दिल से झटकारल असंभव हो जाला। दिल के बइठल बात दिमाग में चिंता-फिकिर के अइसन बाढ़ ले आवेला कि देह जीते जी चिलारी जस जरेला। बिना रोगे के सरीर गले लागेला।झगरू आ कवल के इहे दसा भइल रहे। सूख के काँटा हो गइल रहन। आँख धस गइल रहे आ

ठोकच बइठ गइल रहे।

कुछ दिन बाद दूनो भाई हितई नेवता प गइलन त भेंट भइल। बिआहे बिदाई भइल कनिया जस अकवारि ध के पुका फार के खूब रोवलन। ई लोगन के रोवल देख के आइल नेवतरही लोग आपन आँसू ना रोक पवलन बाकिर ऊ लोग के भीरी ढाढ़स देला के अलावा कवनो चारा ना रहे । दू-चार दिना खूब आपन दुख-बिपत्त बतियवलन । फिरु समुदरी चिरई जस ओही जहाज प आ के ना चाह के भी बइठे के परल। मुआर भइला के बाद मूसलाधार बरखा के कवनो असर बधारि के जजात प ना परे ओसहीं ई लोगन के हालत जस के तस रहल। दू-चार दिन के सुख-सांति से ई लोगन के रोहानी ना बदलल, दिल के तनि तस्सली जरूर मिलल। ई लोग भगवान से मनाववस लोग कि फिरू कवनो हितई से नेवता आवो कि हमनीं दूनो भाई के भेंट होखे बाकिर डोम के सरपला से डांगर ना मरे। बहुत दिन कवनो हितई से नेवते ना आइल।

भगवान के घर देर होला बाकिर अन्हेर ना होला। भगवान दूनो भाई के सुनलन। सरकार खेत-बधार के सरवे करावे के जोर लगवलस। गाँवाँ-गाँई हल्ला भइल कि जेकरा नावे खेत ना चढ़ी ओकर सरकारी खाता में खेत चढ़ जाई। झगरू आ कवल के लइकन के निजी कारखाना में नोकरी रहे एह से छूट्टी ना मिलल। झगरू के बेकत जानत रही कि झगरू पढ़ल-लिखल ना हवन त खेत के कागज-पतर ले के कवल भीरि जइहन एहिसे कागज-पतर ले के कुछ दिन एह दुआरे से ओह दुआरे फिफियात रहली बाकिर सभके माथे आपन-आपन खेत-खतियान के दरद उठल रहे।

एहसे केहू भीरी इनकर कवनो चारा ना चलल। तब हार-थाक के झझुआत कागज-पतर झगरू के थम्हा देली आ चेतवली कि कवल के लगे नइखे जाए के । सहर जा के कवनो ओकिल से समझ-बूझ के काम कराइब। झगरू के त लउटरिए लाग गइल। झगरू खेत के कागज-पतर खुसी-खुसी थाम लेलन।

अपना बेकत से खेत के काम के नाव प रोपया अईंठ के तहसील के चक्कर लगावल सुरू क देलन। दूनो भाई के मन के मुराद पूरा होखे लागल। बिना कामो के दूनो भाई फजिरहीं से तहसील के बहाने निकलस त भर दिन साथे रहस आ साँझ बेरा लउटस। गाँव-टोला के लोग ई लोगन के विवसता जानत रहन, ई लोगन के साथ-साथ देख के खुस होत रहन। ई सिलसिला महिनो चलल। लगातार दूनो भाई प खुसी के बरसात होखत रहल।

मिरतु-भुवन के बढ़ि कठोर नियम ह कि जे जनम ले ले बा ऊ कतनो तेयाग-तपसेया करी बाकिर मउअत से पीछा ना छूटे। इहवें स्वरग आ नरक बा। आपन-आपन करम के भोग नीमन-बाउर इहवें भोगे के बा आ नियति के निरधारित समय प ई लोक छोड़ देवे के बा। कवल भी एह लोक के जंजाल छोड़ के परलोक सिधार गइलन। झगरू प त दुख के पहाड़े गिर गइल। खूबे रोवले-छछनले। बेसुध हो के गुमसुम रहे लगलन। तहसील के चक्कर छूट गइल।

झगरू के बेकत से ना रहाइल त एक दिन झगरू से झझुआ के कहली-" भाई के सोक में कतना दिना तक डूबत-उतरात रहब। खेतवो के कागज-पतर प तनिक धेयान दीं, ना त खेत सरकार लेली त दूनो बेरा नीमन-बाउर चाभे के ना मिली।"

अतना सुनते झगरू के तरवा के लहर कपार प चढ़ गइल। खीझी काँपे लगलन। बलड परेसर हाई हो गइल। चिचिया के कहलन-" तोहरा कलह से हमनीं दूनो भाई के आत्मा बकोटा - बकोटा के घवाहिल हो गइल बा। अब तोहार जार हमरा से ना सहाई। जब भाइए ना रहल त ई सभ धन-दउलत आ खेत-बधार हमरा खातिर अकारथ बा।" झगरू कपारे हाथ ध के बइठ गइलन आ कवल के नाव ध के पुकाफार के रोए लगलन। उनकर बेकत के बकार बन हो गइल रहे। उनका कठेया मार देलस। ऊ सपनो में ना सोचले रही कि अइसन बात होई। कुछ देर बाद झगरू ऊठलें आ दनदनाते कोठरी में घुसलें आ बाहर निकलते कहलन-" लS अपना खेत के कागज-पतर। कवल

जाए से पहिलहीं दूनो सभ कागज-पतर ठीक क देले रहन। आपन सभ धन अगोरऽ । हम जात बानीं । हमार भाइए ना रहल त एह गाँव-घर में का बा ! हम जात बानीं कवनो धाम प मठ में भगवानके नाव लेके आपन जीवन काटब।" कह के झगरू झटकले दनदनात गवछा से आपन आँख पोंछत घर से बाहर चल गइलन। पिंजरा के चिरई जस सभ बंधन से मुक्त होई के झगरू बुढ़ारी में जीवन के जंग लड़े खातिर पछुआ खोंस लेलन।

◆ ◆ ◆

उमेश कुमार राय
जमुआँव,भोजपुर (बिहार)

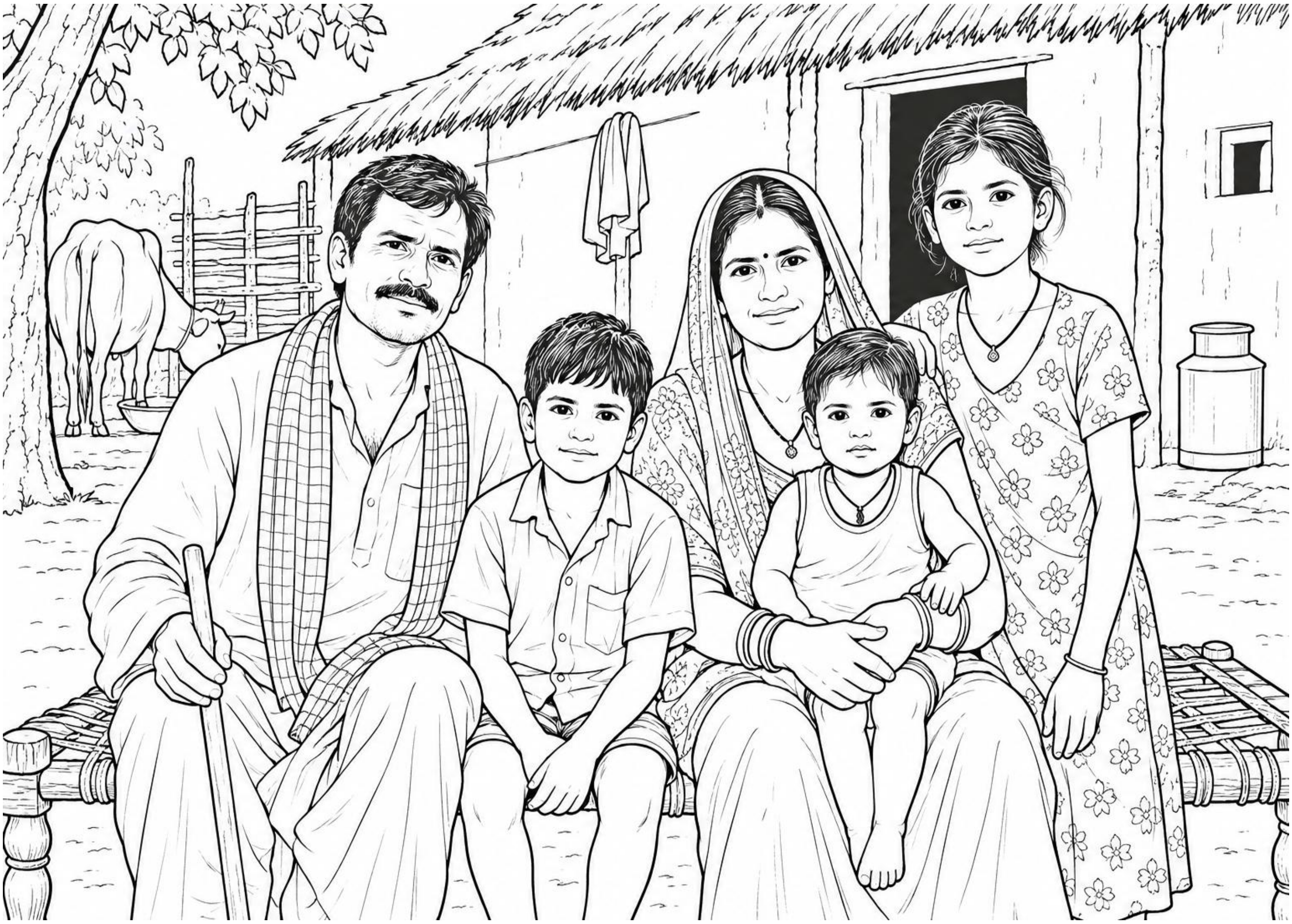

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

# कहाँ चलि गइलऽ ए कागा

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

समय के धक्का से भागत जिनिगी में सभे कुछ बदल जाए के अबुताइल बा, जेहरे नजर घुमा के ताक लिहीं बिकास के बवंडर में कुल्हिए चीजवे बदलल नजर आवऽता, घर खाली मकान बन के रहि गइल बा, घरौदा गायब बा। माटी के नेय पर बनल माटी के घर के तुर के नया नेय जवन कंक्रीट सीमेंट गाटर के बा मकान के मजिगर बरियार क देता जवना पर प्राकृतिक आपदा हवा तूफान बारिस के कवनो असर नइखे परत माटी के कमजोर घर में अभाव में जिनिगी काटत परिवार के रिश्ता में मजबूती रहे लेकिन एह ईंटा छड़ सीमेंट के मजबूत बहुमंजिला मकान में रिश्ता सुकुवार हो गइल बा, तनिका से ठेस काफी बा एक्के फूट के छिटाए खातिर।

श्राद्ध के समय चल रहल बा इहे समय ह जब आदमी अपना पुरखा पुरनिया के इयाद करेलन जेकरा चलते एह धरा धाम प हमनींके वजूद बा एह समय गाय, कुकुर, कउवा, चिंउटी आदि के पूछ बढ़ि जाला।

रोजी रोजगार के चलते अपना जर से टूटल आदमी के मजबूरी बा, जहाँ बा तहवें आपन रीति रिवाज के मनावे के बाध्य बा, इहे उचितो बा काहें कि समय के इहे मांग बा। समय के साथ परिवर्तन स्वभाविक बा।

घर के मुड़ेरा पर बइठल कागा जवन हीत के आवे के अगते सुचना देत रहे, झूठ बोलला पर काटे वाला आ चुन चुन के कीड़ा मकोड़ा खाए वाला प्रकृती क सफाई कर्मचारी अब कहूँ देखहूँ के नइखे मिलत एह कंक्रीट के औद्योगिक महानगर में। तू कहाँ चलि गइलऽ ए कागा। सनातनी परम्परा के अनुसार पितरपख के १५ दिन रोजे गाय, कुकुर, चिंउटी के अलावा कागा के भी भोजन देवे के परम्परा चलल आ रहल बा, बाकी त भेंटा जाता लेकिन बाहर राखल पितर लोगन खातिर राखल खाना घंटो इंतज़ार के बादो कागा कहीं नइखन लउकत।तोहरा बिना एह परम्परा के निर्वाह कइसे होई? परेशान आदमी पंडी जी लोग से कागा ना मिलला पर एकर बिकल्प आ

समधान के बारे में पूछे के मजबूर बा। पर्यावरण के भी नुक्सान हो रहल बा। जिनिगी के काँव काँव से परेशान हो के तू शान्ति के खोज में शहर से बाहर निकल गइलऽ। शहर के बिकास खातिर पेंड़ पौधा के साथे साथ चिड़िया चुरुंग पशु पक्षी के भी आपन जगहा आ जिनिगी दाव प लगावे के परल। शहर में खाली आदमिए ना रहेला, बड़ बड़ कल कारखाना आ मकाने ना होला, केतने चिड़िया चुरुंग पशु पक्षी भी रहेलन जेकरा घर के कब्जिया के हमनीं के शहर बना लिहनीं जा। ओहनो के बारे में सोचल हमनिए के काम बा। जिनिगी के बचावे आ खुशहाल राखे खातिर जरूरी बा पेड़ पौधा चिड़िया चुरुंग पशु पक्षी।

बढ़त शहरीकरन से बिलात कागा के प्रजाति आस्था पर असर त डलते बा साथे साथ ई पर्यावरण खातिर भी खतरा के पूर्व सुचना बा।

◆ ◆ ◆

तारकेश्वर राय "तारक"
गुरुग्राम, हरियाणा

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

लरिका बहुत देरी से इस्कूल में पहुँचल। मास्टर साहेब रिसिया के ठाढ़ हो गइनीं आ कड़क आवाज में लरिका से पुछनीं - 'नौ बजे इस्कूल के समय ह। तू साढ़े दस बजे आइल बाड़ऽ। एतना देरी काहें भइल ह?

लरिका डेराइले जबाब दिहलसि -'का करीं माट्साहेब? घर से त ठीके चलनीं हँ लेकिन लगभग सइ डेग चलला के बाद एक डेग इस्कूल के ओर डालत रहनीं हँ त दू डेग घर के ओर उठि जात रहल ह।'

माट्साहेब बुझनीं कि लरिका कवनो चालाकी बतियावत बा लेकिन पुछनीं कि फिनु तू इसकूले पहुँचल ह कइसे?

लरिका -'बहुत दिमाग लगावे के परल ह आ दिमाग लगवनीं हँ त मुँह घर के ओर आ पीठि इस्कूल के ओर क दिहनीं हँ। अब एक डेग घर के ओर डालत रहनीं हँ त दू डेग इस्कूल के ओर उठि जात रहल ह। अइसहीं पहुँचि गइनीं हँ।

संगीत सुभाष

एक जने पूछलें-'का हो, गोधन कूटा गइल?'
दूसरका जना कहलें- 'देखऽ नू, कनवाँ भाई राम- राम त बिगड़े के घरी इहे ह।'
पहिलकू फिनु पूछलें-'एकर माने का?'
दूसरकू कहलें-'अगिया लगाइ, बहू बर तर ठाढ़?'
पहिलकू-'तहार बात बुझात नइखे। का बतिआवऽतारऽ?'
दूसरकू-' नव जानेलS आ छव ना जानेलS?'
पहिलकू- 'बै मरदे! साफ- साफ कहऽ।'
दूसरकू- 'का कहीं? हमार गोधन कुटाइल बा? तू देखलऽ ह? तहरा खानदान के गोधन कुटाउ। तहरा सात औलाद के गोधन कुटाउ।'
पहिलकू का अब जा के बुझाइल कि ई दोसर अरथ बुझले बाड़ें। कहलें- 'इहे कहल जाला कि मियाँ बुझलें पिआज। हम का पुछतानीं आ तू का बुझतारS?'
दूसरकू- 'देख नू, चार एँड़ कसि देब त लगबS भेम्हा बावे।'
पहिलकू- 'तनी आवS ना नियरवा। अबे बुझि जइबS कि कवना धान के होरहा होला?'
दूसरकू आव देखलें ना ताव। जाके बाजि गइलें। दुनू जने, दुनू जने के गोधन कूटि दिहलें।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

आपन माटी-आपन थाती

# जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

# नवकी कलम

# पइसा कमाइल आसान नइखे

पइसा कमाइल आसान नइखे,
के बा जेकर कवनो अरमान नइखे।
केहू त सोझा आके बता दे,
जेकर एकरा से कवनो दोस्तान नइखे।

भइल बा शोर दुनिया में सगरो,
एकरेला भाई,भाई आपस में झगरो।
अइसन ख़ास ई बाटे रूपइया,
जनमावल जे दुश्मन बने ऊ मइया।

एकरा से बड़ कवनो शैतान  नइखे,,,
केहू त सोझा आके बता दे,
जेकर एकरा से कवनो दोस्तान नइखे।
नीमन, नीमन घर में लगा देला आगी,

कुदरत के करिश्मा ई अइसन ह बागी।
सभ केहू एके सम्हार ना पावे,
एकर चमक बाकि सभका के भावे।
ओके माने ई खूब जेके गुमान नइखे,,,

केहू त सोझा आके बता दे,
जेकर एकरा से कवनो दोस्तान नइखे।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

# माई

रात के तीसर पहर में
जब घर भर के लोग सूतल रहेला,
त माई के नींद
अपना लइका के करवट गिनत रहेला।
हमरा बुखार चढ़त रहे,
त ओकर माथा तपत रहे।
हम रोवत रहीं,
त ओकर आँखि भींजत रहे।

हमरा चोट गोड़ में लागे,
दर्द ओकर करेजा में उठे।
कइसन रिश्ता होला ई?
ना कवनो सौदा ,
ना कवनो शरत ,
ना कवनो हिसाब।
बस नेह ही नेह।

आज जब बड़ हो गइनीं,
दुनिया समझे लगनीं,
त बुझात बा कि
हमरा खातिर नया कपड़ा खरीदे वाली माई,
बरिसन तक अपना खातिर
साड़ी टारत रहलस।

हमरा थारी में एगो  रोटी अउरी रखे वाली माई,
कई बेर खुद आधा पेट सुतल होई।
हमरा मुस्कान खातिर
ना जाने कतना सपना
चुपचाप दफना दिहले होई।
आजो जब गाँव जानीं
त माई पूछेलें.....
"बबुआ, खाना खइले बाड़ऽ कि ना?"
त ई सवाल ना होला,..
ई त ओकर पूरा प्रेम होला
चार शब्द में समाइल।

डर लागेला ओ दिन से,
जब घर त रही,
बाकिर दुआर पर
माई के आवाज ना रही।
जब भूख त लागी,
बाकिर केहू ना पूछी—

"का खइबऽ बबुआ?"
ओह दिन बुझाई
कि आदमी अनाथ कब होला।
बाप के जाए से सहारा टूटेला,
बाकिर माई के जाए से
पूरा संसार सूना हो जाला।

ए माई...
तोहार ऋण चुकावे खातिर
एक जनम त का,
सौ जनम भी कम पड़ जाई।
काहे कि
तोहरा प्रेम के कीमत
दुनिया के कवनो तराजू में
तोलल ना जा सके।।

◆ ◆ ◆

अभियंता सौरभ कुमार

# मूर्ति पर फूल चढ़ावे से पहिले

कवनो मुरझाइल जिनगी में मुस्कान ले आईं।
कवनो मुरझाइल जिनगी में मुस्कान ले आईं।
माता रानी के चुनरी चढ़ावे से पहिले
कवनो नंगा तन के तन ढँक दीं।
माई के चरण में मिठाई चढ़ावे से पहिले
कवनो भूखल के मुँह में एगो निवाला डाल दीं।

काहे कि—
माई पत्थर के मूर्ति में जरूर बाड़ी,
बाकिर उनकर असली परीक्षा इंसान के रूप में सामने आवेला।
हमनीं अक्सर पूछिले—

"माता रानी हमरा पर कब किरपा करिहें?"
बाकिर शायद माई हमनीं से पूछऽतारी—
"तोहरा सामने एगो जरूरतमंद के रूप में हम खुद खड़ा रहनीं ...
तू हमरा खातिर का कइलऽ?"

ई सवाल अगर एक बेर मन में उतर गइल,
त पूजा के तरीका बदल जाई।
फूल कम हो सकेला...
चढ़ावा कम हो सकेला...
घंटी के आवाज धीमा हो सकेला...

बाकिर अगर इंसानियत जिंदा बा,
त समझीं—
माई के दरबार अबहियो जिंदा बा।
आ अगर हमनी लाखों दीया जरा दीं,
बाकिर कवनो भूखल के अन्हार दूर ना कर पाईं,

त याद राखीं—
दीया मंदिर में जरूर जरल रहे,
बाकिर हमनी के भीतर के इंसानियत बुझल र हे।
ओह रात माता रानी के दरबार में
सबसे बड़ा चढ़ावा फूल ना रहे,

सोना ना रहे,
नारियल ना रहे,
मिठाई ना रहे...
सबसे बड़ा चढ़ावा रहे—
एगो भूखल इंसान के भरल पेट,
एगो रोवत आँख के पोंछल आँसू,
आ एगो छोट लइका के भीतर जिंदा बचल इं सानियत।
बाकिर कहानी इहाँ खतम ना होला।
काहे कि ऊ बूढ़ माई त बस एगो माई रहली ...

सवाल हमनीं सभे से बा—

आज हमनीं के सामने कतना "बूढ़ माई" बइठल बाड़ी ?

कतना "भूखल लइका" मदद खातिर ताकत बा?

आ कतना बेर हमनी पूजा के भीड़ में

इंसानियत के आवाज अनसुना कइले बानीं?

माता रानी के खोजे खातिर दूर जाए के जरूरत नइखे।

जहाँ भूख बा—ओहिजा माई के रूप बा।

जहाँ आँसू बा—ओहिजा माई के पुकार बा।

जहाँ मजबूरी बा—ओहिजा माई के परीक्षा बा।

आ जहाँ कवनो इंसान दूसर इंसान के हाथ थाम लेला —

ओहिजे माई के सच्चा दरबार सज जाला।

◆ ◆ ◆

अभियंता सौरभ कुमार
जिला - सिवान बिहार

# उदास रहता

कहाँ केहू जियरा के पास रहता।
सब केहू खुद में बेसास रहता।

उठि गइल जब से देवाल अंगना में,
पीपल पुरनका उदास रहता।

कहे के सब केहू अपने बा लेकिन,
मनवाँ में नेह के बनवास रहता।

महुराए के खातिर त नइखे मुहूरत,
हँसे खातिर खाली खरवास रहता।

ऊपर से अदमी हो जाता पबित्तर,
अन्दर त कूस कंजास रहता।

कुछु न मिलल समुंदर किनारे,
अंजुरी भर पानी के तलाश रहता।

◆ ◆ ◆

# बढ़त बा उहे आगे

आखिर का मजबूरी बाटे।
काहें आपस में दूरी बाटे।

चुप रहला से काम न चली,
बात भी कइल जरूरी बाटे।

ज्यादा मीठ जे बोल रहल बा,
हाथ में ओकरे छुरी बाटे।

साँच खात बा सूखल रोटी,
झूठ के मुँह में पूड़ी बाटे।

नूरैन बढ़त बा उहे आगे।
खून में जेकर हुजूरी बाटे।

◆ ◆ ◆

नूरैन अंसारी
गोपालगंज, बिहार

# जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

# निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।

रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।

एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।

राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।

आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।

रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।

रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

!! श्री गणेशाय नमः !!

# जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

अपना माटी-आपन थाती

अपना माटी-आपन थाती

# सनेह निमंत्रण

## 9 वाँ भोजपुरी साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव

**दिन- बृहस्पतिवार, तारीख - 12 नवंबर 2026**

**स्थान**

अमही धाम (मिश्र, शुक्ल)
भोरे, गोपालगंज, बिहार

रउआ सभे के सादर स्वागत बा।
आई, भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति
आ अपना माटी के गौरवमयी उत्सव में सामिल होई।

सिरिजन - भोजपुरी तिमाही ई-पत्रिका